जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

लेखक- असगर वजाहत

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

पात्र

सिकंदर मिर्ज़ा	उम्र 55 साल
हमीदा बेगम	पत्नी, उम्र 45 साल
तनवीर बेगम (तन्नो)	छोटी लड़की उम्र 11–12 साल
जावेद	सिकंदर मिर्ज़ा का जवान लड़का उम्र 24–25 साल
रतन की मां	उम्र 65–70 साल
पहलवान	मोहल्ले का मुस्लिम लीगी नेता
अनवार	पहलवान का पंजाबी दोस्त, उम्र 20–22 साल
सिराज	पहलवान का दोस्त–मोहारिजए उम्र 20–22 साल
रज़ा	पहलवान का दोस्त, उम्र 20–22 साल
हमीद हुसैन	सिकंदर मिर्ज़ा का पड़ोसी पुराना ज़मींदार, मोहाजिर, उम्र 50 साल
नासिर काज़मी	सिकंदर मिर्ज़ा का पड़ोसी, उम्र 35–36 साल (शायर) मोहाजिर
मौलवी इकरामनुद्दीन	मस्जिद का मौलवी, उम्र 65–70 साल (पंजाबी)
अलीमनुद्दीन	चायवाला–उम्र 40 साल (पंजाबी)
मुहम्मद शाह	पहलवान का दोस्त
फ़याज़	मुस्लिम लीगी कार्यकर्त्ता
मुस्लिम लीगी	नेता

दृश्य : एक

(मंच पर अंधेरा–सा है। पृष्ठभूमि से किसी प्रदर्शन और जुलूस की स्पष्ट आवाज़ें आ रही है जो धीरे–धीरे साफ़ होती जा रही है। प्रदर्शनकारी पास आने लगते हैं। मंच पर प्रदर्शनकारियों के आने से पहले जो स्पष्ट नारे सुनाई देते हैं, वे ये हैं–

"नार–ए–तकबीर...
अल्लाहो–बकबर"...
"लेके रहेंगे...
"पाकिस्तान, पाकिस्तान" दृ
(जुलूस मंच पर आता है। राना लगता है...)
"पाकिस्तान पाकिस्तान...
"लेके रहेंगे पाकिस्तान...
"मुस्लिम लीग मुस्लिम लीग...
ज़िन्दाबाद मुस्लिम लीग"
(पूरा जुलूस मंच पर आ जाता है और एक गुट ज़ोर से कहता है।)
"सीधा पैर जुत्ती दा"
(दूसरा गुट जवाब देता है)
"ख़िज़िर, पुत्तर कुत्ती दा।"
"ख़िज़िर पुत्तर कुत्ता दा" (पंक्ति को भीड़ दोहराती है तथा कुछ लोग इस पर नृत्य जैसा करने लगते हैं और बार–बार)
"कुत्ती दा" "कुत्ती दा" (कहते हैं...)
(नारा लगता है) "ख़िज़िर"

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

(दूसरा गुट कहता है) "पुत्तर दा"
(अचानक मंच पर एक मुस्लिम लीगी भागता हुआ आता है और जुलूस के नेता से कहता है)

मुस्लिम लीगी: ओय फ़याज़... ओय... रुक जा... रुक जा...
(नारे लगाने वाले रुक जाते हैं। ख़ामोशी हो जाती है। मुस्लिम लीगी फ़याज़ को मंच के एक कोने में ले जाता है)

मु. लीगी: (फ़याज़ से) ओय फ़याज़... तू ए नारे न लगावाक़

फ़याज़: की गल हो गई?

मु. लीगी: तैतू नई पता फ़याज़... ख़िज़िर ने मुस्लिम लीग ज्वाइन कर ली।

फ़याज़: ओय नई

मु. लीगी: ओय नई की? एक मुबारक ख़बर हुणें आई सी।

फ़याज़: ए तो कमाल हो गया।

मु. लीगी: और की... अब पाकिस्तान बना समझो।

फ़याज़: ख़िज़िर फ़याज़ मुसलमान दा खून है तो जोश मारेगा। जा जुलूस आगे बढ़ा।
(फ़याज़ जुलूस के पास जाता है। दो चार लोगों से सिर मोड़ कर बातचीत करता है और फिर एक ग्रुप ज़ोर से चीख़ता है।)

एक ग्रुप: ताज़ी ख़बर आई है।

दूसरा ग्रुप: (कहता है) ख़िज़िर सड्डा भाई है।
(यही नारा कई बार लगता है। जुलूस में नया जोश आ जाता है।)
(दूसरा नारा लगता है और जुलूस धीरे–धीरे आगे बढ़ता है।)

कुछ लोग: पाकिस्तान, पाकिस्तान।

दूसरा गुट: लेके रहेंगे पाकिस्तान।
(मंच पर प्रकाश व्यवस्था में परिवर्तन आता है और कुछ समय बीतने का आभास होता है। जुलूस एक ओर बाहर निकल कर मंच पर दूसरी ओर फिर अंदर आता है।)
("पाकिस्तान, पाकिस्तान" के नारे लगाते रहते हैं।)
(अचानक मुस्लिम लीगी फिर से भागता हुआ आता है और फ़याज़ की बांह पकड़कर उसे जुलूस से अलग घसीटता है।)

मु. लीगी: फ़याज़ ओ ख़बर ग़लत सी।

फ़याज़ः की ख़बर?

मु. लीगीः ख़िज़िर ने मुस्लिम लीग नई ज्वाइन की ती।

फ़याज़ः ओय इ की चक्कर है?

मु. लीगीः सच्ची गल्ल है फ़याज़... सच्ची... जा जुलूस आगे बढ़वा.. (फ़याज़ जुलूस में आ जाता है और आठ–दस लोगों से खुसुर–पुसर करता है। सब ख़ामोश हो जाते हैं। अचानक एक गुट ज़ोर से चीख़ता है।)

एक गुटः सीध पैर जुत्ती दा।

दूसराः ख़िज़िर पुत्तर कुत्ती दा।

(पागलों की तरह पूरा जुलूस "ख़िज़िर पुत्तर दा" पर नाचने लगता है। यह कुछ क्षण जारी रहता है। फिर प्रकाश और आवाज़ें धीरे–धीरे कम होती हैं। मंच पर अंधेरा हो जाता है। अंधेरे में कुछ क्षण के बाद हलका प्रकाश आता है और लुटे–पिटे शरणार्थयों का काफ़ला दिखाई पड़ता है। वे धीरे–धीरे मंच पर आगे बढ़ रहे हैं। पृष्ठभूमि से गायन की आवाज़ आती है।)

और नतीजे में हिन्दोस्तां बंट गया
ये ज़मीं बंट गयी आसमां बंट गया
तर्ज़े बंट गयी बयां बंट गया
शाख़ें गुल बंट गयी, आश्यां बंट गया
हमपे उे,सस थ्सस जसे ,द्यचसब हर और था
अब जो देखा तो पंजाब ही और था
(शरणार्थियों का ग्रुप मंच से निकल जाता है।)

○○

दृश्य : दो

(सिकंदर मिर्ज़ा, जावेद, हमीदा बेगम और तन्नो सामान उठाऐ मंच पर आते हैं। इधर–उधर देखते हैं। वे कस्टोडियन द्वारा एलाट हवेली में आ गए हैं। सबके चेहरे पर संतोष और प्रसन्नता के चह्न दिखाई पड़ते हैं। सिकंदर मिर्ज़ा, जावेद तथा दोनों महिलाएं हाथों में उठाए सामान को रख देती हैं)

हमीदा बेगमः (हवेली को देखकर) या खुदा शुक्र है तेरा। लाख–लाख शुक्र है।

मिर्ज़ाः कस्टोडियन आफ़ीसर ने ग़लत नहीं कहा था। पूरी हवेली है, हलेवी।

तन्नोः अब्बाजान कितने कमरे हैं इसमें?

मिर्ज़ाः बाईस।

बेगमः सहेन की हालत देखो... ऐसी वीरानी छाई है कि दिल डरता है।

मिर्ज़ाः जहां महीनों से कोई रह न रहा हो, वहां वीरानी न होगी तो क्या होगा।

बेगमः मैं तो सबसे पहले शुक्राने की दो रकत नमाज़ पढ़ूंगी... मैंने मन्नत मानी थी... नासपीटे कैम्स से तो छुट्टी मिली...
(हमीदा बेगम दरी बिछाती है और नमाज़ पढ़ने खड़ी हो जाती है।)

जावेदः अब्बाजान ये घर किसका है।

मिर्ज़ाः अब तो हमारा ही है बेटा जावेद।

जावेदः मतलब पहले किसका था?

मिर्ज़ाः बेटा इन बातों से हमें क्या मतलब... हम अपनी जो जायदाद लखनऊ में छोड़ आये हैं उसके एवज़ में समझो ये हवेली मिली है।

तनवीरः हमारे घर से तो बहुत बड़ी है हवेली।

मिर्ज़ाः नहीं बेटे... हमारे घर की तो बात ही कुछ और थी। सहन में रात की रानी की बेल यहां कहां है? बरामदे कुशादा नहीं हैं।

	अगर बारिश में यहां पलंग बिछा दिये जाएं तो पायतियाने तो भीग ही जाएं।
तन्नोः	लेकिन बना शानदार है।
जावेदः	किसी हिंदू रईस का लगता है।
मिर्ज़ाः	कोई कह रहा था कि किसी मशहूर जौहरी की हवेली है।
जावेदः	कमरे खोलकर देखें अब्बा। हो सकता है कुछ सामान वग़ैरा मिल जाए।
सिकंदर मिर्ज़ाः	ठीक है बेटा तुम देखो... मैं तो अब बैठता हूं... ये हवेली एलाट होने के बाद ऐसा लगा जैसे सिर से बोझ उतर गया हो।
जावेदः	पूरी हवेली देख लूं अब्बाजान!
तन्नोः	भइया मैं भी चलूं तुम्हारे साथ।
मिर्ज़ाः	नहीं तुम ज़रा बावरचीख़ाना देखो... भई अब होटल से गोश्त रोटी कहां तक आएगा... अगर सब कुछ हो तो माशाअल्लाह से हल्के–हल्के पराठे और अण्डे का खागीना तो तैयार हो ही सकता है... और बेटे जावेद ज़रा बिजली जला कर देखो... पानी का नल भी खोलकर देखो... भई जो–जो कमियां होंगी उन्हें दर्ज करके कस्टोडियन वालों को बताना पड़ेगा...
	(हमीदा बेगम नमाज़ पढ़कर आ जाती हैं।)
बेगमः	मेरा तो दिल... डरता है...
मिर्ज़ाः	डरता है?
बेगमः	पता नहीं किसकी चीज़ है... किन अरमानों से बनवायी होगी हवेली।
मिर्ज़ाः	फ़ुज़ूल बातें न कीजिए बेगम... हमारे पुश्तैनी घर में भी आज कोई शरणार्थी दनदनाता फिर रहा होगा... ये ज़माना ही कुछ ऐसा है... ज़्यादा शर्म हया और फ़िक्र हमें कहीं का न छोड़ेगी... अपना और आपका ख़्याल न भी करें तो जावेद मियां और तनवीर बेगम के लिए तो यहां पैर जमाने ही पड़ेंगे... शहरे लखनऊ छूटा तो शहरे लाहौर– दोनों में "लाम" तो मुश्तरिक है... दिल से सारे वहम निकाल फेंकिए और इस घर को अपना घर समझकर जा जाइए... बिस्मिल्लाह... आज रात मं इशां की नमाज़ के बाद तिलावते क़ुरान पाक करूंगा...

	(तन्नो दौड़ती हुई आती है। वह डरी हुई है। सांस फूल रही है।)
बेगमः	क्या हुआ बेटी क्या हुआ।
तन्नोः	इस हवेली में कोई है अम्मां!
सिकंदर मिर्ज़ाः	कोई है? क्या मतलब।
तन्नोः	मैं सीढ़ियां चढ़कर ऊपर गई तो मैंने देखा...
सिकंदर मिर्ज़ाः	क्या फ़ूज़ूल बाते करती हो।
तन्नोः	नहीं अब्बा सच।
बेगमः	डर गयी है... मैं जाकर देखती हूं...
	(हमीदा बेगम मंच के दाहिनी तरफ़ जाती हैं। वहां से उसकी आवाज़ आती है।)
बेगमः	यहां तो कोई नहीं है... तुम ऊपर किधर गयी थीं।
तन्नोः	उधर जो सीढ़ियां हैं उनसे...
	(बेगम सीढ़ियों की तरफ़ जाती हैं। तन्नो और मिर्ज़ा मंच के दाहिनी तरफ़ जात हैं। वहां लोहे की सलाखों का फाटक बंद है। तभी हमीदा बेगम के चीखने की आवाज़ आती है।)
हमीदा बेगमः	अरे ये तो कोई... देखो कोई सीढ़ियां उतर रहा है।
	(मिर्ज़ा तेज़ी से दाहिनी तरफ़ जाते हैं। तब तक सफ़ेद कपड़े पहने एक बुढ़िया उतरकर दरवाज़े के पास आकर खड़ी हो जाती है।)
सिकंदर मिर्ज़ाः	आप कौन हैं?
रतन की मांः	वाह जी वाह ये खूब रही, में काण हूं... तुसी दस्सो कौण हो जो बिना पुच्छे मेरे घर घुस आए...
सिकंदर मिर्ज़ाः	घुस आए... घुस आना कैसा। मोहतरमा ये घर हमें कस्टोडियन वालों ने एलाट किया है।
रतन की मांः	एलाट– एलाट मैं नई जाणदी... ये मेरा घर है...
सिकंदर मिर्ज़ाः	ये कैसे हो सकता है।
रतन की मांः	अरे किसी से भी पूछ ले... ये रतनलाल जौहरी की हवेली है... मैं उस दी मां हां।
मिर्ज़ाः	रतनलाल जौहरी कहां है?

रतन की मांः फ़साद शुरू होण तो पहले किसी हिंदू ड्राइवर दी तलाश विच घरों निकल्या सी... साडी गड्डी दा ड्राइवर मुसलमान सी ना, ओ लाहौर तो बाहर जाण नूं तैयार ही नई सी होन्दा... (रुआंसी आवाज़ में) तद दा गया रतन अज तक... (रोने लगती है)

सिकंदर मिर्ज़ाः (घबरा जाता है) देखिए जो कुछ हुआ हमें सख़्त अफ़सोस है... लेकिन आपको तो मालूम ही होगा कि अब पाकिस्तान बन चुका है... लाहौर पाकिस्तान में आया है... आप लोगों के लिए अब यहां कोई जगह नहीं है... आपको हम कैम्प पहुंचा आते हैं. . कैम्प वाले आपको हिंदुस्तान ले जाएंगे...

रतन की मांः मैं किदरी नई जाणां।

सिकंदर मिर्ज़ाः ये आप क्या कह रही हैं... मतलब ये के... ये मकान।

रतन की मांः ऐ मकान मेरा है।

सिकंदर मिर्ज़ाः देखिए... हमारे पास काग़ज़ात हैं।

रतन की मांः साड्डे कोल वी काग़ज़ात ने।

सिकंदर मिर्ज़ाः भई आप बात तो समझिए कि अब यहां पाकिस्तान में कोई हिंदू नहीं रह सकता...

रतन की मांः मैं तो इत्थे ही रवांगी... जैद त रतन नहीं आ जांदा...

सिकंदर मिर्ज़ाः रतन...

रतन की मांः हां, मेरा बेटा पुत्तर रतनलाल जौहरी...

सिकंदर मिर्ज़ाः देखिए हम आपके जज़्बात की क़द्र करते हैं लेकिन हक़ीक़त ये है कि अब आपका लड़का रतनलाल कभी लौटकर वापस...

रतन की मांः क्यों तू क्या खुदा है... जो तन्नू सारी गल्लां पक्कियां पता होण?

हमीदा बेगमः बहन... सैकड़ों हज़ारों लोग मार डले गए... तबाह–बर्बाद हो गए...

रतन की मांः सैकड़ां हज़ारां बच भी तो गए।

सिकंदर मिर्ज़ाः देखिए मोहरतमा... सौ की सीधी बात ये कि आपको मकान ख़ाली करने पड़ेगा... ये हमें मिल चुका है... सरकारी तौर पर।

रतन की मांः मैं इत्थों नहीं निकलनांगी।

सिकंदर मिर्ज़ाः (गुस्से में) माफ़ कीजिएगा मोहरतमा... आप मेरी बुज़ुर्ग हैं लेकिन अगर आप ज़िद पर क़ायम रहीं तो शायद...

रतन की मांः हां हां... मनूं मार के रावी विच रोड़ आओ... तद हवेली ते क़ब्ज़ा कर लेणां... मेरे जिन्दा रयन्दे ऐजा हो नहीं सकदा।

मिर्ज़ाः या खुदा ये क्या मुसीबत आ गयी।

बेगमः आजकल शराफ़त का ज़माना नहीं है... आप कस्टोडियन वालों को बुला लाइए तो... अभी...

रतन की मांः बेटा, तुम जाके जिसनूं मरजी बुला ले आ... जान तो ज्यादा से कुछ ले नई सकेगा... जान मैं त्वानूं देण नूं तैयार हां।

सिकंदर मिर्ज़ाः या खुदा मैं क्या करूं।

बेगमः अजी अभी जाइए कस्टोडियन के आफ़िस.. हमें ऐसा मकान एलाट ही क्यों कर दिया जो खाली नहीं है।

मिर्ज़ाः (जावेद से) लाओ बेटा मेरी शेरवानी लाओ... तन्नो एक गिलास पानी पिला दो...

रतन की मांः टूटी च पाणी आ रया है... एक हफ़्ते ही तो सप्लाई ठीक कोई है.. बेटी, पानी टूटी चो लै लै।

मिर्ज़ाः (शेरवानी पहनते हुए) देखिए हम आपको समझाए देते हैं... पुलिस ने आप पर ज़्यादती की तो हमें भी तकलीफ़ होगी।

रतन की मांः बेटा, मेरे उत्ते जो कहेर पै चुकेया है... उस तो बड्डा कहेर होण कोइ पै नहीं सकदा... जवानमुंडा नई रिया... लक्खां दे जवाहरात लुट गए... सगे.संबंधी मारे गए...

बेगमः तो बुआ अब तो होश संभालो... हिन्दस्तान चला जाओ... अपने लोगों में रहना।

रतन की मांः ईश्वर दी दात मेरा पुत्तर ही नई रिया, तो होण मैं कित्थे जाणां है?

(मिर्ज़ा पानी पीते हैं और खड़े हो जाते हैं।)

मिर्ज़ाः ठीक है बेगम तो मैं चलता हूं।

जावेदः मैं भी चलूं आपके साथ।

मिर्ज़ाः नहीं, तुम यहीं घर पर रहो... हो सकता है इस बुढ़िया ने कुछ और लोगों को भी घर में छिपाया हो।

रतन की मांः रब दी सौं... मनूं छोड़ के इत्थे कोई नहीं है।

मिर्ज़ाः नहीं बेटे... तुम यहीं रुको...

(मिर्ज़ा चले जाते हैं।)

हमीदा बेगमः खुदा हाफ़िज़।

(हमीदा बेगम, जावेद और तन्नो मंच के दाहिनी तरफ़ से हट जाते हैं।)

मिर्ज़ाः खुदा हाफ़िज़।

बेगमः तन्नो... तुमने बावरचीख़ाना देखा?

तन्नोः जी अम्मी जान।

बेगमः बर्तन तो अपने पास हैं ही... तुम जल्दी–जल्दी खाना पका लो... तुम्हारे अब्बा के लौटने तक तैयार हो जाए तो अच्छा है।

तन्नोः अम्मी जान बावरचीख़ाने में... लकड़ियां और कोयले नहीं हैं... खाना काहे पर पकेगा?

हमीदा बेगमः लकड़ियां और कोयले नहीं हैं?

तन्नोः एक लकड़ी नहीं हैं।

हमीदाः तो फिर खाना क्या खाक पक्केगा?

रतन की मांः बेटी, बरामदे दे खब्बे हाथ दी तरफ वाली छोटी कोठड़ी च लकड़ां परी पइयां ने... काड ले...

(दोनों मां (हमीदा) बेटी (तन्नो) एक दूसरे को हैरत और खुशी से देखते हैं।)

अतंराल गायान

अभिनेता मंच पर आकर गाते हैं–

दिल में लहर सी उठी है अभी
कोई ताज़ा हवा चली है अभी

शोर बरपा है खान–ए–दिन में
कोई दीवार–सी गिरी है अभी

भरी दुनिया में जी नहीं लगता
जाने किस चीज़ की कमी है अभी

वक़्त अच्छा भी आयेगा 'नासिर'
ग़म न कर ज़िंदगी पड़ी है अभी

दृश्य : तीन

(कस्टोडियन आफ़ीसर का कार्यालय। दो–चार मेज़ों पर क्लर्क बैठे हैं। सामने दरवाज़े पर "कस्टोडियन आफ़ीसर" का बोर्ड लगा है। दरवाज़े पर खान चौकीदारनुमा चपरासी बैठा है। आफिस में बड़ी भीड़ है। सिकंदर मिर्ज़ा किसी क्लक्र से बातें कर रहे हैं। अचानक क्लर्क ज़ोरदार ठहाका लगाता है। दूसरे क्लर्क चौंकर उसकी तरफ़ देखने लगते हैं।)

क्लर्क–1: हा–हा–हा... ये भी खूब रही... (दूसरे क्लर्कों से) अरे यारो काम तो होता ही रहेगा होता ही आया है, ज़रा तफ़रीह भी कर लो... ये भाई जान एक बड़ी मुसीबत में पड़ गए हैं। इनकी मदद करो।

क्लर्क–2: इइस कमरों की हलेवी एलाट कराने के बाद भी मुश्किल में फंस गए हैं।

क्लर्क–3: अरे ये तो बाईस कमरों की हवेली का कबाड़ ही नीलाम कर दें तो परेशानियां भाग खड़ी हों।

(क्लर्क हंसते हैं।)

क्लर्क–1: मियां, इनकी जान के लाले पड़े हैं और आप लोग हंसते हैं।

क्लर्क–2: अमां साफ़–साफ़ बताओ... पहेलियां क्यों बुझा रहे हो।

सिकंदर मिर्ज़ा: जनाब बात ये है कि जो हवेली मुझे एलाट हुई है उसमें एक बुढ़िया रह रही है।

क्लर्क–2: क्या मतलब?

सिकंदर मिर्ज़ा: मैं उसमें... मतलब हवेली ख़ाली ही नहीं है... वो मुझे एलाट कैसे हो सकती हैं।

क्लर्क–3: हम समझे नहीं आपको परेशानी क्या है।

सिकंदर मिर्ज़ा: अरे साहब, हवेली में बुढ़िया रौनक अफ़रोज़ है... कहती है उनके रहते वहां कोई और रह नहीं सकता... मुझे पुलिस दीजिए... ताकि मैं उस कमबख़्त से हवेली ख़ाली करा सकूं।

क्लर्क–1: मिर्ज़ा साहब एक बुढ़िया को हवेली से निकालने के लिए आपको पुलिस की दरकार है।

सिकंदर मिर्ज़ा: फिर मैं क्या करूं?

क्लर्क–2: करें क्या... "हटवा" दीजिए उसे।

सिकंदर मिर्ज़ा: जी मतलब...

क्लर्क–2: अब "हटवा" देने का तो मैं आपको मतलब बता नहीं सकता?

क्लर्क–3: जनाब मिर्ज़ा साहब आप चाहते क्या हैं।

सिकंदर मिर्ज़ा: बुढ़िया हवेली से चली जाए... उसे कैम्प में दाख़िल करा दिया जाए और वो हिन्दोस्तान...

क्लर्क–3: हिन्दोस्तान नहीं भारत कहिए... भारत...

सिकंदर मिर्ज़ा: जी भारत भेज दी जाए।

क्लर्क–3: तो आपकी इसकी दरख़ास्त कस्टम आफ़ीसर से करेंगे...

सिकंदर मिर्ज़ा: जी जनाब... मैं दरख़ास्त लाया हूं।

(जेब से दरख़ास्त निकालता है।)

क्लर्क–1: मिर्ज़ा साहब आप जानते हैं हमारे कस्टोडियन आफ़ीसर जनाब अली मुहम्मद साहब क्या तहरीर फ़रमाऐगे?

सिकंदर मिर्ज़ा: क्या?

क्लर्क–2: वो लिखेंगे... आपके नाम दूसरा मकान एलाट कर दिया।

सिकंदर मिर्ज़ा: ज... ज... जी... जी... दूसरा।

क्लर्क–1: और बाइस कमरों की हवेली को अपने किसी सिंधी अज़ीज़ की जेब में डाल देगा... मोहाजिरों की कमी है पाकिस्तान में?

सिकंदर मिर्ज़ा: कुछ समझ में नहीं आता...

क्लर्क–2: जनाब आप क़िस्मत वाले हैं जो धुप्पल में आपको इतनी बड़ी हवेली शहरे लाहौर के दिल कूचा जौहरियां में मिल गईं।

क्लर्क–2: आपके दरख़ास्त देते ही आप और बुढ़िया दोनों पहुंच जाएंगे कैम्प में और कोई सिंधी बाइस कमरों की हवेली में दनदनाता फिरेगा।

सिकंदर मिर्ज़ा: कुछ समझ में नहीं आ रहा। क्य करूं।

क्लर्क–1: अरे चुप बैठिए।

सिकंदर मिर्ज़ा: और बुढ़िया?

क्लर्क–3: अरे साहब बुढ़िया न हुई शेर हो गया... क्या आपको खाए जा रही है? क्या आपको मारे डाल रही है? क्या आपको हवेली से निकाल दे रही है? नहीं, तो बैठिए... आराम से।

क्लर्क–1: क्या उम्र बताते हैं आप?

सिकंदर मिर्ज़ा: पैंसठ से ऊपर है।

क्लर्क–2: अरे जनाब तो बुढ़िया आबे–हयात पिए हुए तो होगी नहीं... दो–चार साल में तहन्नुम वासिल हो जाएगी... पूरी हवेली पर आपका क़ब्ज़ा हो जाएगा... आराम से रहिएगा आप। क़सम खुदा की बिला वजह परेशान हो रहे हैं।

सिकंदर मिर्ज़ाः बजा फ़रमाते हैं आप... कैम्प में गुज़ारे दो महीने याद आ जाते हैं तो सातों तबक़ रौशन हो जाते हैं। अल अमानो अल हफ़ीज़... अब मैं किसी क़ीमत पर हवेली नहीं छोड़ूंगा...

क्लर्क–2: अजी मिर्ज़ा साहब एक बुढ़िया को न राहे रास्त पर ला सके तो फिर हद है।

सिकंदर मिर्ज़ाः आ जाएगी... आ जाएगी... वक़्त लेगेगा।

क्लर्क–1: अरे साहब और कुछ नहीं तो याकूब साहब से बात कर लीजिए... जी हां याकूब खां... पूरा काम बना देंगे एक झटके में...

(उंगली गर्दन पर रखकर गर्दन कटने की आवाज़ निकालता है।)

अंतराल गायन

(अभिनेताओं की टोली मंच पर आकर गाती है)

शहर सुनसान है किधर जायें
ख़ाक होकर कहीं बिखर जायें।

रात कितनी गुज़र गयी लेकिन
इतनी हिम्मत नहीं कि घर जायें।

उन उजालों की धुन में फिरता हूं
छब दिखाते ही जो गुज़र जायें।

रैन अंधेरी है और किनारा दूर

चांद निकले तो पार उतर जायें।

OO

दृश्य : चार

(सिकन्दर मिर्ज़ा, हमीदा बेगम, तन्नो और जावेद ख़ामोश बैठे हैं सब सोच रहे हैं।)

हमीदा बेगमः तो कस्टोडिय वाले मुए बोले क्या?

सिकन्दर मिर्ज़ाः भई वही तो बताया तुम्हें... उन्होंने कहा इस मामले को आप अपने तौर पर ही सुलझा लें तो आपका फ़ायदा है। क्योंकि अगर आपने इसकी शिकायत की तो कस्टोडियन ऑफ़िसर आपसे ये मकान छीनकर अपने किसी सिंधी अज़ीज़ को दे देगा।

हमीदा बेगमः वाह भाई वाह... ये खूब रही... मारे भी और रोने भी न दें।

सिकन्दर मिर्ज़ाः ये सब छोड़ो, अब ये बताओ कि इन मोहतरमा से कैसे निपटा जाए।

हमीदा बेगमः ए मैं इस हरामज़ादी को चोटी पकड़कर बाहर निकाले देती हूं.. हो गया क़िस्सा तमाम।

जावेदः और क्या हमारे पास सारे काग़ज़ात हैं।

सिकन्दर मिर्ज़ाः काग़ज़ात तो उसके पास भी हैं।

तन्नोः उसके काग़ज़ात ज़्यादा अहम हैं।

जावेदः क्यों?

तन्नोः भइया, अगर कोई शख़्स इधर–से–उधर आया गया नहीं तो उसकी जायदाद कस्टोडियन में कैसे चली जाएगी।

सिकन्दर मिर्ज़ाः हां, फ़र्ज़ करो बुढ़िया को हम निकाल देते हैं और वो पुलिस में जाकर रपट लिखवाती है कि वो भारत नहीं गयी है और उसकी हवेली पर कस्टोडियन को कोई इख़्तियार नहीं तो क्या होगा।

हमीदा बेगमः फिर क्या किया जाए।

सिकन्दर मिर्ज़ाः बुढ़िया चली भी जाए और हायतोबा भी न मचाये... जावेद मियां उसे चुपचाप ले जायें और हिंदुओं के कैम्प में छोड़ आएं।

हमीदा बेगमः तो बुलाऊं उसे?

सिकन्दर मिर्ज़ाः रुक जाओ... बात पूरी तरह समझ लो... देखो उससे ये भी कहा जा सकता है कि पाकिस्तान में अब सिफ़ मुसलमान ही रह सकेंगे... और उसे यहां रहने के लिए मज़हब बदलना पड़ेगा... ये कहने पर हो सकता है वो भारत जाने के लिए तैयार हो जाए।

हमीदा बेगमः समझ गई... तन्नो बेटी जाओ जाकर उसे आवाज़ दो।

तन्नोः क्या कह कर आवाज़ दूं... बड़ी बी कहकर पुकारूं।

हमीदा बेगमः ऐ अपना काम निकालना है, दादी कहकर आवाज़ दे देना, बुढ़िया खुश हो जाएगी।
(तन्नो लोहे की सलाखों वाले दरवाज़े के पास जाकर आवाज़ देती है)

तन्नोः दादी... दादी.. सुनिए दादी...
(ऊपर से बुढ़िया की कांपती हुई आवाज़ आती है।)

रतन की मांः कौण है... कौण आवाज दे रेआ है।

तन्नोः मैं हूं दादी तन्नो... नीचे आइए...

रतन की मांः आन्दीयां बेटी आन्दियां।
(रतन की मां दरवाज़े पर आ जाती है)

रतन की मांः अज किन्ने दिनां बाद हवेली च दादी दादी दी आवाज़ सुणी ऐ। (कांपती आवाज़ में) अपनी पौत्री राधा दी याद आ गयी...

तन्नोः (घबरा कर) दादी, अब्बा और अम्मां आपसे कुछ बात करना चाहते हैं।
(रतन की मां दरवाज़ा खोलकर आ जाती है और तन्नो के साथ चलती वहां तक आती है जहां सिकंदर मिर्ज़ा और हमीदा बेगम बैठे हैं)

सिकन्दर मिर्ज़ाः आदाब अर्ज़ है... तशरीफ़ रखिए।

हमीदा बेगमः आइए बैठिए।

रतन की मांः जीन्दे रहो... पुत्तर जीन्दे रहो... त्वाड़ी कुड़ी ने अज मैंनूं 'दादी' कह के पुकारेया (आंख से आंसू पोंछती हुई)

सिकन्दर मिर्ज़ाः माफ़ कीजिए आपके जज़्बात को मजरूह करना हमें मंज़ूर न था। हम आपका दिल नहीं दुखाना चाहते थे...

रतन की मांः नई... नई। दिल कित्थे दुख्या है। उससे मनूं खुश कर देत्ता... बहुत ख़ुश।

सिकन्दर ज़िर्ज़ाः देखिए... आप हमारी मजबूरी को समझिए... हम वहां से लुटे पिटे आए हैं... मालो–दौलत लुट गया... बेसहारा और बेमददगार यहां के कैम्प में महीनों पड़े रहे... खाने का ठीक न सोने का ठिकाना... अब खुदा खुदा करके हमें ये मकान एलाठ हुआ है... अपने लिए न सही बच्चों की ख़ातिर ही सही अब लाहौर जमना है। लखनऊ में मेरा चिकन का कारखाना था यहां देखिए अल्लाह किस तरह जोरी–रोटी देता है...

हमीदा बेगमः अम्मां, हमने बड़ी तकलीफ़ें उठाई हैं। इतना दुःख उठाया है कि अब रोने के लिए आंख में आंसू भी नहीं हैं।

रतन की मांः बेटी, तुसी फिक्र न करो... मेरे कोलों जो हो सकेगा, करांगी।

हमीदा बेगमः देखिए हमारी आपसे यही गुज़ारिश है कि ये हवेल हमें एलाट हो चुकी है... और पाकिस्तान बन चुका है... आप हिंदू हैं... आपका यहां रहना ठीक भी नहीं है... आप मतलब...

सिकन्दर मिर्ज़ाः बग़ैर जड़ के दरख़्त कब तक हरा–भरा रह सकता है? आपके अज़ीज़ रिश्तेदार, मोहल्लेदार सब हिंदुसतान जा चुके हैं... अब वही आपका मुल्क है...आप यहां कब तक रहिएगा?

हमीदा बेगमः अभी तक तो फिर भी ग़नीमत है... लेकिन सुनते हैं पाकिस्तान में जितने भी ग़ैर मुस्लिम रह जायेंगे उन्हें ज़बर्दस्ती मुसलमान बनाया जाएगा... इसलिए...

रतन की मांः बेटी, कोई बार–बार नहीं मरता... मैं मर चुकी हां मनूं पता है और उसदे बीवी बच्चे हुण इस दुनियां विच नई है... मौत और जिन्दगी विच मेरे वास्ते कोई फर्क नई बचया।

सिन्कदर मिर्ज़ाः लेकिन...

रतन की मांः हवेली त्वोड नाम एलाट हो गयी है। तुसी रहो। त्वानु रहने तो कौन रोक रया है... जित्थे तक मेरी हवेली तो निकल जाण दा स्वाल है... मैं पहले ही मना कर चुकी आं...

सिकन्दर मिर्ज़ाः (गुस्से में) देखिए आप हमें गैर मुनासिब हरकत करने के लिए मजबूर...

रतन की मांः अगर तुसी इस तरह ही समझते हो तां जो मरजी आए करो... (रतन की मां उठकर सीढ़ियों की तरफ़ चली जाती हैं।)

हमीदा बेगमः निहायत सख़्त दिल औरत है, डायन।

तन्नोः किसी बात पर तैयार ही नहीं होती।

जावेदः अब्बा जान अब मुझे इजाज़त दीजिए।

सिकन्दर मिर्ज़ाः ठीक है बेटा... तुम जो चाहो करो...

हमीदा बेगमः लेकिन ख़तरा न उठाना बेटा।

जावेदः (हंसकर) ख़तरा...

(अंतराल)

अभिनेता मंच पर आकर गाते हैं

फूल ख़ुश्बू से जुदा है अबके
यारों ये कैसी हवा है अबके

पत्तियां रोती हैं सिर पीटती हैं
क़त्ले गुल आम हुआ है अबके

मंज़रे ज़ख़्मे वफ़ा किसको दिखायें
शहर में कहते वफ़ा है अबके

वो तो फिर ग़ैर थे लेकिन यारों
काम अपनों से पड़ा है अबके

OO

दृश्य : पांच

(चाय की दुकान। अलीमउद्दीन चायवाला, जावेद मिर्जा, पहलवान अनवर, सिराज, रज़ा, नासिर काज़मी। अलीमुउद्दीन चाय बना रहा है। पहलवान अनवर, सिराज और रज़ा चाय पी रहे हैं।)

पहलवानः ओय अलीम, इधर कितने मकान एलाट हो गए।

अलीमः इधर तोर समझो गली की गली ही एलाट हो गई पहलवान।

पहलवानः मोहिन्दर खन्ना वाला मकान किन्नू एलाट हुआ है?

अलीमः अब मैं क्या जानूं पहलवान... ये जो उधर से आए हैं अपनी तो समझ में आए नहीं... छटांक–छटांक भर के आदमी...लस्सी का एक गिलास नहीं पिया जाता उनसे...

पहलवानः अबे तू ये सब छोड़... मैं पूछ रहा था मोहिन्दर खन्ना वाले मकान में कौन आया है।

अलीमः कोई सायर है... नासिर काज़मी।

पहलवानः तां गया मोहिन्दर खन्ना का भी मकान... और रजन जौहरी दी हवेली।

अलीमः उसमें तो परसों ही कोई आया है... तांगे पर सामान–वामान लाद कर... उसका लड़का कल ही इधर से दूध ले गया है... उधर कुछ मुसीबत हो गयी है पहलवान। कुछ समझ नहीं आ रिया।

पहलवानः क्या गल्ल है?

अलीमः अरे कह रिया था रतन जौरी की मां... तो हवेली में है।

पहलवानः (उछलकर) नहीं।

अलीमः हां हां पहलवान... वही लड़का बता रहा था... बेचारा बड़ा परेशान था। कह रिया था... छः महीने बाद मकान भी एलाट हुआ तो ऐसा जहां कोई रह रिया है।

पहलवानः तुझे कैसे मालूम कि वो रतन जौहरी की मां है?

अलीमः लड़का बता रहा था उस्ताद...

पहलवानः (धीरे से) वह बच कैसे गयी... इसका मतलब है अभी और बहुत कुछ दब रख्या है उसने...

अनवरः बाइस कमरों की तो हवेली है उस्ताद कहीं छुपक गयी होगी।

सिराजः एक–एक कमरा छान मारा था हमने तो।

पहलवानः रज़ा, तू चला जा और उस नू बुला ले आ...

अलीमः किसे?

पहलवानः ओसे नू जिस नू रतन जौहरी की हिवेली एलाट हुई है।

अलीमः पहलवान... उसके बाप को एलाट हुई है।

पहलवानः अरे तू मुण्डे को ही बुला ला...

रज़ाः ठीक है पहलवान।
(रज़ा निकल जाता है।)

पहलवानः अभी दही और मथा जाएगा... अभी घी और निकलेगा।

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

अनवारः लगता तो यही है उस्ताद।

पहलवानः ओय लगता क्या पक्की गल्ल है।
(नासिर काज़मी आते हैं पहलवान उनकी तरफ़ शक्की नज़रों से देखता है)

अलीमः सलाम अलैकुम काज़मी साहब।

नासिरः वालैकुम सलाम... कहो भाई चाय–वाय मिलेगी?

अलीमः हां–हां बैठिए काज़मी साहब... बस भट्टी सुलग ही रही है।
(नासिर बेंच पर बैठ जाते हैं)

पहलवानः त्वाडी तारीफ़।

नासिरः वक्त के साथ हम भी ऐ नासिर
ख़ार–ओ–ख़स की तरह बहाये गए।
(चाय की चुस्की लेकर पहलवान से) आपकी तारीफ़?

पहलवानः (फ़ख़्र से) क़ौम का ख़ादिम हां।

नासिरः तब तो आपसे डरना चाहिए।

पहलवानः क्यों?

नासिरः ख़ादिमों से मुझे डर लगता है।

पहलवानः कया मतलब।

नासिरः भई दरअलस बात ये है कि दिल ही नहीं बदले हैं लफ़्ज़ों के मतलब भी बदल गए हैं... ख़ादिम का मतलब हो गया है हाकिम... और हाकिम से कौन नहीं डरता?

अलीमः (ज़ोर से हंसता है) चुभती हुई बात कहना तो कोई आपसे सीखे नासिर साहब!

नासिरः भई बक़ौल 'मीर'–
हमको शायर न कहो 'मीर' के हमने साहब
रंजोग़म कितने जमा किए कि दीवान किया।
तो भई जब तार पर चोट पड़ती है तो नग़्मा आप फूटता है।
(रज़ा और अलीम जावेद के साथ आते हैं)

पहलवानः सलाम अलैकुम...

जावेदः वालेकुमस्स्लाम।

पहलवानः तुसी लोकां नू रतन जौहरी दी हवेली एलाट हुई है।

जावेदः जी हां।

पहलवानः सुन्या उसमें बड़ा झगड़ा है।

जावेदः आपकी तारीफ़?

(पहलवान ठहाका लगाता है)

अलीमः पहलवान को इधर बच्चा–बच्चा जानता है... पूरे मुहल्ले के हमदर्द हैं... जो काम किसी से नहीं होता पहलवान बना देते हैं।

सिराजः वलीशाह के अखाड़े के उस्ताद हैं पहलवान।

अनवरः हम सब पहलवान के चेली चापड़ हैं।

पहलवानः हां तो क्या झगड़ा है?

जावेद' रतन जौहरी की मां हवेली में रह रही है।

पहलवानः ये कैसे हो सकदा है।

जावेदः है... हमने उसे देखा है, उससे बात की है...

पहलवानः तां फिर की सोचा है?

जावेदः अजीब बुढ़िया है... कहती है मैं कहीं नहीं जाऊंगी हवेली में ही रहूंगी।

पहलवानः ज़रूर तगड़ा मालपानी गाड़ रखा होगा। तो तां तूं की कीता?

जावेदः अब्बा कस्टोडियन के दफ़्तर गए थे। दफ़्तर वाले कहते हैं, हवेली खाली कर दो। तुम्हें दूसरी दे देंगे।

पहलवानः ए चंगी रही... बुड़ी से नहीं खाली कराएंगे... तुमसे करायेंगे... फेर?

जावेदः फिर क्या, हम लोग तो बड़े परेशन हैं।

पहलवानः ओय इसमें परेशानी की तो कोई बात नहीं है।

जावेदः तो क्या करें?

पहलवानः तू कुछ नहीं कर सकेगा... करेगा वही जो कर सकता है।

(नासिर उठकर चले जाते हैं)

जावेदः क्या मतलब?

पहलवानः साफ़–साफ़ सुण ले... जब तक बुढ़िया ज़िंदा है हवेली पर तुम्हारा क़ब्ज़ा नहीं हो सकता... और बुढ़िया से तुम निपट नहीं सकदे... उसी उस नू ठिकाणे लगा सकदे हां... पर ओ वी आसान नहीं है... पहले जो काम मुफ़्त हो जान्दा सी अब उसके पैसे लगने लगे हैं... समझे।

जावेदः हां, समझ गया।

पहलवानः अपने अब्बा नू कह... दो–चार हज़ार रुपए दे... लालच में कहीं लक्खा दी हवेली हाथ स न निकल जाए।

अंतराल गायन

(अभिनेता मंच पर आकर गाते हैं)

शहर दा शहर घर जलाए गए
यूं भी जश्ने तरब मनाए गए

एक तरफ़ झूम कर बहार आई
एक तरफ़ आश्यां जलाए गए

क्या कहूं किस तरह सरे बाज़ार
अस्मतों के दिए बुझाए गए

आह तो ख़िलवतों के सरमाए
बज़्म–ए– आम में लुटाए गए

वक़्त के साथ हम भी ऐ नासिर
ख़ार–ओ–ख़स की तरह बहाए गए।

○○

दृश्य : छः

(हमीदा बेगम बैठी सब्ज़ी काट रही हैं। तन्नो आती है।)

तन्नोः अम्मां, बेगम हिदायत हुसैन कह रही हैं कि उनका नौकर टाल पर कोयले लेने गया था, वहां कोयले ही नहीं हैं। कह रही हैं हमें एक टोकरी कोयले उधार दे दो... कल वापस कर देंगे।

हमीदा बेगमः ऐ बीवी होशों में रहो... हमें क्या हक़ है... दूसरों की चीज़ उधार देने का... कोयले तो रतन की अम्मां के हैं।

तन्नोः अम्मां, हिदायत साहब ने कुछ लोगों का खाने पर बुलाया है। भाभी जान बेचारी बेहद परेशान हैं। घर में न लकड़ी है... ना कोयले... खाना पक्के तो काहे पर पक्के।

हमीदाः ए तो मैं क्या बताऊं... रतन की अम्मां से पूछ लो... कहे तो एक टोकरी क्या चार टोकरी दे दो।

(तन्नो सीढ़ियों की तरफ़ जाती है और आवाज़ देती है।)

तन्नोः दादी... दादी मां... सुनिए... दादी मां...

(ऊपर से आवाज़)

रतन की मांः आई बेटी आई... तू जुग जुग जीवें (आते हुए) मैं जादवी तेरी आवाज सुनदी आं... मनूं लगदा हय कि मैं जिन्दा हां...

(रतन की मां सीढ़ियों पर से उतर कर दरवाज़े में आती है और ताला खोलने लगती है।)

रतन की मांः तेरी मां दी तबीअत कैसी है।

तन्नोः अच्छी है।

रतन की मांः कल रत किस दे कन विच दर्द हो रिआ सी।

तन्नोः हां, अम्मां के ही कान में था।

रतन की मांः तां फिर मेरे तों दवा लै लैंदी...ए छोटे–मोटे इलाज ते मैं खुद कर लेंदी हां।

(रतन की मां चलती हुई हमीदा बेगम के पास आ जाती है।)

हमीदा बेगमः आदाब बुआ।

रतन की मांः बेटी... तू मेरी पुत्तर दे बराबर है... मां जी बुलाया कर मैंनूं।

हमीदा बेगमः बैठिए मांजी।

(रतन की मां बैठ जाती है।)

रतन की मांः मैं कय रही सी कि छोटी–मोटी बीमारियां दी दवाइयां मैं अपने कोल रखदी हां। रात–बिरात कदी ज़रूरत पै जाये ते संकोच नई करना।

तन्नोः दादी, पड़ोस के मकान में हिदायत हुसैन साहब हैं न।

रतन की मांः कौन से मकान विच, गजाधर वाले मकान विच?

तन्नोः जी हां... उनकी बेगम को एक टोकरी कोयलों की ज़रूरत है। कल पावस कर देंगी... आप कहें तो...

रतन की मांः (बात काट कर) लै भला ऐ वी काई पूछन दी गल है।इक टोकरी नहीं दो टोकरी दे देवो।

हमीदा बेगमः ये बताइए मां जी यहां लाहौर में चचीडे नहीं मिलते? हमारे यहां लखनऊ में तो यही मौसम है चचीडों का... कड़वे तेल और अचार के मसाले में बड़े लज़ीज़ पकते हैं।

रतन की मांः चचीडे... कैसे होंदे ने बेटी, मैनूं समझाओ... साडी पंजाबी विच की कैंदे न उना नूं?

हमीदा बेगमः मांजी ककड़ी से थोड़ा ज़्यादा लम्बे–लम्बे। हरे और सफ़ेद होते हैं... चिकने होते हैं।

रतन की मांः लै भला... साडे वल होंदे क्यों नहीं... बहुत होंदे ने... ओना नू इद्दद खिराटा कैंदे ने... अपने पुत्तर से कहना सब्ज़ी बाज़ार में रहीम की दुकान पूछ लै... उत्थे मिल जाएंगे।

हमीदा बेगमः ऐ ये शहर तो हमारी समझ में आया नहीं... यहां निगडमारी समनक नहीं मिलती।

रतन की मांः बेटी लाहौर तों बड़्डा दूरा शहर तो साड्डे हिंदुस्तान च है ही नहीं... मसल मशहूर है कि जिस लाहौर नई देख्या ओ जन्मया ही नई।

हमीदा बेगमः ऐ लेकिन लखनऊ का क्या मुक़ाबला।

रतन की मांः मैं तां कदी लखनऊ गयी सी... हां चालीस साल पहले दिल्ली ज़रूर गई सी... बड़ा उजड़या–उजड़या जा शहर सी।

हमीदा बेगमः मां जी यहां रुई कहां मिलती है।

रतन की मांः रुई... अरे रुई तो बहुत बड्डा बाज़ार है... देखो जावेद नू कहो एत्थों से निकले रेज़ीडेंसी रोड से गली हारीओम वाली चं मुड़ जाए, वहां से छत्ता अकबर खां पहुंचेगा... उत्थे दो गलियां जान्दियां सज्जे खब्बे दिखाई देंणगियां..एक है गली रुई वाली... सैंकड़ों रुई दियां दुकानां। (सिकंदर मिर्ज़ा अन्दर आते हैं। रतन की मां को देख कर बुरा–सा मुंह बनाते हैं।)

रतन की मांः जीते रहो पुत्तर... कैसे हो।

सिकंदर मिर्ज़ाः दुआ है आपकी... शुक्र है अल्लाह का।

रतन की मांः (उठते हुए) बेटी लाहौर विच सब कुछ मिलदा है... जद कोई दिक्कत होय तां मनुं पूछ लेणा... चप्पे–चप्पे तो वाकिफ हां लाहौर दे.. अच्छ जीदी रह... मैं चलां।
(चली जाती है।)

सिकंदर मिर्ज़ाः (बिगड़कर) ये क्या मज़ाक़ है... हम इनसे पीछा छुड़ाने के चक्कर में हैं और आप इन्हें गले का हार बनाये हुए हैं।

हमीदा बेगमः ए नौज, मैं क्यों उन्हें बनाने लगी गले का हार। हिदायत हुसैन साहब की ज़रूरत न होती तो मैं बुढ़िया से दो बातें भी करती।

सिकंदर मिर्ज़ाः हिदायत हुसैन की ज़रूरत?

हमीदा बेगमः जी हां... घर में कोयले हैं न लकड़ी... दोस्तों को दावत दे बैठे हैं... बेगम बेचारी परेशान थी। लकड़ी की टाल पर भी कोयले नहीं थे। हमसे मांग रही थ तब ही बुढ़िया को बुलाया था। कोयले तो उसी के हैं न।

सिकंदर मिर्ज़ाः देखिए उसका इस घर में कुछ नहीं है... एक सुई भी उसकी नहीं है। सब कुछ हमारा है।

हमीदा बेगमः ये कैसी बातें कर रहे हैं आप।

सिकंदर मिर्ज़ाः बेगम हम इसी तरह दबते रहे तो ये हवेली हाथ से निकल जायेगी...
(तन्नो की तरफ़ देखकर, जो सब्ज़ी काट रही है।)
तन्नो तुम यहां से ज़रा हट जाओ बेटी... तुम्हारी अम्मां से मुझे कुछ ज़रूरी बात करनी है।
(तन्नो हट जाती है।)

सिकंदर मिर्ज़ाः (राज़दारी से) जावेद ने बात कर ली है... इस बुढ़िया से पीछा छुड़ा लेना ही बेहतर है... कल को इसका कोई रिश्तेदार आ पहुंचा तो लेने के देने पड़ जायेंगे।

हमीदा बेगमः लेकिन कैसे पीछा छुड़ाओगे।

सिकंदर मिर्ज़ाः जावेद ने बात कर ली है।

हमीदा बेगमः अरे किससे बात कर ली है... क्या बात कर ली है?

सिकंदर मिर्ज़ाः वो लोग एक हज़ार रुपए मांग रहे हैं।

हमीदा बेगमः क्यों... एक हज़ार तो बड़ी रक़म है।

सिकंदर मिर्ज़ाः बुढ़िया जहन्नुम वासिल हो जायेगी।

हमीदा बेगमः (चौंकरकर, घबरा, डर कर) नहीं।

सिकंदर मिर्ज़ाः और कोई रास्ता नहीं है।

हमीदा बेगमः नहीं... नहीं... खुदा के लिए नहीं... मेरे जवान जहान बच्चे हैं, मैं इतना बड़ा अज़ाब अपने सिर नहीं ले सकती।

सिकंदर मिर्ज़ाः क्या बकवास करती हो।

हमीदा बेगमः नहीं... कहीं हमारे... मेरी क़सम... ये न कीजिए। उसने हमारा बिगाड़ा ही क्या है।

सिकंदर मिर्ज़ाः ये वहेम है तुम्हारे दिल में।

हमीदा बेगमः नहीं... नहीं आपको मेरी क़सम... ये न कीजिए। उसने हमारा बिगाड़ा ही क्या है।

सिकंदर मिर्ज़ाः बेगम एक कांटा है जो निकल गया तो ज़िंदगी भर के लिए आराम ही आराम है।

हमीदा बेगमः हाय मेरे अल्लाह, इतना बड़ा गुनाह... जब हम किसी को ज़िंदगी दे नहीं सकते तो हमें छीनने का क्या हक़ है?

सिकंदर मिर्ज़ाः वो काफ़िरा है बेगम।

हमीदा बेगमः इसका ये तो मतलब नहीं कि उसे क़त्ल कर दिया जाये। मैं तो हरगिज़–हरगिज़ इसके लिए तैयार नहीं हूं।

सिकंदर मिर्ज़ाः अब तुम समझ लो।

हमीदा बेगमः नहीं... नहीं... तुम्हें बच्चों की क़सम ये मत करवाना।

अंतराल गायन

(अभिनेता मंच पर आकर गाते हैं)

दिल में इक लहर–सी उठी है अभी
कोई ताज़ा हवा चली है अभी

शोर बरपा है ख़ान–ए–दिल में
कोई दीवार–सी गिरी है अभी

भरी दुनिया में जी नहीं लगता
जाने किस चीज़ की कमी है अभी

शहर की बे चिराग़ गलियों में
ज़िंदगी तुझको ढूंढती है अभी

वक़्त अच्छा भी आएगा 'नासिर'

ग़म न कर ज़िंदगी पड़ी है अभी

○○

दृश्य : सात

(सिकंदर मिर्ज़ा बैठे अख़बार पढ़ रहे हैं। दरवाज़े पर कोई दस्तक देता है।)

सिकंदर मिर्ज़ाः आइए... तशरीफ़ लाइए।

(पहलवान याकूब के साथ अनवार, सिराज? रज़ा और मुहम्मद शाह अन्दर आते हैं।)

सब एक साथः सलाम अलैकम...

सिकंदर मिर्ज़ाः वालेकुम सलाम... तशरीफ रखिए।

(सब बैठ जाते हैं।)

पहलवानः आपका इस्में शरीफ़ सिकंदर मिर्ज़ा है न?

सिकंदर मिर्ज़ाः जी हां।

पहलवानः ये कूचा जौहरियां च रतनलाल जौहरी की हवेली है ना?

सिकंदर मिर्ज़ाः जी हां बेशक।

पहलवानः ये मेरे दोसत हैं मुहम्मद शाह। इनको हवेली की दूसरी मंज़िल एलाट होइ है।

सिकंदर मिर्ज़ाः (लैरत से) जी... (ठहरकर) ये हवेली तो एक माह पहले मुझे एलाट हो चुकी है।

मुहम्मद शाहः लेकि पहली मंज़िल तो आपके क़ब्ज़े मैं नहीं है न?

सिकंदर मिर्ज़ाः ये आपको किसने बताया?

पहलवानः त्वाडा बेटा जावेद कय रिया सी कि ऊपर वाली मंज़िल में रतनलाल जौहरी दी मां रह रही है। मतलब पाकिस्तान ओ वी शहरे–लाहौर में एक काफ़िरा...

सिकंदर मिर्ज़ाः अच्छा तो आप वही हैं जिनसे जावेद की बात हुई थी।

पहलवानः हां, जी हां जी...

सिकंदर मिर्ज़ाः तो जनाब मुहम्मद शाह, आपके नाम ऊपरी मंज़िल एलाट नहीं हुई है... आप बस उस पर क़ब्ज़ा...

पहलवानः आप ठीक समझे... काफ़िरा के रहने से तो अच्छा है कि अपना अपना कोई मुसलमान भाई रहे।

सिकंदर मिर्ज़ाः लेकिन ये पूरी हवेली मुझे एलाट हुई है।

पहलावनः ठीक है... ठीक है लेकिन क़ब्ज़ा ता नहीं त्वाडा ऊपरी मंज़िल ते।

सिकंदर मिर्ज़ाः आपको इससे क्या मतलब।

पहलवानः इसदा तां ए मतलब निकलदा है कि तुसी एक हिन्दू काफ़िरा नू अपने घर विच छुपा रख्या है।`

सिकंदर मिर्ज़ाः तो तुम मुझे धमका रहे हो पहलवान।

रज़ाः जी नहीं, बात दरअसल ये है...

सिकंदर मिर्ज़ाः (बात काट कर) कि ऊपर के ग्यारह कमरे क्यों न आप लोगों के क़ब्ज़े में आ जाएं..

पहलवानः असी तां इस्लामी बिरादरी ने नाते त्वाडी मदद करना आए सी। पर त्वानू मुसलमान तो ज़्यादा काफ़िर प्यारा है।

सिकंदर मिर्ज़ाः मुहम्मद शाह साहब। आप कस्टोडियन वालों को बुलाकर ले आएं... वो आपको क़ब्ज़ा दिला सकते हैं... इस बात में इस्लाम और कुफ़्र कहां से आ गया।

पहलवानः मिर्ज़ा साहब तुसी दस्स सकदे हो कि किया पाकिस्तान इसी लिए बन्या सी कि इत्थे काफिद्य रहें?

सिकंदर मिर्ज़ाः ये आप पाकिस्तान बनवाने वालों से पूछिए।

पहलवानः मिर्ज़ा साहब हम ये गवारा नहीं कर सकदे कि शहरे लाहौर द कूचा जौहरियां में कोई काफ़िर दनदनाता फिरे।

सिकंदर मिर्ज़ाः जनाब वाला आप कहना क्या चाहते हैं मैं ये समझने से क़ासिर हूं।

पहलवानः साडा इशारा समझो... असी एक मिनट में ऊपरी मंज़िल दा फ़ैसला कर देंगे। उत्थे उस काफ़िरा दी जगह मुहम्मद शाह...

सिकंदर मिर्ज़ाः देखिए हवेली पूरी की पूरी मेरे नाम एलाट हुई है।

पहलवानः चाहे उसमें काफ़िरा ही क्यों न रहे... तुसी...

सिकंदर मिर्ज़ाः मशविरे के लिए शुक्रिया।

पहलवानः मिर्ज़ा, फिर ओ नइ हो सकेगा जैसा आप चांदे हो... किसो काफ़िरा दे वजूद नू इत्थे नहीं बर्दाश्त किता जाएगा...
(उठते हुए सबसे)
चलो।
(सिकंदर मिर्ज़ा हैरत और डर से सबको देखते हैं। वे चले जाते हैं। कुछ क्षण बाद हमीदा बेगम अन्दर आती हैं।)

हमीदा बेगमः क्यों साहब ये कौन लोग थे... ऊंची आवाज़ में क्या बातें कर रहे थे।

सिकंदर मिर्ज़ाः ये वही बदमाश था जिससे जावेद ने बातकी थी।

हमीदा बेगमः लेकिन।

सिकंदर मिर्ज़ाः हां, फिर जावेद ने उसे मना कर दिया था। साफ़ कह दिया था कि ऐसा हम नहीं चाहते... लेकिन कम्बख़्त को ग्यारह कमरों का लालच यहां खींच लाया।

हमीदा बेगमः क्या मतलब?

सिकंदर मिर्ज़ाः पहले कहने लगा कि उसे कस्टोडियन वालों ने ऊपरी मंज़िल के ग्यारह कमरेएलाट कर दिए हैं।

हमीदा बेगमः हाय अल्ला... ये कैसे... एक मकान दो आदमियों को कैसे एलाट हो सकता है?

सिकंदर मिर्ज़ाः वो सब झूठ है...

हमीदा बेगमः फिर...

सिकंदर मिर्ज़ाः फिर इस्लाम का ख़ादिम बन गया। कहने लगा पाकिस्तान के शहरे लाहौर में कोई काफ़िरा कैसे रह सकती है... जाते–जाते

धमकी दे गया है कि रतन जौहरी की मां का काम तमाम कर देगा।
हमीदा बेगमः हाय अल्ला... अब क्या होगा।
सिकंदर मिर्ज़ाः आदमी बदमाशा है... मेरे ख़्याल से उसे शक है कि रतन की मां ने 'कुछ' छिपा रखा है... दरअसल उसकी नज़र 'उसी' पर है।
हमीदा बेगमः हाय तो क्या मार डालेगा बेचारी को?
सिकंदर मिर्ज़ाः कुछ भी कर सकता है।
हमीदा बेगमः ये तो बड़ा बुरा होगा।
सिकंदर मिर्ज़ाः अजी फंसेंगे तो हम... वो तो मार–मूर और लूट खा कर चल देगा... फेस जायेंगे हम लोग।
हमीदा बेगमः हाय अल्ला फिर क्या करूं।
सिकंदर मिर्ज़ाः रात में दरवाज़े अच्छी तरह बंद करके सोना।
हमीदा बेगमः सुनिए, उनको बताऊं या न बताऊं।
(सिकंदर मिर्ज़ा सोच में पड़ जाते हैं।)
हमीदा बेगमः बताना तो हमारा फ़र्ज़ है।
सिकंदर मिर्ज़ाः कहीं 'वो' ये न समझे कि ये सब हमारी चाल है?
हमीदा बेगमः तो, ये तुमने और उलझन में डाल दिया।
सिकंदर मिर्ज़ाः ऐसा करो कि उनकी हिफ़ाज़त का पूरा इंतेज़ाम इस तरह करो कि उन्हें पता न लगने पाए।
हमीदा बेगमः ये कैसे हो सकता है।
सिकंदर मिर्ज़ाः यहीं तो सोचना है।
हमीदा बेगमः हाय अल्ला ये सब क्या हो रहा है... क्या मैं फरियादी मातम पढ़ूं...
सिकंदर मिर्ज़ाः इमामबाड़ा कहां है घर में... ख़ैर... देखो... वो अकेली रहती है... उनके साथ किसी मर्द का रहना...
हमीदा बेगमः मतलब तुम...
सिकंदर मिर्ज़ाः (घबरा कर) नहीं... नहीं... जावेद...
हमीदा बेगमः वो जावेद को ऊपर क्यों सुलायेंगी... और जावेद को मैं वैसे भी नहीं जाने दूंगी।
सिकंदर मिर्ज़ाः ज़िद मत करो।
हमीदा बेगमः क्या चाहते हो... मेरा एकलौता लड़का भी...

सिकंदर मिर्ज़ाः बकवास मत करो।
हमीदा बेगमः फिर क्या करूं।
सिकंदर मिर्ज़ाः (डरते–डरते) तुम वहां... उसके साथ सो जाओ...
हमीदा बेगमः (जलकर) लो मर्द होकर मुझे आग के मंह में झोंक रहे हो।
सिकंदर मिर्ज़ाः (झुंझला कर) अरे तो मैं... वहां सो भी नहीं सकता।
हमीदा बेगमः ठीक है तो मैं ही ऊपर जाती हूं।
सिकंदर मिर्ज़ाः नहीं।
हमीदा बेगमः ये लो... अब फिर नहीं।
सिकंदर मिर्ज़ाः ठीक है, देखो उनसे कहना...
हमीदा बेगमः अरे मुझे अच्छी तरह मालूम है। उनसे क्या कहना है। क्या नहीं कहना।

अंतराल गायन

(अभिनेता गाते हैं)
मैं हूं रात का एक बजा है
ख़ाली रस्ता बोल रहा है

आज तो यूं ख़ामोश है दुनिया
जैसे कुछ होने वाला है

कैसी अंधेरी रात है देखो
अपने आपसे डर लगता है।

ऐसा गाहक कौन है जिसने
सुख देकर दुःख मोल लिया है

मैं हूं रात का एक बजा है
ख़ाली रस्ता बोल रहा है।

○○

दृश्य : आठ

(मस्जिद में मौलाना इकरामउद्दीन नमाज़ पढ़ रहे हैं। पहलवान और अनवार अंदर आते हैं। मौलाना को नमाज़ पढ़ते देखकर अलग खड़े हो जाते हैं। मौलाना नमाज़ पढ़ने के बाद पीछे मुड़ते हैं।)

पहलवानः सलाम अलैकुम मौलवी साहब।

मौलवीः वालकुमस्सलाम...

(पहलवान और अनवार आगे बढ़कर मौलाना से मुसाफ़ा करते हैं और उनके हाथ चूमते हैं)

मौलवीः अल्लाह त्वाडे दिलां नू अपने नूर नाल रौशन रखे... आओ... बैठो...

(तीनों मस्जिद की चटाई पर बैठ जाते हैं)

मौलवीः कहो सब ख़ैरियत है?

पहलवानः हां जी... हां जी...

(इधर–उधर देखकर कि मस्जिद में कुछ अंधेरा–सा है और रौशनी कम है और ताक़ पर रखा एक दिया जल रहा है)

पहलवानः मैं इद्दर एक पैट्रोमैक्स लै आवांगा।

मौलवीः ख़ुदा का घर तो रोज़े–नमाज़ से रौशन होंदा–पहलवान... तुसी नमाज़ पढ़न आया करोकृ

पहलवानः (घबराकर) आ–वांगे जी... आ–वांगे... ज़रूर आ–वांगे।

मौलवीः इस वक़्त किवें आणा होया?

पहलवानः जी वो गल्ल ये है की...

(रुक जाता है)

मौलवीः तुसी अल्ला दे घर विच हो... इत्थे घबराना चंगा नहीं लगदा... दस्सो?

पहलवानः ओ जी... गल्ल ए है कि इत्थे कुफ़्र फैल रिया सी।

मौलवीः की कुफ़्र पुत्तर?

पहलवानः बड़ा भारी कुफ़्र है जी।

मौलवीः तुसी दस्सो।

पहलवानः अपने मोहल्ले विच एक हिन्दू और रह गई सी।

मौलवीः रह गई सी, मतलब?

पहलवानः भारत नहीं गई सी।

मौलवीः तां?

पहलवानः (घबराकर)... तां... इत्थे ही छुप गई सी। भारत नहीं गई।

मौलवीः तो फिर?

पहलवानः की हिन्दू औरत इत्थे रह सकदी है?

मौलवीः (हंसकर) हां... हां... क्यों नहीं।

अनवानः कुछ समझे नहीं मुल्ला जी।

पहलवानः तुसी देखो जी साडे दुश्मन साडे विच छिपे ने...

मौलानाः कौन दुश्मन...

पहलवानः हिन्दू...

मौलवीः वान्ने अहज़ मनउल मुशरीकन अस्त आदक फार्जिदा... हुक्मे खुदाबन्दी है कि अगर मुशरिकीन में से कोई तुमसे पनाह मांगे तो उसको पनाह दो।

पहलवानः असी अपने मुसलमान भाइयां दा क़त्ले–आम देख्या है। साडे दिलां च बदले की आग भड़क रही है।

मौलवीः पुत्तर जुल्म को जुल्म से ख़त्म नहीं कर सकदे... नेकी, शराफ़त, ईमानदारी से जुल्म ख़त्म होंदा है... जानवर तक प्यार नाल पालतू बन जांदा है... तुसी इंसान ते जुलम करके खुदा नू की मुंह दिखाओगे? इस्लाम जुल्म दे ख़िलाफ़ है... जो जुल्म करदे ने ओ मुसलमान नहीं है... समझे... इरशाद है कि तमु ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।
(पहलवान और अनवार ख़ामोश हो जाते हैं और अपने सिर झुका लेते हैं।)

पहलवानः हिन्दुआं ने साडे ऊपर बड़े जुल्म कीते सी मौलवी साहब... असी भूल नहीं सकदे... ट्रेनां दी ट्रैनां कटके भेजियां सीकृ औरतां ते बच्चियां नूं गाजर मूली दी तरह कट दित्ता सी।

मौलवीः तुसी ओइ करना चाहन्दे हो?

पहलवानः हां बदला लेना...

मौलवीः तब तुम कैसे कह सकदे हो कि तुम मुसलमान हो और तुम्हारा मज़हब रहमदिली सिखांदा है?
(दोनों के मुंह लटक जाते हैं)

पहलवानः रतनलाल दी मां भारत चली जाएगी तो... उत्थे कोई मुसलमान बिरादर रहेगा?

मौलवीः मुसलमान बिरादर अपने बलबूते ते किदे होर नइ रह सकदा? उस नू बूढ्डी औरत दा मकान ही चाइदा है?
(फिर दोनों के मुंह लटक जाते हैं)

मौलवीः लड़ना ही है तो अपने नफ़्स से लड़ो... वही सबसे बड़ा जिहाद सी... खुदगर्ज़ी, लालच, आरामो–असाइश से लड़ो...बेहारा ते बूढ्डी औरत नाल लड़ना इस्लाम नहीं है।

(अंतराल समूह गायन)

ऐसा भी कोई सपना जागे
साथ मेरे इक दुनिया जागे

वो जागे जिसे नींद न आये

या कोई मेरा जैसा जागे

हवा चले तो जंगल जागे
नाव चले तो नदिया जागे

ऐसा भी कोई सपना जागे
साथ मेरे इक दुनिया जागे

OO

दृश्य : नौ

(सुबह का वक़्त है। अलीम अपने चायख़ाने में है। भट्ठी सुलगा रहा है। उसी वक़्त नासिर काज़मी और उनके पीछे–पीछे तांगेवाला हमीद अपने हाथ में चाबुक लिए अन्दर आते हैं।)

नासिरः हमीद मियां बैठो... रोज़ की तरह आज भी अलीम पूरी रात सोता रहा है और भट्ठी ठण्डी पड़ी रही।

अलीमः आप बड़ी सुबह–सुबह आ गए नासिर साहब।

नासिरः भाई, जो रात में सोया हो, उसी के लिए तो सुबह होती हे।
(ठहाका लगाकर हंसता है।)

अलीमः क्या पूरी रात सोए नहीं?

नासिरः बस मियां पूरी रात आवारागर्दी और पांच शेर की ग़ज़ल की नज़र हो गई।

हमीदः वैसे भी आप कहां सोते हैं?

नासिरः रातें, किसी छत के नीचे सोकर बर्बाद कर देने के लिए नहीं होतीं।

अलीमः क्यों नासिर साहब?

नासिरः इसलिए कि रात में ही दुनिया के अहम काम होते हैं। मिसाल के तौर पर फूलों में रस पड़ता है रात को... समन्दरों में ज्वार–भाटा आता है रात को... खुशबुएं रात को ही जनम लेती हैं, फरिश्ते राम को ही उतरते हैं।

अलीमः आपकी बातें मेरी समझ में तो आती नहीं।

नासिरः इसका ये मतलब तो नहीं कि चाय न पिलाओगे।

अलीमः ज़रूर ज़रूर, बस दो मिनट में तैयार होती है।

(भट्टी सुलगाने लगता है।)

अलीमः नासिर साहब कुछ नौकरी वग़ैरा का सिलसिला लगा?

नासिरः नौकरी? अरे भाई शायरी से बड़ी भी कोई नौकरी है?

अलीमः (हंसकर) शायरी नौकरी कहां होती है नासिर साहब।

नासिरः भई देखो, दूसरे लोग आठ घंटे की नौकरी करते हैं... कुछ लोग... दस घंटे काम करते हैं... कुछ बेचारों से तो बारह–बारह घंटे काम लिया जाता है। लेकिन हम शायर तो चाबीस घंटे की नौकरी करते हैं।

(नासिर ज़ोर से हंसते हैं। हमीद उसका साथ देता है।)

हमीदः पूरी रात आप टालते आये... अब तो कुछ शेर सुना दीजिए नासिर साहब।

(पहलवान, अनवार, सिराज और रज़ा अंदर आते हैं।)

पहलवानः ला जल्दी–जल्दी चार चाय पिला।

अलीमः अच्छे मौक़े से आ गये पहलवान।

पहलवानः क्यों? क्या हुआ।

अलीमः नासिर साहब ग़ज़ल सुना रहे हैं।

पहलवानः ओ भई असी की लेना–देना है। ग़ज़ल–वज़ल तो... ए सब झूठी गल्लं हैं....

नासिरः झूठ क्या है पहलवान और सच क्या है?

पहलवानः भई असी ग़ज़ल–वज़ल सुनदे ही नहीं...

नासिरः सच सुनने में मज़ा नहीं आता है, झूठ लोग बार–बार सुनना चाहते हैं।

हमीदः वाह नासिर साहब, क्या बात कह दी। आपके जुमले अश्आर से कम नहीं होते।

सिराजः नई जी नइ... शायरी–वायरी सब बेकार है...

पहलवानः (सिराज से) छड न ए ये बेकार दियां गल्लां। (बड़बड़ाता है) पाकिस्तान विच कुफ्र फैल रिया है तो ए बैठे शायरी कर रहे ने।

अलीमः कैसे उस्ताद? क्या हुआ?

पहलवानः अरे वो हिंदू बुढ़िया दनदनाती फिरती है, रोज़ रावी विच नहान जान्दी है, पूजा करदी है... सानू सबनू ठेंगा दिखादी है। ते साडे कोलों कुछ नहीं होदा... ए कुफ्र नहीं फैल रिया तो और की हो रिया है?

नासिरः अगर इसे आप कुफ्र मानते हैं तो आपकी नज़र में ईमान का मतलब रोज़ रावी में न नहाना, पूजा न करना और किसी को अंगूठा न दिखाना होगा।

पहलवानः (बिगड़कर) क्या मतलब है त्वाडा।

नासिरः आपको समझाना किसके बस का काम है?

पहलवानः जनाब वो हिंदू बुडी साडे घरां च जादी है, साडी औरतां, लड़कियां नाल मिलदी है, ओना नाल गल्ला कदरी है, उना नूं अपने मज़हब दी गल्लां दसदी है।

नासिरः तो किसी और मज़हब की बातें सुनना कुफ्र है।

पहलवानः (बुरा मानते हुए) तो क्या ये चंगी गल है कि साडी बहू–बेटियां हिंदू मजहब दी गल्लां सिखण?

नासिरः किसी और मज़हब के बारे में मालूमात हासिल करना कुफ्र नहीं है।

पहलवानः फिर भी बुरा तो है।

नासिरः नहीं, बुरा भी नहीं है... आपको पता ही होगा कुरान में यहूदी और ईसाई मज़हब का ज़िक्र है।

पहलवानः ईसाई ते यहूदी मज़हबां की गल और हैं, हिंदू मजहब दल गल और है। फ़र्क़ है।

नासिरः क्या फ़र्क है?

पहलवानः ज... ज... जी... फ़र्क है... कुछ न कुछ तो फ़र्क है...

नासिरः तो बताइए ना...

(पहलवान चुप हो जाता है।)

अनवारः अजी वो तो किसी से नहीं डरती।

नासिरः क्यों डरे वो किसी से? क्या उसने चोरी की है या डाका डला है, या किसी का क़त्ल किया है।

सिराजः लेकिन हम ये बर्दाश्त नहीं कर सकते।

नासिरः क्या बर्दाश्त नहीं कर सकते... किसी का न डरना आप बर्दाश्त नहीं कर सकते... यानी सब आपसे डरा करें?

पहलवानः अजी सौ दी सीधी गल्ल है, उसनूं भारत क्यों नहीं भेज दित्ता जान्दा।

नासिरः क्या आपने ठेका लिया है लोगों को इधर से उधर भेजने का? ये उसकी मर्ज़ी है... वो चाहे यहां रहे या भारत जाये।

पहलवानः (अपने चेलों से) चले आओ चलें...
(पहलवान गुस्से में नासिर को देखता है।)

नासिरः है यही ऐने वफ़ा दिल न किसी का दुखा
अपने भले के लिए सबका भला चाहिए।
(पहलवान उठ जाता है और उसके साथी उसके साथ बाहर निकल जाते हैं।)

नासिरः यार अलीम एक बात बता।

अलीमः पूछिए नासिर साहब।

नासिरः तुम मुसलमान हो।

अलीमः हां, हूं नासिर साहब।

नासिरः तुम क्यों मुसलमान हो?

अलीमः (सोचते हुए) ये तो कभी नही सोचा नासिर साहब।

नासिरः अरे भाई तो अभी सोच लो।

अलीमः अभी?

नासिरः हां हां अभी... देखो तुम क्याा इसलिए मुसलमान हो कि जब तुम समझदार हुए तो तुम्हारे सामने हर मज़हब की तालीमात रखी गयीं और कहा गया कि इसमें से जो मज़हब तुम्हें पसंद आए, अच्छा लगे, उसे चुन लो?

अलीमः नहीं नासिर साहब... मैं तो दूसरे मज़हबों के बारे में कुछ नहीं जनाता।

नासिरः इसका मतलब है, तुम्हारा जो मज़हब है उसमें तुम्हारा कोई दख़ल नहीं है... तुम्हारे मां—बाप का जो मज़हब था वही तुम्हारा है।

अलीमः हां जी बात तो ठीक है।

नासिरः तो यार जिस बात में तुम्हारा कोई दख़ल नहीं है... उसके लिए ख़ून बहाना कहां तक जायज़ है?

हमीदः ख़ून बहाना तो किसी तरह भी जायज़ नहीं है, नासिर साहब।

नासिरः अरे तो समझाओ न इन पहलवानों को... लाओ यार एक प्याली चाय और लाओ... साले ने मूड ख़राब कर दिया।

(अंतराल समूह गायन)

साज़े हस्ती की सदा ग़ौर से सुन
क्यों है ये शोर बपा ग़ौर से सुन

इसी मंज़िल में है सब हिज्रो—विसाल
रहरवे आब्ला पा ग़ौर से सुन

इसी गोशे में हैं सब दैर—ओ—हरम
दिल सनम है के खुदा ग़ौर से सुन

काबा सुनसान है क्यों ए वायज़
कान हाथों से उठा ग़ौर से सुन

○○

दृश्य : दस

(हमीदा बेगम के घर में पड़ोस की औरतों की महफ़िल जमी है। फ़र्श पर रतन की मां बैठी कुछ काढ़ रही है। सामने तन्नो बैठी है। तन्नो के बराबर एक 18—19 साल की लड़की साजिदा बैठी है। सामने हमीदा बेगम बैठी है। उनके सामने पानदान खुला हुआ है। हमीदा बेगम के बराबर बेगम हिदायत हुसैन बैठी हैं।)

हमीदा बेगमः (बेगम हिदायत हुसैन से) बहन, पान तो यहां आंख लगाने के लिए नहीं मिलता... और पान के बग़ैर कत्थे चूने का मज़ा ही नहीं आता।

बेगम हिदायतः ऐ, यहां पान होता क्यों नहीं?

रतन की मांः बेटा पान तो उत्थोंईं अनन्दा सी... जद तों बंटवारा होया तां तो मोया पान वी न्यामत हो गया।

हमीदा बेगमः माई ये शहर हमारी समझ में तो आया नहीं।

रतन की मांः पुत्तर इस तरहां न कह, लाहौर ज्या ते कोई शहर ही नहीं है दुनियां च।

हमीदा बेगमः लेकिन लखनऊ में जो बात है... वो लाहौर में कहां...

रतन की मांः पुत्तर अपना वतन ते अपना ई होंदा... है उसदा कोई बदल नहीं।

तन्नोः दादी आपने हमें उलटे फंदे जो सिखये थे... उसमें धागे को दो बार घुमाते हैं कि तीन बार।

रतन की मांः देख बेटी... फिर देख लै... इस तरह पैले फंदा पा... फिर इस तरह घुमा के इदरन तरहां ले जा... फिर दो फंदे और पा दे।

साजिदाः दादी आपकी पंजाबी हमारी समझ में नहीं आती।

रतन की मांः बेटी होंण मैं कोई दूसरी जबान तां सिक्खण तो रई। हां मेरा पुत्तर रतन ज़रूर उर्दू जाणदा सी।
(आंखों के किनारे पोंछने लगती है।)

हमीदा बेगमः माई हो सकता है आपका बेटा और बीवी बच्चे ख़ैरियत से भारत में हों...

रतन की मांः बेटी इन्न बखत गुजर गया... अगर ओ जिंदा होंदे तां ज़रूर मेरी कोई खबर लेंदे।

बेगम हिदायतः माई ऐसा भी तो हो सकता है कि उन लोगों ने सोचा हो कि आप जब लाहौर में न होंगी... (हमीदा बेगम से) बहन आपने सुना सिराज साहब के भाई जिंदा हैं और करांची में रह रहे हैं. .. सिराज साहब वग़ैरह बेचारे के लिए रो—धो कर बैठ रहे थे।

हमीदा बेगमः हां, अल्लाह की रहमत से सब कुछ हो सकता है।

रतन की मांः रेडियो तो वी कई बार ऐलान कराया है लेकिन रतन दा किधरी कोई पता नहीं चलाया।

बेगम हिदायतः अल्लाह पर भरोसा रखो माई... वही सबकी निगेहदाश्त करने वाला है।

रतन की मांः ए ते है... (आंखें पोंछते हुए) बेटी आ गये तन्नू फंदे पाणें।

तन्नोः हां माई ये देखिए...

रतन की मांः हां शाबाश... तू ते इतनी जल्दी सिख गई।

बेगम हिदायतः अच्छा तो अब इजाज़त दीजिए... मैं चलती हूं।

रतन की मांः बेटी त्वानूं जद वी रजाई तलाई च तागे पाणें होंण तां मैन्नू बुला लेंणां। मैं ओ वी करा दवांगी।

बेगम हिदायतः अच्छा माई शुक्रिया... मैं ज़रूर आपको तकलीफ़ दूंगी... और खांसी की जो दवा आपने बना दी थी... उससे बेटी को बड़ा फ़ायदा हुआ है। अब ख़त्म हो गई है।

रतन की मांः तां के होया फिर बणा दबांगी... इस विच की है तू मुलैठी, काली मिर्ज़, शहद और सोंठ मंगा के रख लई बस।

हमीदा बेगमः तो बहन आती रहा कीजिए।

बूगम हिदायतः हां, ज़रूर... और आप भ आइए... माई के साथ।

हमीदा बेगमः (हंसकर) माई के साथ ही मैं घर से निकलती हूं लेकिन माई जैसा ख़िदमत का जज़्बा हां से लाऊं... ये तो सुबह से निकलती हैं तो शाम ही को लौटती हैं।

रतन की मांः बेटी जद तक इस शरीर विच ताकत है तद तक ही सब कुछ है नहीं तों एक दिन त्वाडे लोकां दे बोझ बणना ही है।

हमीदा बेगमः माई हम पर आप कभी बोझ नहीं होंगी... हम ख़ुशी–ख़ुशी आपकी ख़िदमत करेंगे।

बेगम हिदायतः अच्छा खुदा हाफ़िज़।

(बेगम हिदायत चली जाती है।)

रतन की मांः अजे मनूं आफ़ताब साहब दे घर जाणा हैं... उन्हों दे वड्डे मुंडे नूं माता निकल आई है ना... वो बड़ी परेशान है। एक मुंडा बीमार, दूसरा घर दे सारे कामकाज करने होन। मैं मुंडे कौल बैठांगी तां ओ बेचारी घर दा चूल्हा चौका करेगी।

(सिकन्दर मिर्ज़ा आते हैं।)

सिकंदर मिर्ज़ाः आदाब अर्ज़ है माई।

रतन की मांः जीदे रह पुत्तर।

सिकंदर मिर्ज़ाः रहते एक ही घर में हैं लेकिन आपसे मुलाक़ात इस तरह होती है जैसे अलग–अलग मोहल्लां में रहते हों।

हमीदा बेगमः माई घर में रहती ही कहां हैं। तड़के रावी में नहाने चली जाती हैं। सुबह अ़लीक साहब के यहां बड़ियां डाल रही हैं, तो कभी नफ़ीसा को अस्पताल ले जा रही हैं, तीसरे पहर बेगम आफ़ताब के लड़के की तीमारदारी कर रही हैं तो शाम को सकीना को अचार–डालना सिखा रही हैं... रात में दस बजे लौटती हैं। हम लोगों से मुलाक़ात हो तो कैसे हो...

सिकंदर मिर्ज़ाः जज़ाकल्लाह!

हमीदा बेगमः मोहल्ले के बच्चे की ज़बान पर माई का नाम रहता है... हर मर्ज़ की दवा हैं माई।

रतन की मांः बेटी कल्ली पई–पई करांवी की... सब दे नाल ज़रा दिल वी परे–परे जांदा है...हाथ–पैर वी हिलदे रहदें ने। मन्नू होण चाहिदा की है... अच्छा बेटे तेरे कल्लों एक गल पूछणी सी।

सिकंदर मिर्ज़ाः हुक्म दीजिए माई।

रतन की मांः बेटा दीवाली आ रही है... हमेशा दी तरहां इस साल वी मैं दीवे जलाणा और पूजा करना... चांदी हां। मैं तनूं कहणा चाहदी सी कि तन्नूं कोई एतराज़ ते नई होएगा।

सिकंदर मिर्ज़ाः ये भी कोई पूछने की बात है? ख़ुशी से वो सब कुछ कीजिए जो आप करती थीं। हमें इसमें कोई एतराज़ नहीं है... क्यों बेगम।

हमीदा बेगमः बेशक...

(अंतराल गायन)

कहीं उजड़ी–उजड़ी मन्ज़िलनें, कहीं टूटे फूटे से बामो–दर
से वही दयार है दोस्तों जहां लोग फिरते थे रात भर

मैं भटकता फिरता हूं देर से यूं ही शहर–शहर नगर–नगर
कहां खो गया मेरा क़ाफ़ला, कहां रह गए मेरे हम सफ़र

मेरी बेकसी का न ग़म करो मगर अपना फ़ायदा सोच लो
तुम्हें जिसकीं छांव अज़ीज़ है, मैं उसी दरख़्त का हूं समर।

○○

दृश्य : ग्यारह

(रतन की मां हवेली में चिराग़ां कर रही हैं। तन्नो और जावेद उसकी मदद कर रहे हैं। हमीदा बेगम एक कोने में बैठी चिराग़ां देख रही है। जब सब तरफ़ चिरागां जल चुकते हैं ता माई दाहिनी तरफ़ पूजा करने की जगह पर बैठ जाती है। तन्नो और जावेद अपनी मां के पास आकर बैठ जाते हैं। रतन की मां पूजा करना शुरू करती है।)

तन्नोः अम्मां ये सब हुआ क्यों?

हमीदाब बेगमः क्या बेटी?

तन्नोः यही हिंदोस्तान, पाकिस्तान?

हमीदा बेगमः बेटी, मुझे क्या मालूम....

तन्नोः तो हम लोग पाकिस्तान क्यों आ गए।

हमीदा बेगमः मैं क्या जानूं बेटी?

तन्नोः अम्मां, अगर हम लोग और माई एक ही घर में रह सकते हैं तो हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमान क्यों नहीं रह सकते थे।

हमीदा बेगमः रह सकते क्या... सदियों से रहते आये थे।

तन्नोः फिर पाकिस्तान क्यों बना?

हमीदा बेगमः तुम अपने अब्बा से पूछना।

(पूजा पूरी करने के बाद माई उठती हैं और थाली में रखी मिठाई सबके आगे बढ़ाती हैं)

हमीदा बेगमः दीवाली मुबारक हो माइ।

रतन की मांः त्वानूं सबनूं वी मुबारक होवे। (कुछ ठहरकर कांपती आवाज़ में) खबरे मेरा रतन किधरी दीवाली मना ही रया होवे।

हमीदा बेगमः माई त्योहार के दन आंसू ने निकालो... अल्लाह ने चाहा तो ज़रूर दिल्ली में होगा और जल्दी तुमसे मिलेगा।

(रतन की मां अपने आंसू पोंछ लेती हैं।)

(दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनाई देती है।)

तन्नोः कौन है?

नासिरः मैं हूं नासिर का ज़मी... मैं हमीद साहब के साथ माई को दीवाली की मुबारकाद देने हाज़िर हुआ हूं।

(तन्नो और हमीदा बेगम अन्दर चले जाते हैं। मंच पर केवल माई रह जाती है)

रतन की मांः आओ... तुसी अन्दर आओ।

नासिरः आदाब अर्ज़ है माई।

हमीदः आदाब अर्ज़ है माई।

रतन की मांः जींदे रहो... लम्बी उम्र पाओ... बैठो...

नासिरः माई लम्बी उम्र की दुआ देने के साथ–साथ एक दुआ और भी दो।

रतन की मांः की दुआ पुत्तर?

नासिरः तुम्हारा किरदार भी हो हमारा...

रतन की मांः हट की मज़ाक करदा है... लै मिठाई खा...

(दोनों मिठाई खाते हैं)

रतन की मांः मैं ज़्यादा धूमधूम से दिवाली नहीं मनाई... बस ऐवें ही...

हमीदः क्यों माई धुमधाम से क्यों नहीं मनाई?

रतन की मांः' सोच्या पाकिस्तान बन गया है... पता नहीं...

नासिरः चाहे कितने ही 'आस्तां' बन जाएं... वहां रहेंगे तो हमारे तुम्हारे जैसे इंसान ही न?... और माई जहां इंसान होंगे वहां रिश्ते होंगे... जज़्बात होंगे... सरसों के खेतों की तलाश में सरदर्गा दीवाने होंगे... क्यों हमीद भाई?

हमीदः अब मैं आप जैसा शायर तो हूं नहीं हां अगर आज माई ने दीवाली न मनाई होती तो लगता कि हमारे वजूद का एक टुकड़ा कट गया है।

रतन की मांः तुसी लोकों दे सहारे मैं इत्थे हां पुत्तर हमीद।
हमीदः माई हम आपके सहारे यहां हैं... गुज़रे हुए वक़्त की जो डोर उससे छूटी जा रही है न? उसे हम आपके हवाले से थामे हुए हैं।
(सिकंदर मिर्ज़ा अंदर आते हैं)
सिकंदर मिर्ज़ाः सलामअलैकुम... माई आदाब।...
रतन की मांः जींदे रहो।
हमीद और नासिरः वालेकुम सलाम।
सिकंदर मिर्ज़ाः वाह खूब मुलाकात हुई।
नासिरः बिछड़ गए थे जो तूफ़ां की रात में 'नासिर'
सुना है उनमें से कुछ आ मिले किनारे पर।
सिकंदर मिज़ाः। काश हम भी शायर होते!
नासिरः आप शायर हैं... माई शायर हैं... और
रतन की मांः (बात काटकर) लै पुत्तर मिठाई खा...
(सिकंदर मिर्ज़ा मिठाई खाते हैं।
बाहर से ज़ोर–ज़ोर दरवाज़े की कुंडी बजाए जाने की आवाज़ आती है और कोई गुस्से में चिल्लाता है।)
आवाज़ः सिकंदर मिर्ज़ा साहब... सिकंदर मिर्ज़ा....
सिकंदर मिर्ज़ाः कौन साहब हैं अंदर आइए।
(पहलवान और उसके चमचे धड्धड़ाते हुए अंदर आ जाते हैं। माई उन्हें देखकर अंदर चली जाती है।)
पहलवानः (अनवार से) देखा तुमने ये क्या हो रिया है... खुदा की कसम खून खौल रिया है।
नासिरः क्या बात है पहलवान साहब... बहुत गुस्से में नज़र आ रहे हैं।
पहलवानः नज़र नहीं आंदा, हूं गुस्से में...
नासिरः अमां तो पाकिस्तान के वज़ीरे आज़म को एक खत लिख मारिए।
पहलवानः क्यों मज़ाक करते हैं नासिर साहब।
नासिरः मज़ाक कहां भाई... हम शायर तो जब बहुत गुस्से में आते हैं, यही करते हैं।
पहलवानः कसम खुदा दी ये तो अंधेर है।
नासिरः भाई हुआ क्या?

पहलवानः अरे जनाब उस कम्बख्त ने हवेली में चिरागां कीता. पूजा कीती, दीवाली मनाई।
नासिरः अच्छा... अच्छा आप माई के बारे में कह रहे हैं?
पहलवानः तुसी उस हिंदू काफिरा को माई कहते हो?
नासिरः जनाब मैं तो दिन को दिन रात को रात ही कहूंगा... आप जिसको जो जी चाहे कहें।
(पहलवान खूंखार नज़रों से घूरता है।)
पहलवानः (चमचों से) अब तो खामोश नहीं बैठा जा सकदा... मेरी समझ में नहीं आता मिर्ज़ा साहब ने उसनू चिरागां करन दी इजाजत कैसे दी दित्ती?
सिकंदर मिर्ज़ाः इजाजत? आप भी कैसी बातें कर रहे हैं पहलवान... माई... हवेली उसी की है... उसने मुझे रहने की इजाजत दे रखी है।
पहलवानः उसका अब पाकिस्तान में कुछ नहीं है। मैं ता हैरान हां कि इनता गैर–इस्लामी काम होया, ते लोगों के कान ते हूं तक नहीं रेंगी।
नासिरः भई आप माई के दीवाली मनाने को ग़ैर इस्लामी जो कह रहे हैं, वो अपने हिसाब से कह रहे हैं। वो हिंदू हैं उन्हें पूरा हक है अपने मजहब पर चलने का।
पहलवानः त्वाडे वरगे सब हो जाएं तो इस्लामी हुकूमत की ऐसी तैसी हो जाए.... जनाब अज ओ पूजा कर रही है... कल मंदिर बनाएगी, परसों लोगां नू हिंदू मजहब दी तालीम देवेगी।
नासिरः तो?
पहलवानः मतलब कुछ हुआ ही नहीं।
नासिरः आपके कहने का मतलब है कि जैसे ही उसने हिंदू मजहब की तालीम देना शुरू की वैसे ही लोग पटापट हिंदू होने लगेंगे... माफ कीजिएगा अगर ऐसा हो सकता है तो हो ही जाने दीजिए।
पहलवानः इस हवेली विच दीवाली मनाई गयी है कि नहीं?
सिकंदर मिज़ाः जी हां मनाई गयी है।
पहलवानः पूजा वी हुई?
सिकंदर मिर्जाः जी हां– लेकिन बात क्या है।

पहलवानः ए सब इसी वजह तों हुआ कि तुसी उस काफिरा नूं पनाह दे रखी है।

सिकंदर मिर्ज़ाः जनाब ज़रा जबा संभल कर बातचीत कीजिए... एक तो मैं आपके किसी सवाल का जवाब देने के लिए पाबंद नहीं हूं, दूसरे आपको मुझसे सवाल करने का हक क्या है।

पहलवानः तुसी गैर इस्लामी काम कराते हो और हम बैठे देखते रहे, ये नहीं हो सकदा।

अनवारः बिल्कुल नहीं हो सकता।

पहलवानः और हुण असी चुप वी नहीं रह सकदे।

नासिरः ख़ैर, चुप तो आप कभी नहीं रहे।

(अंतराल गायन)

साज हस्ती की सदा ग़ौर से सुन
क्यों है ये शेर बपा ग़ौर से सुने

चढ़ते सूरज की अदा को पहचान
डूबते दिन की निदा ग़ौर से सुन

इसी मंज़िल में हैं सब हिज्रो–विसाल
रहरवे आब्ला पा ग़ौर से सुन

इसी गोशे में है सब दैरो हरम
दिल सनम है के खुदा ग़ौर से सुन

काबा सुनसान है क्यों ए वायज़
हाथ कानों से उठा ग़ौर से सुन

○○

दृश्य : बारह

(मौलाना मस्जिद में बैठे तस्बीह पढ़ रहे थे। पहलवान बहुत गुस्से में अंदर आता है। उसके पीछे अनवान और सिराज हैं। उनके भी पीछे नासिर काज़मी, हमीद हुसैन, सिकंदर मिर्ज़ा आते हैं।

पहलवानः (गुस्से में चीख़ते हुए) देखो मौलाना इत्थे की हो रया है?

(मौलाना कुछ नहीं बोलते। कुछ क्षण खामोश रहते हैं। पहलवान गुस्से में भरा हुआ खड़ा है।)

मौलानाः (ठंडी आवाज़ में) पुत्तर गुस्सा अकल दा दुश्मन है... जो बात तूने कहनी है... आराम नाल कह दे।

पहलवानः (गुस्से में) हुण मैं की दस्सां... सिकंदर मिर्ज़ा साहब दे घर पूजा होई। बुतपरस्ती होई है... ये कुफ़्र नहीं तो की है।

मौलवीः (सिकंदर मिर्ज़ा से) बात क्या है मिर्ज़ा साहब?

पहलवानः अजी ये बतायेंगे... मैं बताता हूं।

मौलवीः भाई बात तो इनके घर की है न? ये नहीं बतायेंगे और आप बतायेंगे, ये कैसे हो सकता।

पहलवानः जवाब ये छुपायेंगे... ये पर्दा पाणगे... और मैं हक़ीक़त को खोलकर सामने रख दूंगा।

सिकंदर मिर्ज़ाः ठीक है, आप हक़ीक़त बयान कीजिए... मैं चुप हूं।

पहलवानः हुजूर... इनके घर में बुतपरस्ती होंदी है, कल खुलेआम पूजा होई है... ओ सब किया गया, उसे क्या कहते हैं... हवन वग़ैरह.. . और फिर चिराग़ां कीता गया... क्योंकि कल दीवाली थी। और मिठाई बनाकर तक़सीम की गयी।

मौलानाः अब त्वाडी इजाजत है, है मैं मिर्ज़ा साहब से भी पूछूं। (पहलवान कुछ नहीं बोलता।)

मौलानाः मिर्ज़ा साहब क्या मामला है।

सिकंदर मिर्ज़ाः जनाब आपको मालूम ही है कि मेरी हवेली की ऊपरी मंज़िल में माई रहती हैं। माई उस शख़्स रतन लाल की मां है जिसकी हवेली थी। उसने मुझसे कहा कि मेरा त्यौहार आ रहा है मुझे मनाने की इजाज़त दे दो... भला मैं किसी को उसका त्यौहार मनाने से क्यों रोकने लगा... मैंने उससे कहा... ज़रूर मनाइए... उस बेचारी ने त्योहार मनाया... क़िस्सा दरअसल यही है।

पहलवानः घंटियां दी आवाजां मैंने अपने कानों से सुनी हैं...

मौलानाः ठहरो भाई... तो बात दरअसल ये है कि हिन्दू बुढ़िया ने इबादत की और...

पहलवानः इबादत? तुसी उसदी पूजाघंटियां वग़ैरा बजाण नूं इबादत कह रहे हो?

मौलानाः (हंसकर) तो उसके लिए कोई मुनासिब लफ़्ज़ आप ही बता दें।

पहलवानः पूजा।

मौलानाः जी हां, पूजा का मतलब ही इबादत है... तो उसने इबादत की। (कुछ क्षण ख़ामोशी।)

मौलानाः तो क्या हुआ... सबको अपनी इबादत करने और अपने ख़ुदाओं को याद करने का हक़ है।

पहलवानः ये कैसे मौलाना साहब?

मौलानाः भई हदीस शरीफ़ है कि तुम दूसरों के ख़ुदाओं को बुरा न कहो, ताकि वह तुम्हारे खुदा को बुरा न कहें, तुम दूसरों के मज़हब को बुरा न कहो, ताकि वह तुम्हारे मज़हब को बुरा न कहें। (पहलवान का मुंह लटक जाता है। फिर अचानक उत्साह में आ जता है।)

पहलवानः फ़र्ज कीजिए कल बुढ़िया यहां मंदिर बना ले?

मौलानाः मंदिरों को बनने न देना... या मंदिरों को तोड़ना इस्लाम नहीं है पुत्तर।

पहलवानः (गुस्से में) अच्छा तां इस्लाम की है?

मौलानाः अपने आपको अल्लाह के हवाले कर देना इस्लाम है।

पहलवानः ओ तां सब ठीक है मौलवी साहब... लेकिन... ओ हिंदू औरत....

सिकंदर मिर्ज़ाः (बात काट करी) हुजूर वो हिंदू और बेवा है।

मौलानाः बेवा का दर्जा तो हमारे मज़हब में बहुत बुलंद है... हदीस है कि बेवा और ग़रीब के लिए दौड़–धूप करने वाला दिन भर रोज़ा और रात भर नमाज़ पढ़ने वाले के बराबर है। (पहलवान का मुंह भी लटक जाता है, लेकिन फिर सिर उठाता है।)

पहलवानः बेवा चाहे हिंदू हो चाहे मुसलमान?

मौलानाः पुत्तर, इस्लाम ने बहुत से हक़ ऐसे दिये हैं जो तमाम इंसानों के लिए हैं... उसमें मज़हब, रंग, नस्ल और ज़ात का कोई फ़र्क़ नहीं किया गया।

सिकंदर मिर्ज़ाः मौलाना वो ग़मज़दा, परेशान हाल है, हम सब की इस क़दर मदद करती है कि कहना मुहाल है।

मौलवीः पुत्तर, अल्लाह उस शख़्स से बहुत ख़ुश होता है जो किसी ग़मज़दा के काम आये या किसी मज़लूम की मदद करे।

नासिरः है यही ऐने वफ़ा दिल न किसी का दुखा
अपने भले के लिए सबका भला चाहिए।

मौलानाः बेशक।

सिकंदर मिर्ज़ांः हुजूर माई में ख़िदमत का जज़्बा बड़ा है।

मौलानाः पुत्तर, ख़िदमत से तो खुदा खुश होता है... ख़िदमत तो इंसान का ज़वेर है... ख़िदमत के बग़ैर तो इंसान जानवर के बराबर है... मैंनूं बड़ी खुशी हुई ए जान के...

पहलवानः (गुस्से में) मुल्ला... ए सब तां ठीक सी... पर ये बताओ... तुसी हिंदू औरत को हम मुसलमान बंदों पर तरजीह दे रहे हो?

मौलानाः (हंसकर) पुत्तर हम तो उसके (आसमान की तरफ उंगली उठाकर) हुक्म दे बंदे हैं... कुरान पाक में लिखा है...

पहलवानः (बहुत गुस्से में उत्तेजित होकर) बस जी... बस... इतना इस्लाम हम भी जानदे हां कि मुसलमान हिंदू से अच्छा होंदा है... जो ऐसा नहीं मानता वो मुसलमानों के दुशमन है... और मुल्ला... असी तो त्वाडी सात पुश्तों को जादने हां... ये बाहर से आने वाले क्या जाणे... तुम्हारा बाप... दूसरों की बकरियां चराया करांदा सी... बकरियां... कपड़े लोग दे देंदें सी तो पहनता था... और त्वाहनु मोहल्ले वालों ने चंदा करके पढ़वाया सी...
(पहलवान की उत्तेजना बढ़ती जाती है और सभी लोग उसे आश्चर्य से देखते हैं। पहलवान धड़ाधड़ बोलता जाता है।)
त्वाडे बाप के घर के घर दो–दो दिन चूल्हा नहीं जलदा सी...

मौलानाः अल्लाह तुझे अक्ले सलीम अता फ़रमाये... याकूब...

(अंतराल गायन)

तू असीरे बज़्म है हम सुखन तुझे ज़ौके नाल–ए–नै नहीं
तेरा दिल गुदाज़ हो किस तरह ये तेरे मिज़ाज की लै नहीं

तेरा हर कमाल है ज़ाहिरी, तेरा हर ख़्याल है सरसरी
कोई दिल की बात करूं तो क्या, तेरे दिल में आग तो है नहीं

जिसे सुन के रूह महक उठे, जिसे पी के दर्द चहक उठे
तेरे साज में वो सदा नहीं, तेरे मैकदे में वो मैं नहीं

यही शेर है मेरे सल्तनत, इसी फल में है मुझे आफ़ियत
मेरे कास–ए–शबो रोज़ में, तेरे काम को कोई शय नहीं।

○○

दृश्य : तेरह

(अलीम के चाय का ढाबा है। रात का वक़्त है। वहां हमीद अलीमा के साथ बैठे हैं। अलीमा बंगीठी सुलगाता है।)

अलीमाः (धुएं से परेशान होकर) लगता है साले सूखे कोयले भी सब उधर ही चले गए...

हमीदः वाह अलीमा वाह तुमने कोयलों तक को तक़सीम कर दिया।

अलीमाः अब ज़माना ही ऐसा आ गया है हमीद मियां... वो नासिर साहब का मिसरा है न, 'फूल ख़ुशबू से जुदा है अब के'

हमीदः अरे हां यक बताओ नासिर साहब को देखा? आज काफ़ी हाउस में भी नहीं आए।

अलीमः मियां नासिर साहब दिन में मुझे दिखाई नहीं पड़ते... हां अब उनके आने का वक़्त है।
(नासिर आते दिखाई देते हैं)

अलीमाः देखिए नासरि साहब आ रहे हैं...

हमीदः अरे जनाब सलामअलैकुम.... भाई आज दिन भर आप कहां रहे?

नासिरः (संजीदगी से) पत्तों से मुलाक़ात करने चला गया था।

हमीदः (हैरत से) पत्तों से।

नासिरः जी हां... पत्तों से मुलाक़ात।

हमीदः पत्तों से मुलाक़ात कैसे होती है नासिर साहब?

नासिरः ...आजकल पतझड़ है न... पेड़ों के पीले पत्तों को झड़ता देखता हूं तो उदास हो जाता हूं... उतनी और उस तरह की उदासी कभी नहीं तारी होती मुझपर। इसलिए पतझड़ में मैं पत्तों के ग़म में शामिल होने चला जाता हूं।

हिदायतः मुझे भी एक चीज़ की तलाश है... मैं जब से लाहौर आया हूं... ढूंढ रहा हूं... आज तक नहीं मिली।

नासिरः क्या चीज़?

हमीदः भई हमारी तरफ़ एक चिड़िया हुआ करती थी... श्यामा चिड़िया.. . वो इधर दिखाई नहीं देती।

नासिरः शाम चिड़ी।

हिदायतः हां...हां।

नासिरः शाम चिड़ी मैं आपको दिखाऊंगा...मैंने उसे यहां तलाश किया है... उसकी तलाश मेरे लिए तरक़्क़ी पसंद अदब और इस्लामी अदब से बड़ा मसला था... जब मैं यहां शुरू–शुरू में आया तो उन सब चीज़ों की तलाश थी जिन्हें दिलो–जान से चाहता था... सरसों के खेतों से भी मुझे इश्क़ है... तो भाई मैंने लाहौर आते ही कई लोगों से पूछा था कि क्या सरसों यहां भी वैसी ही फूलती है जैसी हिन्दोस्तान में फूलती थी। मैंने ये भी पूछा था कि यहां सावन की झड़ी लगती है... बरसात के दिनों की शामें क्या मोर की झंकार से गूंजती हैं? बसंत में आसमान का रंग कैसा होता है?

हमीद : भई तुम शायरों की बातें हम लोग क्या समझेंगे... हां सुनने में अच्छी बहुत लगती हैं।

नासिरः दरअसल एक–एक पत्ती मेरे लिए शहर है, फूल भी शहर है और सबसे बड़ा शहर है दिल। उसेस बड़ा कोई शहर क्या होगा... बाक़ी जो शहर हैं सब उसकी गलियां हैं।

हमीद : मैं मानता हूं नासिर, शायर और दूसरे लोगों में बड़ा फ़र्क़ है...

नासिरः (बात काटकर) नहीं–नहीं ये बात नहीं है, हर जगह, ज़िंदगी के हर शोबे में शायर हैं... ये ज़रूरी नहीं कि वो शायरी कर रहे हों... वो तख़लीक़ी लोग हैं। छोटे–मोटे मज़दूर, दफ़्तरों के क्लर्क– अपने काम से काम रखने वाले ईमानदार लोग... ट्रेन के इंजन का ड्राइवर जो इतने हज़ार लोगों को लाहौर से करांची और करांची से लाहौर ले जाता है। मुझे ये आदमी बहुत पसंद है... और एक वो आदमी जो रेलवे के फाटक बंद करता है। आपको पता है अगर वो फाटक खोल दे, जब गाड़ी आ रही हो तो क्या क़यामत आये? बस शयर का भी यही काम है कि किस वक़्त फाटक बंद करना है, किस वक़्त खोलना है।

(हमीद कुछ फ़ासले पर जाती रतन की मां को देखता है।)

हमीद : अरे ये इस वक़्त यहां कैसे?

नासिरः ये तो माई हैं।

(दोनों माई के पास पहुंचते हैं।)

नासिरः नमस्ते माई... आप?

रतन की मांः जीदें रहो... जींदे रहो।

नासिरः खैयित माई? इस वक़्त ये सामान लिए आप कहां जा रही हैं।

रतन की मांः बेटा मैं दिल्ली जाणा चाहंदी हां।

नासिरः (उछल पड़ते हैं) नहीं माई, नहीं... ये कैसे हो सकता है..ये नामुमकिन है।

रतन की मांः बस पुत्तर बहुत रह लई लाहौरच... हुण लगदा है इत्थे दा दाणा पाणी नहीं रया।

हमीद : लेकिन क्यों माई?

नासिरः क्या कोई तकलीफ़ है।

रतन की मांः पुत्तर तकलीफ़ उसनूं होंदी है जो तकलीफ़ नूं तकलीफ़ समझदा है... मैन्नू कोई तकलीफ़ नहीं है।

नासिरः तब क्यों जाना चाहती हैं? आपको पूरा मोहल्ला माई कहता है, लोग आपके रास्ते में आंखें बिछाते हैं, हम सबको आप पर नाज़ है...

रतन की मांः अरे सब त्वाडे प्यार दा सदका है।

नासिरः तो हमारा प्यार छोड़ कर आप क्यों जाना चाहती हैं।

रतन की मांः पुत्सा, तुस्सी लोकां ने मैन्नू वो प्यार और इज़्ज़त देती है जो अपणे भी नहीं देंदे।

नासिरः माई जो जिसका अहेल होता है, वो उसे मिलता है, आपने हमें इतना दिया है कि हम बता ही नहीं सकते।

रतन की मांः प्यार ही मैन्नू लाहौर छड्डन ते मजबूर कर रया है।

हमीद : बात है क्या माई।

रतन की मांः मेरा लाहौर च रहणा कुछ लोगां नूं पसंद नहीं है, मिर्ज़ा साहब नूं धमकियां दित्ती जा रइयां ने कि जो मैन्नू अपणे घर तो कड्ड देण... राह जांदें उनात फिकरे कसे जांदे ने, उन्हों दी कुड़ी तन्नो और मुंडे जावेद दा लोग नाक च दम कित्ते होए ने... लेकिन मिर्ज़ा साहब किस वी सूरत च नई चाहदें कि मैं जांवा।

हमीद : तब आप क्यों जाना चाहती हैं माई।

रतन की मांः मैं इत्थे रवांगी ते मिर्ज़ा साहब...

नासिरः माई मिर्ज़ा साहब का कोई बाल बांका नहीं कर सकता... हम सब उनके साथ हैं।

रतन की मांः पुत्तर, मन्नू त्वाडे सबते माण है, लेकिन त्वानूं किसी झमेले च फसांण तो अच्छा है कि मैं खुद ही चली जावां... तुसी मैनू दिल्ली जाण दवो... मेरे कोल रुपया पैसा है, ज़ेवर हैं, मैं उत्थे दो वक़्तदी रोटी खा लवंगी ते रइ जवांगी।

नासिरः (सख़्त लहजे में) ये हरग़िज़ नहीं हो सकता... ये नामुमकिन है... कभी बेटे भी अपनी मां को पड़ा रहने के लिए छोड़ते हैं?

रतन की मांः मेरा कहणा मन्नो पुत्तर, मैं त्वानूं दुआएं दवांगी।

नासिरः (दर्दनाक लहजे में) माई लाहौर छोड़कर मत जाओ... तुम्हें लाहौर कहीं और न मिलेगा... उसी तरह जैसे मुझे अम्बाला कहीं और नहीं मिला... हिदायत भाई को लखनऊ कहीं नहीं मिला... ज़िन्दों को मुर्दा न बनाओ...

(रतन की मां आंख से आंसू पोंछने लगती है।)

नासिरः तुम हमारी मां हो... हमसे जो कहोगी करेंगे... लेकिन ये मत कहो कि तुम हमारी मां नहीं रहना चाहतीं...

रतन की मांः फिर मैं की करां, दस्स।

नासिरः तुम वापिस चलो, दो—चार बदमाश कुछ नहीं कर सकते।

रतन की मांः पुत्तर, मैं तां अपनी अखीं ओ सब देख्या है, उस वक्त वी सब एही कह दें सन कि दो चार बदमाश कुछ नहीं कर सकदे... ओ कहदें हन पूरे लाहौर च मैं ही कल्ली हिंदू हां... मेरे एत्थों जाणतों ए शहर पाक हो जावेगा।

नासिरः तुम अगर यहां न रहीं तो हम सब नंगे हो जायेंगे माई... नंगा आदमी नंगा होता है, न हिंदू होता है और न मुसलमान...

(हिदायत माई का सूटकेस उठा लेते हैं।)

(अंतराल गायन)

फूल खुशबू से जुदा है अब के
यारों ये कैसी हवा है अब के

दोस्त बिछड़े हैं कई बार मगर
ये नया दाग़ खिला है अब के

पत्तियां रोती हैं सर पीटती हैं
क़त्ले गुल आम हुआ है अब क

क्या सुनें शोरे बहारां 'नासिर'
हमने कुछ और सुना है अब के

OO

दृश्य : चौदह

(रतन की मां बैठी है। उसके पास वह बक्सा रखा है। जो पिछले दृश्य में था। सामने हमीदा बेगम, तन्नो और जावेद बैठे हैं। मिर्ज़ा साहब कुछ फ़ासले पर बैठे हुक्का पी रहे हैं।)

हमीदा बेगमः हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं... माई ये ख़्याल आपके दिमाग़ में आया कैसे? नासिर साहब वग़ैरा ने न देख लिया तो ग़ज़ब ही हो जाता...

तन्नोः क्या हम लोगों से कोई ग़लती हो गयी माई।

रतन की मांः बेटी तू वी कमाल कर दी है, अपणे बच्चयां तो वी भला कोई गलती होंदी है... मैं तेरी दादी हां अगर तेरे कोलों कोई गलती होंदी तो मैं तन्नो डांट दी... दो–चार चपेड़ा मार सकदी सी। मन्नू कोण रोक सकदा सी।

सिकंदर मिर्ज़ाः बेशक ये आपकी पोती है आपका इस पर पूरा हक़ है। लेकिन ये तो मैं सोच भी नहीं सकता कि आप अकेली दिल्ली के लिए निकल खड़ी होंगी... वो भी हम सबको बताये बग़ैर... हमसे क्यों नहीं बताया आपने?

रतन की मांः देख पुत्तर, मैन्नू सब पता है... ए गल ज़रूर है कि तुस्सी लोकां ने मैन्नू कुज नई दसया, बल्कि मेरे तों छिपाया है, लेकिन ए हक़ीक़त है कि कुछ लोक मेरी वजहों तोहानू सारेयां नूं परेशान कर रहे ने।

जावेदः अरे माई वैसी धमकियां तो जाने कितने देते रहते हैं।

रतन की मांः पुत्तर मेरी वजह नाल तुस्सी लोकां नूं कुछ हो गया तां मैं फिर किधरी दी नां रई... एही वजह है कि मैं जाणा चाहदी हां।

सिकंदर मिर्ज़ाः माई जब हमारा कोई ठिकाना नहीं था, जब हम परेशानी और तकलीफ़ में थे, जब हम ये जानते थे कि लाहौर किस चिड़िया का नाम है तब आपने हमें बच्चों की तरह रखा, हम पर हर तरह का एहसान किया और आज जब हम इस शहर में जम चुके हैं तो क्या हम उन एहसानों को भूल जाएं?

रतन की मांः पुत्तर तू ठीक कहदां है, लेकिन मेरा वी ते कोई फ़र्ज़ है।

सिकंदर मिर्ज़ाः आपका फ़र्ज़ है कि आप अपने बेटे, बहू, पोते, पोती के साथ रहें...बस।

रतन की मांः देख पुत्तर मैंनू की फ़र्क पैदा है? साठ तों ऊपर दी हो गयीं हां... आज मेरी तां कल मरी...इत्थे लाहौर च मरां या दिल्ली च मरां... मैन्नू हुण मरना ही मरना है।

तन्नोः माई पहले तो आप ये मरने–वरने की बातें न करें... मरें आपके दुश्मन।

(तन्नो माई के गले में बाहें डाल देती है। माई उसे प्यार करती है।)

सिकंदर मिर्ज़ाः माई आपको हमसे आज एक वायदा करना पड़ेगा... बड़ा पक्का वायदा... (जावेद से) जावेद बेटे पहले तो बक्सा ऊपर ले जाओ और माई के कमरे में रख आओ।

जावेदः जी अब्बा।

(जावेद बक्सा लेकर चला जाता है।)

सिकंदर मिर्ज़ाः क़सम खुदा की आप चली जातीं तो हम पर क्या बीतती पता है आपको... हम शर्म से ज़मीन में गड़ जाते... हम किसी से आंखें मिलाने लायक़ न रह जाते... अरे हद है... अब आप कहीं नहीं जायेंगी।

(रतन की मां चुप हो जाती है और सिर झुका लेती है।)

हमीदा बेगमः बिल्कुल आप कहीं नहीं जाएंगी।

(जावेद लौटकर आता है और बैठ जाता है।)

तन्नोः दादी बोलो न.. क्यों हम लोगों को सता रही हो? कह दो कि नहीं जाओगी।

(रतन की मां चुप रहती है। जावेद उठकर माई के पास आता है। माई के दोनों कंधे पकड़ता है। झुककर उसकी आंखों में देखता है और बहुत फ़र्मली कहता है)

जावेदः दादी, तुम्हें मेरी क़सम है, अगर तुम कहीं गयीं।

(रतन की मां फूट–फूट कर रोने लगती है और रोते–राते कहती है)

रतन की मांः मैं किधरी नहीं जावांगी... किधरे नहीं... त्वाडे लोकां चों ही उट्ठांगी तां सिद्धे रब के कौल जावांगी, बस...

(अंतराल गायन)

नित नयी सोच में लगे रहना
हमें हर हाल में ग़ज़ल कहना

घर के आंगन में आधी–आधी रात

मिल के बाहम कहानियां कहना

शहर वालों से छुप के पिछली रात
चांद में बैठ कर ग़ज़ल कहना

क्या ख़बर कब कोई किरन फूटे
जागने वालों जागते रहना

○○

दृश्य : पन्द्रह

(आधी रात बीत चुकी है। अलीम के होटल में सन्नाटा है। वह एक बेंच पर पड़ा सो रहा है। नासिर और हमीद आते हैं)

नासिरः (हमीद से) लगता है ये तो सो गया... (ज़ोर से) अली... अरे भई सो गए क्या?

अलीमः अभी–अभी आंख लगी थी कि... नासिर साहब... आइए...

नासिरः सो जाओ... लेकिन यार चाय पीनी थी..

हमीदः भट्टी तो सुलग रही है।

नासिरः तो ठीक है यार तुम सो ए रहो, हम लोग चाय बना लेंगे। क्यों हमीद।

हमीदः नासिर साहब बढ़िया चाय पिलाऊंगा।

नासिरः अमां अलीम एक कप तुम भी पी लेना।

अलीमः नींद उड़ जाएगी नासिर साहब।

नासिरः अमां नींद भी कोई परी है जो उड़ जाएगी... चाय पीकर सो जाना... और जा सोने का मूड न बने तो हमारे साथ चलना... लाहौर से मुलाक़ात तो रात में ही होती है।

हमीदः (हमीद पानी भट्टी पर रखता है) कड़क चाय पियेंगे नासिर साहब।

नासिरः भई हम तो कड़क के ही क़ायल हैं– कड़क चाय, चाय, कड़क आदमी, कड़क रात, कड़क शायरी...
(नासिर बेंच पर बैठ जाते हैं। हमीद चाय बनाने लगता है। अलीम भी उठकर बैठ जाता है।)

हमीदः कोई कड़क शेर सुनाइए।

नासिरः सुनो।
ग़म जिसकी मज़दूरी हो।

हमीदः (दोहराता हूं) गम़ जिसकी मज़दूरी हो।

नासिरः जल्द गिरेगी वो दीवार।

हमीदः वाह नासिर साहब वाह।
(अलीम दोनों के सामने चाय रखता है और खुद भी चाय लेकर बैठ जाता है।)

अलीमः नासिर साहब, पहलवान आपको बहुत पूछता रहता है, मिला?

नासिरः जिनमें बूए वफ़ा नहीं नासिर
ऐसे लोगों से हम नहीं मिलते।

हमीदः वाह साहब वाह... जिनमें बूए वफ़ा नहीं 'नासिर'।

नासिरः ऐसे लोगें से हम नहीं मिलते।

हमीदः आजकल लिख रहे हैं 'नासिर' साहब।

नासिरः भाई लिखने के लिए ही तो हम ज़िन्दा हैं, वरना मौत क्या बुरी है?

(जावेद की घबराई हुई आवाज़ आती है। वह चीख़ता हुआ दाख़िल होता है)

जावेदः अलीम मियां... अलीम मियां...

(जावेद परेशान लग रहा है। उसे देखकर तीनों खड़े हो जाते हैं)

नासिरः क्या हुआ जावदे?

जावेदः माई का इंतिक़ाल हो गया।

नासिरः अरे, कैसे... कब?

जावेदः शाम को सीने में दर्द बता रही थीं...मैं डॉ0 फ़ारूक़ को लेके आया था, उन्होंने इंजेक्शन और दवाएं दीं... अचानक कभी दर्द बहुत बढ़ गया और...

नासिरः हमीद मियां ज़रा हिदायत साहब को ख़बर कर आओ... और करीम मियां से भी कह देना... जावेद तुम किधर जा रहे हो।

जावेदः मैं तो अलीम को जगाने आया था... अब्बा की तो अजीब कैफ़ियत है...

अलीमः मरहूमा का यहां कोई रिश्तेदार भी तो नहीं है।

नासिरः अरे भाई हम सब उनके कौन हैं? रिश्तेदार ही हैं। अलीम तुम कब्बन साहब और तक़ी मियां को बुला लाओ...

(अलीम जाता है। उसी वक़्त हिदायत साहब, करीम मियां आते हैं।)

हिदायतः वतन में कैसी बेवतनी की मौत है।

नासिरः हिदायत साहब हम सब उनके हैं... सब हो जाएगा।

करीमः भाई लेकिन करोगे क्या।

नासिरः क्या मतलब।

करीमः भाई रामू का बाग़ जो शहर का पुराना शमशान था, वो अब रहा नहीं, वहां मकानात बन गए हैं।

हिदायतः ये तो बड़ी मुश्किल हो गयी।

(अलीम,कब्बन और तक़ी आते हैं।)

करीमः और शहर में कोई दूसरा हिंदू भी नहीं है जो कोई रास्ता बताता।

हिदायतः अरे साहब हम लोगों को कुछ मालूम भी तो नहीं कि हिन्दुओं में क्या होता है?

(सिकंदर मिर्ज़ा आते हैं। उनका चेहरा लाल है और बहुत ग़मज़दा लग रहे हैं।)

करीमः भई असली मुश्कल तो शमशान की है। जब शमशान ही नहीं तो आख़िरी रस्म कैसे अदा होगी।

कब्बनः हां तो बड़ी मुश्किल है।

तक़ीः मिर्ज़ा साहब आप कुछ तजवीज़ कीजिए।

सिकंदर मिर्ज़ाः मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है... जो आप लोगों की राय हो वही किया जाए।

हिदायतः भाई हम तो यही कर सकते हैं बड़ी इज़्ज़त और बड़े एहतेराम के साथ मरहूमा को दफ़ कर दें... इससे ज़्यादा न हम कुछ कर सकते हैं और न हमारे इख़्तियार में है।

नासिरः लेकिन माई हिन्दू थीं और उनको...

हिदायतः नासिर भाई हम सब जानते हैं... वो हिन्दू थीं लेकिन करें क्या? जब शमशान ही नहीं है तो क्या किया जा सकता है? आप ही बताइए?

(नासिर चुप हो जाते हैं।)

तक़ीः हिदायत साहब की राय मुनासिब है, मेरा भी यही ख़्याल है कि मोहतरमा की लाश को इज़्ज़त–ओ–ऐहतेराम के साथ दफ़न किया जाए... इनके वारिसान का तो पता है नहीं... वरना उनको बुलवाया जाता या राय ली जाती।

सिकंदर मिर्ज़ाः जो आप लोग ठीक समझें।

कब्बनः अलीम मियां अप मस्जिद चले जाइए और खटोला लेते आइए। कफ़न का कपड़ा... हाजी साहब की दुकान बंद हो तो पीछे गली में घर है, वो अंदर से ही कपड़ा निकाल देंगे।

(अलीम और जावेद चले जाते हैं।)

तक़ीः बड़ी ख़ूबियों की मालिक थीं मरहूमा... मेरे बच्चे को जब चेचक निकली थी तो रात–रात भी उसके सिरहाने बैठी रहा करती थीं।

हिदायतः अरे भाई उनके जैसा मददगार और ख़िदमती मैंने तो आज तक देखा नहीं... ऐसी नेकदिल औरत– कमाल है साहब।

कब्बनः जब से उनके मरने की ख़बर मेरी बीबी ने सुनी है रोए जा रही है– अब कुछ तो ऐसी उनसियत होगी ही।

नासिरः ज़िंदगी जिनके तसव्वुर से जिला पाती थी।
हाय क्या लोग थे जो दामे अजल में आए।

(अलीम आकर कहता है।)

कब्बनः क्या कह रहे थे मौलवी साहब।

अलीमः कह रहे थे, अभी कुछ मत करना मैं ख़ुद आता हूं।

तक़ीः मरहूमा का एक–एक लम्हा दूसरों के लिए ही होता था... कभी अपने लिए कुछ न मांगा...

(पहलवान आता है)

पहलवानः भई उना नू क्या ज़रूरत थी किसी से कुछ मांगने की... बड़ी दौलत थी उनके पास।

(सब पहलवान को घूरकर देखते हैं। कोई कुछ जवाब नहीं देता, उसी वक़्त मौलवी साहब आते हैं। जो लोग बैठे हैं वो खड़े हो जाते हैं।)

मौलानाः सलामुअलैकु।

सबः वालेकुमस्सलाम।

मौलानाः रतन की वालेदा का इंतिक़ाल हो गया है।

हिदायतः जी हां।

मौलानाः आप लोगों ने क्या तय किया है?

हिदायतः हुज़ूर पुराना शमशान रामू का बाग़ तो रहा नहीं, और हम लोगों को हिन्दुओं का तरीक़ा मालूम नहीं, शहर में कोई दूसरा हिन्दू भी नहीं है जिससे कुछ पूछा जा सके... अब ऐसी हालत में हमें वही मुनासिब लगा कि मरहूमा को बड़ी इज़्ज़त और ऐहतेराम के साथ सुपुर्दे ख़ाक कर दिया जाए।

मौलानाः क्या मरने से पहले मरहूमा मुसलमान हो गयी थीं।

सिकंदर मिर्ज़ाः जी नहीं।

मौलानाः तब आप उनको दफ़न कैसे कर सकते हैं।

पहलवानः (गुस्से में) तो और क्या करेंगे।

मौलानाः ये मैं आप लोगों से पूछ रहा हूं।

सिकंदर मिर्ज़ाः जनाब हमारी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।

मौलानाः देखिए वो नेक औरत मर चुकी है। मरते वक़्त वो हिन्दू थी। उसके आख़िरी रसूम उसी तरह होने चाहिए।

पहलवानः (चिढ़कर) वाह ये अच्छी तालीम दे रहे हैं आप।

मौलानाः (उसे जवाब नहीं देते) देखिए वो मर चुकी है। उसकी मय्यत के साथ आप लोग जो सुलूक चाहें कर सकते हैं... उसे चाहे दफ़ना दीजिए चाहे टुकड़े–टुकड़े कर डालिए, चाहे गर्क़े आबे कर दीजिए... इसका अब उस पर कोई असर नहीं पड़ेगा... उसके ईमान पर कोई आंच नहीं आएगी... लेकिन आप उसके साथ क्या करते हैं, इससे आपके ईमान पर ज़रूर फ़र्क़ पड़ सकता है।

(सब चुप हो जाते हैं।)

मुर्दा वो चाहे किसी भी मज़हब का हो, उसका एहतेराम फ़र्ज़ है... और हम जब किसी की एहतेराम करते हैं तो उसके यक़ीन और उसके मज़हब का ठेस तो नहीं पहुंचाते?

नासिरः आप बजा फ़रमा रहे हैं मौलाना।

पहलवानः इस्लाम एइ कहता है? इस्लाम की यही तालीम है कि एक हिंदू बुढ़िया के पीछे हम सब राम राम सत करें?

मौलानाः पुत्तर इस्लाम ख़ुदग़र्ज़ी नहीं सिखाता। इस्लाम दूसरे के मज़हब और जज़्बात का एहतेराम करना सिखाता है– अगर तुम सच्चे मुसलमान हो तो ये करके दिखाओ? कुफ़्फ़ार और मुशरिकों के साथ मोहायदा पूरा करना परहेज़गारी की शान है...

पहलवानः (गुस्से में) ये ग़लत बात है, कुफ़्र है।

मौलानाः पुत्तर गुस्सा और अक़्ल कभी एक साथ नहीं होते। (कुछ ठहरकर) तुममें से कितने लोग हैं जो ये कह सकें कि रतन की मां तुम्हारे काम नहीं आई? कि तुम पर उसके एहसानात नहीं हैं? कि तुम लोगों की ख़िदमत नहीं की।

(कुछ नहीं बोलता।)

मौलानाः आज वो औरत मर चुकी है जिसके तुम सब पर एहसानात हैं, तुम सबको उसने अपना बच्चा समझा था, आज जब कि वो मौत के आग़ोश में सो चुकी है, तुम उसे अपनी मां मानने से इनकार कर दोगे... और अगर वो तुम्हारी मां है तो उसका जो मज़हब था उसका ऐहतेराम करना तुम्हारा फ़र्ज़ है।

सिकंदर मिर्ज़ाः आप बजा फ़रमाते हैं मौलाना... हमें मरहूमा के मज़हबी उसूलों के मुताबिक़ ही उनका कफ़न दफ़न करना चाहिए।

कुछ और लोगः हां, यही मुनासिब है।

मौलानाः फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त हो रहा है। मैं मस्जिद जा रहा हूं। आप लोग भी नमाज़ अदा करें। नमाज़ के मैं मिर्ज़ा साहब के मकान पर जाऊंगा।

सिकंदर मिर्ज़ाः मौलाना सबसे बड़ी मुश्किल ये है कि मरहूमा को जलाया कहां जाए क्योंकि क़दीमी शमशान तो अब रहा नहीं।

हिदायतः और जनाब इन लोगों की दूसरी रस्में क्या होती हैं, ये हमें क्य मालूम?

मौलानाः देखिए शमशान अगर नहीं रहा तो रावी का किनारा तो है। हम मरहूमा की लाश को रावी के किनारे किसी ग़ैर आबाद और सुनसान जगह लेकर सुपुर्दे आतिश कर सकते हैं।

कब्बनः क्या ये उनके मज़हब के मुताबिक़ होगा?

मौलानाः बेशक। हिन्दू अपने मुर्दों को नदी के किनारे जलाते हैं और फिर ख़ाक दरिया में बहा देते हैं।

तक़ीः लेकिन और भी तो सैकड़ों रस्में होती होंगी... मिसाल के तौर पर कफ़न कैसे सिया जाता है।

नासिरः भई आप लोग शायद न जानते हों, अम्बाला में मेरे बहुत से दोस्त हिन्दू थे, उनके यहां कफ़न काटा या सिया नहीं जाता बल्कि कफ़न में मुर्दे को लपेटा जाता है।

हिदायतः उसके बाद?

तक़ीः भई उसके बाद तो ठठरी पर रखकर घाट ले जाते होंगे।

कब्बनः ठठरी कैसे बनती है?

मौलानाः ठठरी समझो ये एक क़िस्म की सीढ़ी होती है जिसमें तीन डंडे लगे होते हैं।

कब्बनः तो ठठरी बनाने का काम तो किया ही जा सकता है... आप हज़रात कहें तो मैं बांस वग़ैरा लोकर ठठरी बनाऊं।

सिकंदर मिर्ज़ाः हां–हां ज़रूर।
(कब्बन बाहर निकल जाते हैं।)

तक़ीः लकड़ियों को रावी के किनारे पहुंचाने की ज़िम्मेदारी मैं ले सकता हूं।

मौलानाः बिस्मिल्लाह तो आप रावी के किनारे लकड़ियां पहुंचवाइए।
(तक़ी भी बाहर चले जाते हैं।)

सिकंदर मिर्ज़ाः मौलाना मुझे याद आता है कि हिन्दू मुर्दे के साथ कुछ और चीज़ें भी जलाते हैं... शायद आम की पत्तियां...

मौलानाः आम ही नहीं, बल्कि पत्तियां भी जलाई हैं।

सिकंदर मिर्ज़ाः (जावेद से) जावेद बेटा, तुम ये पत्तियां ले आओ।

हिदायतः क्या उनके यहां मूर्दे को नहलाया भी जाता है।

मौलानाः ये मुझे इल्म नहीं?

नासिरः जी हां नहलाया जाता है।

हिदायतः कैसे?

नासिरः ये तो मुझे नहीं मालूम।

मौलानाः भई नहलाने से मुराद यही कि मुर्दा पाक हो जाये और उसके साथ कोई ग़लाज़त न रहे।

सिकंदर मिर्ज़ाः जी हां और क्या...

मौलानाः तो मिर्ज़ा साहब ये काम तो घर ही में हो सकता है।

सिकंदर मिर्ज़ाः जी हां बेशक... देखिए मैं बेगम से कहता हूं।
(सिकंदर मिर्ज़ा अन्दर जाते हैं।)

मौलानाः नासिर साहब और कोई रस्म आ रही है।

नासिरः हां जनाब... असली घी डालकर मुर्दा जलाया जाता है और बड़ा लड़का आग लगाता है।

मौलानाः मरहूमा का कोई लड़का तो यहां है नहीं।

नासिरः सिकंदर मिर्ज़ा साहब को वो लड़के के बराबर मानती थीं। ये काम इन्हीं को करना चाहिए।

नासिरः मौलाना हिन्दू मुर्दे के साथ हवन की चीज़ें भी जलाते हैं।

मौलानाः हवन की चीज़ों में क्या–क्या होता है?

नासिरः जनाब ये तो मुझ नहीं मालूम।
(सिकंदर मिर्ज़ा आते हैं।)

मौलानाः मिर्ज़ा साहब हवन में क्या–क्या चीज़ें होती हैं, आपको मालूम है।

सिकंदर मिर्ज़ाः नहीं ये तो नहीं मालूम।

मौलानाः देखिए अब अगर कोई रस्म रह भी जाती है तो उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।
(कब्बन ठठरी लेकर आते हैं। उसे सब देखते हैं।)

मौलानाः अन्दर भिजवा दीजिए।

(कब्बन ठठरी सिकंदर मिर्ज़ा को दे देते हैं।)

मौलानाः हवन की जो चीज़ें बाक़ी रह गई हैं उनहें मिर्ज़ा साहब आप हासिल कर लीजिए। दस बजे तक इंशाअल्लाह जनाज़ा ले चलेंगे।

कब्बनः मौलाना, जनाज़े के साथ राम नाम सत है, यही तुम्हारी गत है। कहते हुए जाना पड़ेगा।

मौलानाः हां भाई ये तो होता ही है... अच्छा तो मैं फज्र की नमाज़ के बाद आता हूं।

(उठते हैं।)

(पहलवान जो अपने दोस्तों के साथ गुस्से में भरा कोने में बैठा हुआ सब देख–सुन रहा था अचानक सबके चले जाने के बाद उछलकर खड़ा हो जाता है और अलीम की गर्दन पकड़ लेता है।)

पहलवानः अलीमा मैं ऐ नहीं होण देना... किसी क़ीमत नहीं होण देणा... भावें मैनू... भावें मैनू...

(झपट कर अलीम का गला पकड़ लेता है।)

अलीमः अरे पहलवान मेरा गला तो छोड़ो... मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।

(पहलवान गला छोड़ देता है।)

पहलवानः ओय असी भी जानते हों... इस्से ने ठेका नहीं लेआ होया है इस्लाम दा...

अलीमः अरे तो मुझे क्या समझा रहे हो... कहो जाके उन लोगों से...

पहलवानः कहन सुनन नू होण रिया की है... अलीमा... खून खौल रिया है... पट्ठे फड़क रहे ने... क़सम खुदा दी... ए अ ऐंज नई बुझेगी... ऐंज नई बुझेगी...

(चीख़ता है) ए मौलवी है... मौलवी... काफ़िर औरत दे पीछे 'राम राम' कैंदा धूम रिया है... (गुस्से में बोला नहीं जाता)

सिराजः साले पागल हो गए हैं।

पहलवानः (चीख़कर) ओ साले ओ ए पाकिस्ता है... पाकिस्तान... पाक ज़मीन... ऐन्नू नापाक करन वाल्यां दी मैं ऐसी तैसी कर देवांगा...

अनवारः सारा माल हड़प लिया साले सिकंदर मिर्ज़ा ने...

पहलवानः मैं... मैं... पेट फाड़ के माल कड लवांगा... वेखेदे जाओ...

(अंतराल गायन)

गये दिनों का सुराग़ लेकर किधर से आया किधर गया वो
अजीब मानूस अजनबी था मुझे तो हैरान कर गया वो

बस एक मोती–सी छब दिखाकर, बस एक मीठी–सी धुन सुनाकर
सितार–ए–शाम बनके आया बरंगे ख़्वाबे सहर गया वो

वो मैकदे को जगाने वाला, वो रात की नींद उड़ाने वाला
ये क्या आज उसके जी में आई के शाम होते ही घर गया वो

वो हिज्र की रात का सितारा वो हम नफ़स, हम सुख़न हमारा
सदा रहे उसका नाम प्यारा, सुना है कल रात मर गया वो

दृश्य : सोलह

(मंच पर हल्का प्रकाश है। नाटक के पात्र (पहलवान तथा उसके चमचों को छोड़कर) रतन की मां की अर्थी उठाए मंच पर आया है। नितांत ख़ामोशी है। फिर धीरे से कुछ लोग कहते हैं।)

राम नाम सत है

दूसरे कहते हैं–

यही तुम्हारी गत है।

(फिर ख़ामोशी छा जाती है और कुछ समय बाद फिर पात्र 'राम नाम सत है, यही तुम्हारी गत है' दोहराते हुए मंच पर धीरे–धीरे निकल जाते हैं)

(मंच पर अंधेरा हो जाता है। धीरे–धीरे रौशनी आती है। रात का वक़्त है।)

(मस्जिद में मौलाना नमाज़ पढ़ रहे हैं। कोने में लैंप जल रहा है। धीरे–धीरे एक तरफ़ से ढांटा बांधे एक आदमी घुसता है और एक कोने में छिप जाता है। मौलाना नमाज़ पढ़ते रहते हैं। दूसरी तरफ़ से भी ढांटा बांधे एक आदमी

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

घुसता है और लैंप तक झुक कर जाता है। मौलाना नमाज़ पढ़ चुके हैं और मुड़ना चाहते हैं। कि लैंप बुझा दिया जाता है।)

मौलानाः कौन?

(कोई जवाब नहीं आता)

मौलानाः कौन है, ये रौशनी किसने गुल कर दित्ती?

(कोई जवाब नहीं आता। मौलाना लैंप की तरफ़ बढ़ते हैं तो पीछे से एक तीसरा आदमी आ जाता है। मौलाना माचिस जलाते हैं तो उन्हें अपने तीन तरफ़ तीन ढांटे बांधे लोग खड़े दिखाई देते हैं। तीली बुझ जाती है।)

मौलानाः तुम लोग कौन हो?

(कोई जवाब नहीं देता। तीनों एक–एक क़दम आगे बढ़ाते हैं।)

मौलानाः मुझे अपने नाम बताओ।

(कोई जवाब नहीं देता।)

मौलानाः तुम लोग जो भी हो मुसलमान हो... पूरे शहर में एक ही हिंदू बुढ़िया थी वो कल गुज़र गइ।... तुम मुसलमान हो..

(तीनों एक–एक क़दम और बढ़ते हैं)

मौलानाः ऐ खुदा दा घर है... यहां ढांटे बांधने की क्या ज़रूरत है... वो तो सब देख ही रहा है।

(तीनों तेज़ी से आगे आते हैं।)

मौलानाः मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है...

(पहलवान चाकू निकाल लेता है। सिराज और अनवार मौलाना को झपट कर पकड़ लेते हैं।)

मौलानाः बचाओ... बचाओ...

(सिराज उनका मुंह दबा लेता है। पहलवान मौलाना पर कई हमले करता है। वो गिर जाते हैं। पहलवान उनके कपड़ों से चाकू साफ़ करता है और तीनों तेज़ी से बाहर निकल जाते हैं।)

(कुछ क्षण बाद मंच के दोनों ओर सिर झुकाए नाटक के पात्र आते हैं। वे धीरे–धीरे मौलाना की लाश के पास आते हैं और बहुत गहरी, करुण और प्रभावशाली आवाज़ में गायन प्रारंभ होता है।)

ख़ाक़ उड़ाते हैं दिन रात
मीलों फैल गये सहरा
प्यासी धरती जलती है
सूख गये बहते दरिया

(गायन की करुण आवाज़ के साथ पृष्ठभूमि से औरतों के रोने की आवाज़ गायन में शामिल हो जाती है जो क्रमशः बढ़ती जाती है। सभी आवाज़ें धीरे धीरे फेड आउट हो जाती हैं। मंच पर अंधेरो हो जाता है)

○○

अक्की

पात्र परिचय

गिली	शासा की मौसी जो वेश्या है।
सम्मी	
कैथी	अधेड़ उम्र वेश्याएँ
राफ़ी	
तान्वा	बूढ़ा बढ़ई जिसके एक हाथ की उँगलियां तोप की गाड़ी बनाते हुए कट गई थीं। भीख माँगता है।
शासा	17–18 साल की सुन्दर चंचल युवती, वेश्या गिली उसकी मौसी है। शासा सिपाही ब्रान से प्रेम करती है।
ब्रॉनः	शासा का प्रेमी जो हकलाता है। उसकी ड्यूटी शहर के छोटे फाटक पर रहती है।
पाली	शहर की गन्दी बस्ती के शराबख़ाने का मालिक।
मैकींन	बूढ़ा किसान।

सरो	मैकीन का जवान लड़का जो फ़ौज में भरती कर लिया गया है।
लार्ड फिलिप	युवा शहज़ादा जिसे ऊपर किले की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी है।
मेजर दैदना	अधेड़ उम्र सेनाधिकारी।
कर्नल रास्वा	युवा सेनाधिकारी।
सार्जेण्ट	मध्य स्तर का बूढ़ा सेनाधिकारी।
मर्दान	एक व्यापारी–उम्र 50 के आसपास, मेजर दैदना का मित्र।
अम्बी	दूसरा व्यापारी–55 के आसपास, मेजर दैदना और प्रिंस फिलिप के बहुत निकट है।

परिवेशः उत्तर मध्यकालीन पूर्वी यूरोप की पृष्ठभूमि तथा पहनावा आदि। (किले को, जो सरमीनिया देश का एक हिस्सा है, एक शत्रु देश की सेना ने घेर लिया है जिसका विख्यात सेनापति अग्रील एक बड़ी सेना को लेकर सूरमा का किला जीतने आया है और उसने प्रतिज्ञा की है कि जब तक सूरमा के किले पर अपना झण्डा नहीं फहरा लेगा वापस नहीं जायेगा।)

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

दृश्य : 1

(शहरपनाह के छोट फाटक के पास का दृश्य जिसमें शहर की ऊँची दीवार का विशाल फाटक दिखाई दे रहा है और किले के ऊपर जाने वाले रास्ते का एक मोड़ भी नज़र आ रहा है। फाटक तथा चक्करदार मोड़ से पहले एक कोना है जिसमें शासा नृत्य कर रही है। शासा का पहनावा पूर्वी यूरोप के परम्परावादी पहनावे जैसा है। उसने घाघरा और चोली पहन रखी है पैरों में जूते हैं। वह बहुत सुन्दरता तथा तेज़ी से इस तरह नृत्य कर रही है जैसे कोई पार्टनर उसके साथ नाच रहा हो। शासा की उम्र 18–19 के क़रीब है। वह बहुत सुन्दर और चंचल लड़की है। ऐसा लगता है जैसे शासा अकेली है पर जब पूरे मंच पर प्रकाश आता है तो पता चलता है कि चक्करदार रास्ते पर ऊपर खड़े मर्दान और अम्बी भी उसे देख रहे हैं, जिनका पहनावा भी पूर्वी यूरोप के धनवान लोगों जैसा है। धीरे–धीरे शासा का नृत्य तेज़ होता जाता है।)

मर्दानः बिजलियाँ भरी हुई हैं इसके जिस्म में... पता नहीं ख़ूबसूरती की यह नदी किस पहाड़ से टकरायेगी और किस समन्दर में गिरेगी... काश! ये एक रात के लिए ही सही मेरी हो सकती!

अम्बीः (हँसकर) ये तो नहीं... हाँ, इस की मौसी तुम्हारी हो सकती है... जिस रात के लिए कहो।

मर्दानः (जलकर) मैं इसके लिए तुम्हारा शक्रगुज़ार हूँ... उसने तो इतने विस्तर गरमाये हैं कि अब पता नहीं उसके जिस्म में आग रह भी गयी है या नहीं।

अम्बीः (मज़ाकिया अंदाज़ में) छूकर देख लो...

मर्दानः जब यह किया जाना चाहिए था तो मैंने किया थ... अब राख को कुरेदने से क्या मिलेगा... क्या तुम जानते हो ये ऐसा बेबाक नाच किसके लिए नाच रही है?

अम्बीः जवानी की उतावलापन है... उमंग है... मस्ती है... ख़ुशी है... पागलपन है... दीवानगी है...

मर्दानः (बात करटकर) नहीं नहीं... वो तो सब ही है... लेकिन उस सबके पीछे भी कोई है।

अम्बीः कोई सिरफिरा आशिक़?

मर्दानः नहीं "हकला" आशिक़।

(प्रकाश नाचती हुई शासा पर से हट जाता है और केवल अम्बी और मर्दान पर केन्द्रित हो जाता है।)

अम्बीः क्या तुम सच कह रहे हो मेरे दोस्त... इस बेहतरीन हसीना को पूरे शहर में ब्रॉन ही मिला था?... ये सच है दोस्त कि अगर औरत पहेली न हो तो उसमें मर्द की दिलचस्पी ख़त्म हो जाये और मर्द पहेलियाँ बूझने से इनकार कर दे तो औरत उसे कूड़े का ढेर समझ ले।

मर्दानः ये बातचीत हम अपने आतिशदान के सामने बैठकर भी कर सकते हैं... सर्दी बढ़ रही है... आसमान के रंग–ढंग और हवाओं की सरगर्मियाँ ये बताने के लिए काफ़ी हैं कि इस साल बेतहाशा बर्फ़ गिरेगी।

अम्बीः काश! बर्फ़ गिरने से पहले ही राजधानी से फ़ौज आ जाये।

मर्दानः अपने लार्ड फिलिप तो यही कह रहे हैं।... रोज कबूतर उड़ाये जा रहे हैं... उधर से पता नहीं हक़ीक़त में कोई ख़बर आई भी है या नहीं।

अम्बीः कारोबार ठप्प पड़ा है... ये कम्बख़्त अब्रील भी अजीब ही क़िस्म का आदमी है। कहते हैं इस बार क़सम खाकर आया है कि जब तक सूरमा के किले पर अपना झण्डा न फहरा लेगा... वापस नहीं जायेगा।

मर्दानः ख़ुदा ही हमारी हिफ़ाज़त करे... लार्ड फ़िलिप से तो मुझे कोई उम्मीद है नहीं। कहते हैं, अब्रील पचास हज़ार की फ़ौज लाया है... और ऐसी तोपों हैं उसके पास, जिनके गोले शहर पर से होते लार्ड फिलिप के महल तक पहुंच सकते हैं।

अम्बीः पहले दिन वाली बमबारी याद है तुम्हें...

मर्दानः हाँ, हाँ क्यों नहीं... देखो! शासा जिसे लुभाने के लिए बेक़रारी से नाच रही थी वो उसके पास आ गया है।

(प्रकाश अम्बी और मर्दान से हटकर शासा और ब्रॉन पर आ जाता है। दोनों नाच रहे हैं। ब्रॉन शासा को बाँहों से पकड़कर हवा में उछालता है और फिर ज़मीन पर उसके पैर लगने से पहले ही उसे पकड़ लेता है।)

शासाः ये बहुत अच्छा लगा... फिर करो...

(शासा नाचने लगती है ब्रॉन भी साथ नाचता है। ब्रॉन फिर उसे उछालकर लोकता है)

शासाः प्यारे ब्रॉन... आज रात में तुम्हारी ही ड्यूटी है फाटक पर न?

ब्रॉनः (हकलाकर) क... क... क्या?

शासाः कान इधर लाओ।

(शासा ब्रॉन के कान में कुछ कहती है। ब्रॉन के चेहरे का रंग उतर जाता है। वह घबरा जाता है और पीछे हट जाता है)

शासाः बोलो मेरे प्यारे... ठीक है न?

ब्रॉन' न... न... न नहीं।

शासाः तुम्हें मेरी क़सम ब्रॉन... हम सब मरे जा रहे हैं...

ब्रॉनः (अपनी जेब से कुछ किस्से निकालता हुआ)... तत तुम... लल लेलो।

शासाः नहीं ब्रॉन, मेरी मौसी नहीं लेगी... फिर कहाँ तक... तुम...

ब्रॉनः म म म... में... र र री... (गर्दन पर उँगली चलाता कि गर्दन कट जायेगी।)

शासाः नहीं ब्रॉन... नहीं... (उसे चुम्बन देती हुई) किसी को क्या पता चलेगा... बस एक पल के लिए... जब पूरा शहर सो जाता है... सब लोग, लार्ड फिलिप और मैडम सेकिण्ड्रमा... और सारे सिपाही, पहरेदार, घोड़े भी...तब...

ब्रॉनः प प प... प्यारी.... ये... ये... न... न... नहीं हो सकता...

शासाः (उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं) हमारा यहाँ कौन है ब्रॉन... शहर में कोई काम नहीं है... कोई रोटी का टुकड़ा भी नहीं देता.... दो महीने से फाटक बंद हैं... और अब...

ब्रॉनः द... द... देखो... त... त...

शासाः मेरे प्यारे... ब्रॉन... ब्रॉन

(इतनी लगावट से वो कहती है कि ब्रॉन उसे बाँहों में भर लेता है)

○○

दृश्य : 2

(एक साधारण मकान के दरवाज़े से एक आदमी तेज़ी से निकलता है। उसी वक़्त अन्दर से गिली की तेज़ आवाज़ आती है।)

गिलीः कहाँ जा रहा है ऊदबिलाव के जन्मे, नामर्द, मेरे पैसेद तो देता जा...

(यह बोलते–बोलते गिली बाहर आ जाती है, वह पूरी तरह कपड़े भी नहीं पहन पाई है, कपड़े ठीक करती है। आदमी कुछ आगे बढ़ जाता है। गिली दौड़गर उसके सामने आ जाती है)

गिलीः ला पैसे ला... मुर्दार।

आदमीः पैसे?

गिलीः और नहीं तो क्या अहन समझकर भंभोड़ा था तूने मुझे?

आदमीः क्या बकती है... चल हट!

(आदमी आगे बढ़ने की कोशिश करता है गिली उसे पकड़ लेती है)

गिलीः भूखी हूँ मैं... समझा? तूने मेरी हड्डियाँ तक तोड़ डाली हैं... ला पैसे...

आदमीः मेरे पास पैसा नहीं है।

गिलीः तो क्यों आ गया था अपनी माँ का मुँह काला करने... ला... ला मैं तुझे जाने नहीं दूँगी हरामी के पिल्ले!
(गिरी आदमी का गिरेबान पकड़ कर झटके देती है। वह गिली को धक्का देता है, वह गिर जाती है)

गिलीः मैं तेरा ख़ून पी जाऊंगी... हरामी के जने...
(शासा का प्रवेश। गिली को उठाती है)

शासाः ये क्या है... ये क्या हो रहा है मौसी?

गिलीः देख, इसे जाने न देना... मैं अभी इसे मज़ा चखाती हूं...

शासाः बात क्या है मौसी?

गिलीः चला आया था मुआ मज़ा मारने... जेब में फूटी कौड़ी भी नहीं है।

आदमीः चुप रह रण्डी... मेरा भाई सिपाही है समझी।
(आदमी अकड़ता हुआ चला जाता है, शासा गिली को उठाती है)

गिलीः मैं समझी थी... कम से कम पीतल का एक सिक्का तो दे ही जायेगा।

शासाः तुम्हें...

गिलीः (कराहते हुए बात काटकर) हाँ, शासा... मुझे क्या पता था हरामी के पिल्ले का भाई सिपाही है...

शासाः तुम ठहरो... मैं पानी गरम करके लाती हूँ... तुम्हारे चेहरे पर दो दाँतों के निशान हैं...

गिलीः हरामी का जो.. उसकी बहन, बेटी के साथ ऐसा ही हो...
(शासा चली जाती है। गिली लेट जाती है, कराहती रहती है। शासा बर्तन में पानी लाती है और गरम पानी में कपड़ा भिगो कर गिली का चेहरा साफ़ करने लगती है)

गिलीः ब्रॉन से तुम्हारी... शादी के बाद.. मैं मर ही जाना चाहती हूँ...

शासाः क्यों मौसी? कैसी बातें कर रही हो?... लेकिन तुम्हें ये नहीं करना चाहिए था!

गिलीः शासा... मैं जो बन गयी सो बन गयी... जो होना था, हो गया... हाँ... तुम्हारी माँ से जो मैंने वायदा किया था. वो पूरा कर लिया...

शासाः पुरानी बातों को छोड़ो मौसी... ब्रॉन और मैं शादी करते ही तुम्हें अक्रीना ले जायेंगे... और वहाँ तुम आराम से रहना... अपने घर.. . अपने गाँव।

गिलीः अक्रीना... शासा मुझे सब याद है... अक्रीना का घर... डैडी... ममी... तुम्हारी माँ... मतानी... हमारे घर के पीछे ही घाटी थी... जहाँ मैं और मतानी झरबेरी के बेर बीनने जाते थे... उसके बाद मैं एलिक्स के साथ शादी करके बाल्टान्या आ गयी... वह मर गया... मैं...

शासाः लाओ अपना दूसरा हाथ दे दो...
(गिली के दूसरे हाथ को शासा साफ़ करती है)

गिलीः तुम्हारे ममी और डैडी जब बाल्टान्या आये तो मैं... वो बहुत नाराज़ हुई... पर क्या हो सकता था... अब देखो... प्लेग में मतानी और तुम्हारे डैडी के मरने के बाद बचे मैं तुम...

शासाः इतना बोलो मत मौसी... आराम करो...

गिलीः बस ये लड़ाई टल जाये और ब्रॉन से तुम्हारी शादी हो जाये तो मैं... (एक सन्तोष की साँस लेती है) मैंने मतानी से वायदा किया था कि तुम... तुम्हें एक अच्छी ज़िन्दगी दूँगी... अपनी जैसी नहीं...

शासाः मौसी... सुनो... मैंने ब्रॉन से बात कर ली है...

गिलीः (बेसब्रसी से) क्या बोला वह...

शासाः तैयार है।

गिलीः मैं बहुत डरती हूँ शासा...

शासाः डरती तो मैं भी हूँ।

दृश्य : 3

(शहर के अन्दर किले के परकोटे के बिल्कुल नीचे ग़रीबों की बस्ती है जिसमें एक टूटा–फूटा और गंदा शराबखाना है जिसका मालिक पाली है। इस टूटी–फूटी इमारत के ऊपर ही किले का परकोटा है जिसके ऊपर एक बड़े 'पोल' झण्डा लगा हुआ है। झण्डा दर्शकों को दिखाई नहीं देता पर बातचीत में उसका उल्लेख होता है। शराबख़ाने की एक मेज़ के इर्द–गिर्द शासा की माँ गिली और दूसरी वेश्याएँ बैठी हैं। पाली एक ट्रे उठाये बॉर के पिछले हिस्से से अन्दर आता है)

पाली: काठ और मिट्टी की गिलास न बचे होते तो सझ लो चुल्लू से 'अकी' पीनी पड़ती... कम्बख़्त एक–एक बर्तन उठा ले गये... तम्बा, पीतल, लोहा कुछ नहीं छोड़ा... (इस दौरान वह काठ के गिलास इनके सामने रखता हुआ बात जारी रखता है) कह रहे थे सरकारी हुक्म है... अरे, अब तो सब ही कुछ सरकारी है, उनका जो जी चाहे करें... चमचों और पतीलों को पिघलाकर तोप बना रहे हैं... उऊह... लो तुम भी लो तान्वा... लेकिन याद रखना कितना उधार हो गया।

तान्वा: ऊपर वाला तुम्हारे पापों को क्षमा करे। पाली तुम फरिश्ता हो... अगर दो बूँद 'अकी' न मिले तो समझो आदमी बग़ैर किसी तोप का गोला लग ही... (पीता है) वाह! मेरे दोस्त वाह... तुम्हारी शराब तो सर्दी इस तरह भगा देती है जैसे...

सम्मी: बस अब चुप हो जाओ तान्वा... तुम्हें रोका न जायेगा तो बोलते ही रहोगे... (गिली से) अभी आई नहीं शासा?

गिली: आती ही होगी।

तान्वा: मुझे तुम पर रहम आता है नरमदिल औरतों, माना कि तुम लोग ऊपर से नीचे तक... क्या कहते हैं उसे पापा... लेकिन पता नहीं वह है क्या... बहरहाल जैसा कि लोग कहते हैं, उसमें पूरी तरह डूबी हुई हो... लेकिन फिर ये बताओ कि हममें से कौन... ख़ैर मैं कह ये रहा था कि मेरे

कैथी: (उसकी बात काटकर) पाली, तुमने इसे क्यों दे दी... अब ये हमारा दिमाग़ चाटता ही रहेगा।

तान्वा: मेरी बच्चियो! अगर मेरी उँगलियाँ धारदार आरे से कटकर अलग न हो गयी होतीं तो तुम...

राफ़ी: बस करो, तान्वा से हम सैकड़ों बार सुन चुके हैं।

तान्वा: ठीक है... ठीक है मेरी बेटियो... ऊपर वाला तुम्हें वह सब दे जो तुम चाहती हो... उधार की 'अकी' समेत... पाली सलामत रहे...

पाली: सुनो तान्वा, उधार न पिलाऊँ तो करूँ क्या? 'अकी' मेरी साथ कब्र में तो जायेगी नहीं... लड़ाई का अंजाम अगर ये हुआ कि शहर और किले पर अब्रील की फ़ोज का क़ब्ज़ा हो गया तो वो 'अकी' मुफ़्त पी जायेंगे... न हुआ तो दबी रहेंगी? जब होगा दे देंगी... शहर में पैसा किसके पास है सिवाय चन्द को छोड़कर जिनका नाम जुबान पर लाना जुर्म है।

(पाली पीछे चला जाता है। दो फटेहाल किसान अन्दर आते हैं। मैकीन एक बूढ़ा किसान है और उसका जवान, सरो है। अन्दर आते ही मैकीन कहता है)

मैकीन: पाली, मेरे दोस्त कहाँ हो तुम...

पाली: इधर हूँ अन्दर।

(मंच के पीछे से पाली के आवाज़ आती है)

मैकीनः रात के दो ही पहर हुए हैं लेकिन उत्तर वाले बुर्ज़ की मरम्मत हो गयी है... ये ख़ुशख़बरी है पाली... क्या तुम बाहर नहीं जाओगे।

(पाली बाहर आते हुए)

पालीः अच्छा तो काम तेज़ी से हुआ।

रोः हाँ, ये देखो...

(अपनी पीठ पर से कपड़े हटाता है तो कोड़े से मारे जाने का निशान दिखाई देता है। सब औरतें उसे घेर लेती हैं)

गिलीः च... च... च कितनी बेदर्दी से मारा है।

मैकीनः ये तो होता ही है मेरी बच्चियो, जब मुल्क पर ख़तरा हो और दुश्मन की बड़ी फ़ौज घेरे खड़ी हो... तुम लोगों को ख़ैर क्या पता होगा... गहरी घाटी वाली लड़ाई में हुक्म दिया जाता था कि पीछे मुड़े या रुके तो पीछे से गोली मार दिये जाओगे... आगे ही बढ़ना है आगे... दुश्मन की लाइनें तोड़ना है...

कैथीः हाँ, मेरा बाप उसी लड़ाई में मारा गया था।

मैकीनः पता नहीं कितने मारे गये थे।

कैथीः मैं तो अपने बाप के बारे में ही जानती हूँ... तब ही तो मेरी माँ और फिर... मैं...

मैकीनः पागल लड़कियो... सोचो हमारा मुल्क... हमारा... हमारा अज़ीम मुल्क... हमारी मातृभूमि... जिसने हमें जना है, पाला पोसा है... हमारी माँ...

कैथीः हमारी माँ तो हमारा पेशा है मैकीन... मैकना और ज़लील पेशा.. . रण्डी का पेशा... दो पीतल के सिक्के फेंको और हमें रात भर नोचो...

मैकीनः मैं कुद और कह रहा था लड़कियो... कुछ और... मेरी बात सुनो...

तान्वाः सच तो ये है...

कैथीः सुन लिया तुम्हारा सच... हमें चैन से पीने दो... खाली पेट में 'अकी' की गर्मी आ रही है... अपना सच अपने पास रखो। तुम्हारे सच और झूठ की किसे परवाह है... तुम हो क्या?

तान्वाः एक अपाहिज भिखारी क्या हो सकता है? और वो इस आसेबज़दा शहर में जिसे दुश्मन की फ़ौज ने घेर रखा है जहाँ

अनाज के दाने–दाने के लिए लोग तरस रहे हैं। शहर में भूख से मरने वालों में मेरा पहला नम्बर होगा पाली... ध्यान रखना और मेरी क़ब्र पर...

कैथीः अगर वो बनी तो?

पालीः तान्वा, उधर काने में बैठो और बोलो मत... अगर बोले तो तुम्हें ऐ बूँद नहीं दूँगा... वैसे ही दिमाग़ ख़राब हो गया है और तुम अपनी बकवास से जाने क्या करोगे।

तान्वाः (कोने में जाता है) मेरे दोस्त, मेरे भाई, चुप रहने का इनाम मैं हर शर्त पर हासिल करना चाहता हूँ... मेरी तमन्ना यही है कि जब जान निकले तो पेट में 'अकी' हो... समझे तुम... मैं स्वर्ग में तुम्हारा क़र्ज़दार पहुँचूँगा...

पालीः बस ख़ामोश...

(तान्वा कोने में चुपचाप बैठ जाता है)

पालीः (मैकीन से) मैकीन, कोई अच्दी ख़बर सुनाओ... कुमक आ रही है? राजधानी से फ़ौज चल चुकी है?

मैकीनः मेरे दोस्त, ऐसी तो कोई ख़बर नहीं है।

तान्वाः और बर्फ़बारी के बाद तो कबूतरों का आना जाना भी बन्द हो जायेगा।

मैकीनः तुम ख़मोश रहो... (गुस्से से) पस्त–हिम्मती की बातें न करो तान्वा... खुदा तुम्हें ग़ारत करे... तुम एक भिखमंगे की तरह बस अपने पेट की फ़िक्र करो... मुल्क... अज़ीम मुल्क... के लिए इससे ज़्यादा तुम कर भी क्या सकते हो?

तान्वाः मैं तोप–गाड़ी बना रहा था जब ही मेरी उँगलियाँ कटी थीं... तोप–गाड़ी...

सम्मीः मैकीन... महल के पीछे जो घर हैं उनके दरवाज़े उखाड़कर ले गये हैं सिपाही...

मैकीनः क्यों?

राफ़ीः ताकि लार्ड फिलिप के महल के आतिशदानों के लिए लकड़ी कम न पड़े।

तान्वाः काश! मैं भी लकड़ी का दरवाज़ा होता और लार्ड फिलिप के आतिशदान में जला दिया जाता।

पालीः तुम फिर बोले!

सम्मीः लार्ड फिलिप से मांगो...

तान्वाः माफ़ करो भाई माफ़... आरे से, बजाय हाथ की उँगलियाँ कटने के ये ज़बान कठ जाती तो बेहतर था... थोड़ी–सी और दे दो। (अपना गिलास बढ़ाता है)
(सब वेश्याएँ हँसती हैं)

मैकीनः (अफ़सोस से) नादान औरतो, लार्ड फिलिप पर शहर और क़िले की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी है... लार्ड फिलिप हमारे पिता–परमेश्वर हमारे सम्राट् का राजकुमार है, जिसने सरमीनिया के झण्डे पूर्वी सागर से लेकर उत्तर में नदियों तक फहरा दिए हैं... जिसके नाम से आज बड़ी से बड़ी हुकूमतें थरथराती हैं और दुनिया में हमारी इज़्ज़त होती है।

तान्वाः मैं दुनिया में कहीं नहीं जाता... यहीं सूरमा में भीख माँगता हूँ और मेरी इज़्ज़त नहीं होती...

मैकीनः (गुस्से से) चुप रह नापाक कमीने भिखारी...

तान्वाः ठीक है चुप रहूँगा मैं तो पहले ही कह रहा था कि काश! उँगलियाँ काटने के बजाए...

पालीः (डाँटकर) निकलो बाहर तान्वा.... निकलो...

तान्वाः पाली... मुझे यहाँ बैठा रहने दो... सर्दी बहुत है... मेरी कोठरी... तुम सोच भी नहीं सकते... बर्फ़ से ज़्यादा ठण्डी है...

राफ़ीः बैठा रहने दो उसे।

मैकीनः (गुस्से से) तो उससे कहो अपना थोबड़ा बन्द रखे... अगर कहीं लार्ड फिलिप को किसी ने बता दिया तो...

पालीः तान्वा... तुम फ़ौरन बाहर जाओ...

तान्वाः ठीक है चला जाता हूँ... कल न जाऊँ तो हैरत न करना... समझ लेना... तान्वा बढ़ई...

सम्मीः पाली, उसे क्यों निकाल रहे हो?

पालीः (चिल्लाकर) मैं तुम सबको निकाल दूंगा हरामज़ादियो, कुतियो मुफ़्त की 'अकी' पीती हो और मुझे फँसवाने वाली बातें करती हो... मैं देशभक्त हूँ... राजभक्त हूँ... समझी... मैकीन... समझे.... ये साली रण्डियाँ और ये साला भड़वा तान्वा... मुझे, मादर... मरवा देंगे... चलो... निकलो सब यहाँ से... ये चोदि... भूखी मर रही हैं... अब इस शहर में किसके पास टके हैं जो इन्हें चूसे...

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

और ये साला तन्वा... ये तो कुत्ते की मौत मरेगा... चलो निकलो यहाँ से...
(तान्वा और सभी वेश्याएँ जल्दी–जल्दी बाहर निकल जाती हैं)

○○

दृश्य : 4

(शहर के दरवाज़े पर ब्रॉन पहरा दे रहा है। रात का अन्तिम पहर है। चारों ओर घना सन्नाटा है। अँधेरे से एक छाया निकलती है जो ब्रॉन के पास आ जाती है।)

शासाः ब्रॉन!

(ब्रॉन शासा की तरफ़ झपटता है। उसे बाँहों में भर लेता है और चूमता है।)

शासाः सब ठीक है ब्रॉन।

ब्रॉनः न... न... नहीं... व... व... वो...

शासाः क्या हुआ ब्रॉन...

ब्रॉनः ग ग ड... गड़... बड़ हो गई... स... स.... सा सार्जेण्ट आ रहा है....

शासाः सार्जेण्ट?... (बहुत निराश से) अब क्या होगा ब्रॉन...

ब्रॉनः क... का... कुछ समझ में नहीं आता...

शासाः क्या मैं चली जाऊँ ब्रॉन...

ब्रॉनः च... च... चली जाओ... ल... ल लेकिन...

शासाः तो तुम छोटे फाटक...

ब्रॉनः न... न... न... नहीं... नहीं....

शासाः वो सब मर जायेंगी ब्रॉन... मौसी और कैथी, सम्मी और राफ़ी सब...

ब्रॉनः सार्जेण्ट... य... य... यहाँ... आ... र... रहा है...

(दूर से जूतों की आवाज़ आती है। शासा घबरा जाती है)

शासाः ओफ़... कहो मैं क्या करूं... क्या मैं जाऊँ?

ब्रॉनः ठ... ठ... ठीक है।

(उसी समय भारी जूतों की आवाज़ नज़दीक आ जाती है।)

सार्जेण्टः ये लड़की कौन है ब्रॉन...

शासाः (अपने आपको सम्भालकर) मैं शासा हूँ सार्जेण्ट...

सार्जेण्टः शासा? क्या मतलब... तुम हो कौन... और रात के अंधेरे में... यहाँ शहर के फाटक पर तुम क्या कर रही हो।

शासाः मैं ब्रॉन की प्रेमिका हूँ सार्जेण्ट... रात में कभी– कभी इसके पास आ जाती हूँ... जब इसे नींद आने लगती है या ठण्ड ज़्यादा लगने लगती है तो हम नाचते हैं सार्जेण्ट... उससे जिस्म में गर्मी आ जाती है... नींद भाग जाती है साजेंण्ट...

सार्जेण्टः (ठहाका लगाकर) वह री जवानी... काश! मैं भी जवान होता... (पास आ जाता है और शासा को ध्यान से देखता है)

सार्जेण्टः तुम बहुत ख़ूबसूरत हो लड़की... क्या नाम बताया?

शासाः शासा।

सार्जेण्टः तो तुम बहुत अच्छा नाचती हो शासा।

शासाः हाँ, सार्जेण्ट...

सार्जेण्टः (फीकी हँसी हँसकर) सिर्फ़ जवानों के साथ?

शासाः इधर आइये सार्जेण्ट!

(वह सार्जेण्ट को फाटक से कुछ अलग ले जाती है और पहले वह नाचना शुरू करती है। फिर सार्जेण्ट उसके साथ नाचता है। नाचते–नाचते अचानक सार्जेण्ट रुक जाता है। वह हाँफने लगता है। शासा भी रुक जाती है।)

सार्जेण्टः (हाँफते हुए) तो तुम ब्रॉन से प्रेम करती हो।

शासाः हाँ, सार्जेण्ट!

सार्जेण्टः क्यों?

शासाः बस... मुझे अच्छा लगता है।

सार्जेण्टः वह हकला जो है?

शासाः कुछ बताने के लिए बोलना ज़रूरी नहीं सार्जेण्ट!

सार्जेण्टः (सोचते हुए दूसरे अर्थों में) हाँ, कुछ बताने के लिए कहना ज़रूरी नहीं है... बिल्कुल नहीं है... बल्कि जो लोग कुछ बताने के लिए कुछ बोलते हैं उससे कोई मतलब नहीं निकलता... समझी?

शासाः नहीं सार्जेण्ट?

सार्जेण्टः तो आओ नाचें।

(इस बीच ब्रॉन छोटा फाटक खोलता है। कुछ छायाएँ अन्दर आकर ग़ायब हो जाती हैं। नाचते–नाचते रुक जाता है)

सार्जेण्टः क्या तुम्हारी जैसी लड़की मुझ जैसे बूढ़े के साथ... खुशी... ख़ुशी कहीं भी जा सकती है?

शासाः हाँ, सिर्फ़ ख़ुशी–ख़ुशी सार्जेण्ट...

सार्जेण्टः (चीख़ता है) प्लाटून हाल्ट... अटैंशन

(अचानक आठ फौजी मार्च करते हुए सामने आते हैं। सार्जेण्ट उनको देखकर खीझ जाता है।)

सार्जेण्टः (चीख़ता है) प्लाटून हाल्ट... अटैंशन!

(प्लाटून रुक जाता है और अटैंशन हो जाता है।)

(शासा को इस पर हँसी आती है)

सार्जेण्टः आराम से... अटैंशन... आराम से... अटैंशन...

(सार्जेण्ट जल्दी–जल्दी इन शब्दों को दोहराता है। प्लाटून जैसे नाचने लगती है। शासा हँसते–हँसते दोहराती हो जाती है। सार्जेण्ट शासा को हँसने से अधिक प्रेरित होकर और जल्दी–जल्दी अटैंशन और 'आराम से' आदेश देता है और प्लाटून से नचवाता है उसके बाद ऊँची आवाज़ में)

सार्जेण्टः प्लाटून डबलमार्च... नाक की सीध में... जिधर मोड़ आये... प्लाटून मुड़ेगी... अगले हुक्म तक डबल मार्च...

(प्लाटून मार्च करती निकल जाती है। सार्जेण्ट शासा की तरफ़ मुड़ता है)

सार्जेण्टः तो तुम कह रही थी... तुम किसी बूढ़े आदमी से प्रेम कर सकती हो?

शासाः हाँ, सार्जेण्ट अगर चाहूँ तो।

सार्जेण्टः तुम सच कह रही हो लड़की?

शासाः हाँ, सार्जेण्ट!

सार्जेण्टः लड़की... इस आफ़त के मारे शहर में मेरे जैसा बूढ़ा जिसे कभी प्यार मिला ही नहीं, ये सोचकर कितना खुश है कि मरने से पहले उसे पता चल गया है कि उससे कोई जवान लड़की प्यार कर सकती है... तुम शासा?

शासाः मैं तो ब्रॉन से प्रेम करता हूं सार्जेण्ट!

सार्जेण्टः करो शासा... यही नाम है न तुम्हारा... ख़ूब करो (ठण्डी सांस लेकर) कोई किसी से प्यार तो करता है।

शासाः मैं अब घर जा रही हूं सार्जेण्ट!

सार्जेण्टः जाओ... क्या तुम रोज़ रात ब्रॉन के पास आती हो?

शासाः नहीं सार्जेण्ट... आम तौर पर वह मेरे घर आता है।

सार्जेण्टः ठीक है जाओ शासा!

(सार्जेण्ट चला जाता है। शासा इधर–इधर देखती है और एक कोने में छिपी बैठी औरत की तरफ़ बढ़ती है। औरत खड़ी हो जाती है। वह शासा की मौसी गिली है।)

गिलीः (कांपती आवाज़ में) देख शासा... ये देख...

(कांपते हुए हाथों से कुछ निकालकर दिखाती है)

गिलीः चांदी का सिक्का... चांदी...

शासाः अरे हां सचमुच...

गिलीः (उसकी बात काटकर) अब हम एक आधा महीने तक नहीं मरेंगे... मेरी शासा... सच? हम नहीं मरेंगे... इससे इतना मैदा और आलू... हाय मेरी कमर में इतना सख़्त दर्द है कि क्या बताऊं... और सर्दी... बाहर ये तूफ़ानी हवा और तेज़ है... ले ये रख ले...

शासाः घर चलो मौसी... मैं पानी गरम करती हूं और तुम्हारी कमर सेंक देती हूं।

गिलीः अब्रीली दरिन्दे हैं... पागल दरिन्दे... नोंच खाया...

शासाः तुम्हारे तो चेहरे पर...

गिलीः (डरकर) दांत से काटने के निशान नहीं हैं न?

शासाः घर में देखूंगी...

गिलीः भभोड़ खाया कुत्तों ने.. रख लिया न तूने वह चांदी का सिक्का?

शासाः हां मौसी!

(गिली निढाल होकर शासा पर गिर–सी जाती है। वह सहारा देकर उसे आगे बढ़ाती है।)

गिलीः (अटक–अटक कर) तू मत करना... ये तू कभी मत करना... लड़ाई के बाद... ब्रॉन तुझसे शादी... कर लेगा... बच्चे (हंसती

हैं) फूल जैसे बच्चे... तब मुझे भी... वे जंगली हैं बेटी... जंगली भालू... आह! (कराहती है)
(शासा उसे सहारा दिए ले जाती है।)

○○

दृश्य : 5

(रात का समय है। व्यापारी अम्बी के भव्य ड्राइंगरूम में आतिशदान के सामने अम्बी के साथ दूसरा व्यापारी मर्दान और सेना के दो अधिकारी मेजर दैदना और कर्नल रास्वा बैठे हैं। उनके हाथों में शराब के गिलास हैं। आतिशदान की आग में उनके चेहरे और गिलास दमक जाते हैं... ड्राइंगरूम के अन्य कोने अंधेरे से हैं। बाहर से तेज़ हवा चलने की आवाज़ें आ रही हैं)

अम्बीः तो ये सब कब तक चलता रहेगा मेजर दैदना?

मेजर दैदनाः हां, हमेशा के लिए तो हरगिज़ नहीं... अब सवाल ये है कि पूरी कमाण्ड लार्ड फिलिप के पास है... वो सलाहकारों को, जिनमें मैं भी शामिल हूं, बुलाते हैं लेकिन कोई बड़ा फ़ैसला लिए बग़ैर बैठकें ख़त्म हो जाती हैं... अब कल की इमरजेन्सी मीटिंग ही में क्या हुआ? उसी सब पर बातचीत होती रही जो हम सब जानते हैं... शहर की अस्सी फ़ीसदी आबादी अब सिर्फ़ एक वक़्त खा रही है। ईंधन का अकाल पड़ गया है। वग़ैरा... वग़ैरा।

मर्दानः इसका मतलब है अब्रील अपने मुहासिरे में कामयाब है... हमें वह चूहों की तरह मार गिरायेगा।

कर्नल रास्वाः मर्दान, जब तक बारूदखाना और तोपें हैं अब्रील की फ़ौजों को कामयाबी नहीं मिल सकती... इसी किले की यही तो खूबी है जिस पर लार्ड फिलिप को पूरा भरोसा है।

अम्बीः अब्रील की 'सप्लाई लाइन' खुली हुई है... हम यहां घिरे बैठे हैं... जानते हो शहर में गेहूं किस भाव बिक रहा है?

मेजर दैदनाः (हंसकर) जो ख़रीदता होगा उसे पता होगा।

मर्दानः चांदी के चार सिक्कों में एक मन।

कर्नल रास्वाः ओफ़ ओफ़... ये तो... तब... तो...

मर्दानः तब भी बिकता है... लोग चांदी तो नहीं खा सकते।

अम्बीः बाहर से मदद की गुंजाइश है?

मेजर दैदनाः सच पूछो तो मुझे नहीं लगता... तीन महीने बहुत होते हैं... जब अब्रील की फ़ौजें यहां से तीन पड़ाव दूर थीं तब ही हम लोगों ने राजधानी ख़बर भेज दी थी... वहां तूती की आवाज़ कौन सुनता है।

कर्नल रास्वाः मुझे तो लगता है बर्फ़ गिरने से पहले अब्रील बड़ा और शायद आख़री हमला करेगा... वह खुले आसमान के नीचे बर्फ़बारी झेलने का खबता मोल नहीं लेगा... और फिर उसकी सप्लाई लाइन भी तो बन्द हो जायेगी?

अम्बीः काश! ऐसा हो रास्वा... काश! ऐसी ही हो।

कर्नल रास्वाः लार्ड ग़ाफ़िल नहीं है। असलहाख़ान में रात दिन काम चलता है... तोपों और हथियारों को ढालना जारी है...

मर्दानः इस तरह गेहूं का ज़ख़ीरा तो साफ़ हो जायेगा?

कर्नल रास्वाः नहीं... अब हम मज़दूरों और सिपाहियों को अनाज नहीं दे रहे हैं... दो वक़्त कीा खाना ही मिलता है।

मर्दानः बहुत अच्छा... ये तरीक़ा पहले वाले से बेहतर है...

मेजर दैदनाः झण्डे को सलामी देने और गीत के बाद आज फिर लार्ड ने अपनी तक़रीर में कहा कि मुल्क और वतन पर मिटने का यही वक़्त है... अब्रील ये क़सम खाकर आया है कि हमारे किले पर अपना झण्डा फहराये बग़ैर वापस न जायेगा तो हमने भी क़सम खाई है कि हम मर मिटेंगे लेकिन अब्रील की फ़ौजों का रुख फेर देंगे।

कर्नल रास्वाः बिल्कुल ठीक कहा है।

अम्बीः एक–एक दौर हो जाये दोस्तो?

मेजर दैदनाः नहीं मेरे प्यारे दोस्त... अब हम दोनों को ड्यूटी पर जाना है... पता नहीं अब्रील की फ़ौजें कब गोलाबारी शुरू कर दें... चलो कर्नल चलें।

अम्बीः शबबख़ैर दोस्तो!

(मेजर दैदना और कर्नल रास्वा बाहर निकल जाते हैं। अम्बी और मर्दान आतिशदान के सामने बैठ जाते हैं। अम्बी दोनों गिलासों में और शराब डालता है)

अम्बीः इस लड़ाई से कितना नुक़सान हुआ है। मेरा तुम सोच नहीं सकते... बास मेरा माल यहां पहुंचने ही वाला था... अब अगर अब्रील के फ़ौजियों के हत्थे चढ़ गया तो समझो मैं बर्बाद हो गया।

मर्दानः लेकिन जो गोदामों में था वह तो...

अम्बीः (बात काटकर) क्या था गोदामों में, कुछ नहीं... हां, अगर गोदाम पूरे भरे होते तो ज़रूर नुक़सान न होता।

मर्दानः वैसे गेहूं अब भी लोग ख़रीद रहे हैं।

अम्बीः देखो, ये मुहासिरा लम्बा खिंचेगा... मैंने तो हाथ खींच लिए हैं... आज मुंशी से कह दिया है कि बिक्री बंद कर दे।

मर्दानः काश! माल बाहर से आ सकता होता।

अम्बीः काश... माल बाहर बिक सकता होता।

मर्दानः (डरकर) क्या कह रहे हो अम्बी!

अम्बीः ग़लत तो नहीं कह रहा हूं... (राज़दान अंदाज़ में) तुम्हें मालूम है अब्रील की छावनी में गेहूं की क्या क़ीमत है?

मर्दानः कैसे?

अम्बीः तुम्हें मालूम है कि रात में छोटा फाटक खुलता है।

(अम्बी उछल पड़ता है)

मर्दानः नहीं।

अम्बीः हां।

मर्दानः ये कैसे हो सकता है अम्बी!

अम्बीः मेरी इत्तिला ग़लत नहीं होती।

मर्दानः मुझे तो यक़ीन नहीं होता।

अम्बीः मुझे पक्का यक़ीन है।

मर्दानः कोई सबूत है तुम्हारे पास?

अम्बीः हां, है?

मर्दानः क्या?

अम्बीः (अपनी जेब से कुछ निकालकर दिखाता हुआ) ये देख रहे हो... चांदी की टुकड़ा...

मर्दानः हां... हां... तो फिर।

अम्बीः ये चांदी का टुकड़ा कल मेरी दुकान पर आया था... कल...

मर्दानः कौन लाया थ।

अम्बीः गेहूं और तेल ख़रीदने के लिए राफ़ी लाई थी।
मर्दानः राफ़ी... कौन राफ़ी...
अम्बाः अरे, वही हरामी की बच्ची... अपना जिस्म बेचने वाली...
मर्दानः राफ़ी जो रण्डी है?
अम्बीः हां, वही।
मर्दानः तो इसका क्या मतलब हुआ?
अम्बीः इसका सीधा मतलब निकलता है कि शहर का कोई दरवाज़ा रात में खुलता है।
मर्दानः ज़रा तफ़सील से बताओ अम्बी!
अम्बीः चांदी का ये टुकड़ा इन दिनों के राफ़ी के पास कहां से आया? कौन नहीं जानता कि ये लोग पिछले कई महीनों से फ़ाक़े कर रहे हैं।
मर्दानः हो सकता है अब तक छिपाकर रखा हो।
अम्बीः नहीं... इस चांदी के टुकड़े पर ये निशान देख रहे हो... हालांकि निशान अच्छी तरह मिटाये गये हैं।
मर्दानः हां, है तो निशान।
अम्बीः ये निशान... हमारे सिक्कों पर नहीं हैं... ये नये–से निशान हैं... मुझे यक़ीन है, यह बाहर सक लाया गया है और राफ़ी के लिए ही यह सबसे आसान काम हो सकता है... जिस्म फ़रोशी के बदले चांदी का एक टुकड़ा।
मर्दानः तुमने ये बात कर्नल से क्यों नहीं कही।
अम्बीः जानबूझकर नहीं कही।
मर्दानः क्यों?
अम्बीः राफ़ी क़त्ल कर दी जाती... हमें क्या मिलता?
मर्दानः तो, तुम इसी तरह, चांदी के चन्द और टुकड़े जमा करना चाहते हो?
अम्बीः नहीं... इतने सस्ते में मैं नहीं बिकता।
मर्दानः फिर?
अम्बीः अगर शहर का छोटा फाटक राफ़ी के लिए खुल सकता है तो मेरे और तुम्हारे लिए...
(जानबुझकर वाक्य अधूरा छोड़ देता है)
मर्दानः कितना ख़तरा है इसमें।

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

अम्बीः और कितना फ़ायदा है इसमें, मेरे पास पक्के लोग हैं जो ये काम... मेरे और तुम्हारे लिए...
मर्दानः जब तुम सब जानते हो अम्बी तो उसमें मुझे क्यों शामिल कर रहे हो?
अम्बीः (हंसकर) क्योंकि तुमसे छुपकर ये काम नहीं हो सकता... तो चलो मिलाते हो हाथ?
मर्दानः अगर हमारे लोग पकड़ लिए गये?
अम्बीः तो उन्हें फांसी हो जायेगी।
मर्दानः और उन्होंने हमारा नाम बताया?
अम्बीः तो कर्नल रास्वा और मेजर ददैना गवाही देंगे कि उस वक़्त तो हम लोग उनके साथ थे... और सज़ा उसी को मिलेगी जो रंगे हाथों पकड़ा जायेगा... दुनिया में कहीं भी कोई मेरे नाम से जो चाहे कर दे और फंस जाऊं मं? ये कहां का इन्साफ़ है...? घाटा ही पूरा नहीं होगा मर्दान... वारे न्यारे हो जाएंगे।
मर्दानः अब सवाल पैदा होता है छोटा फाटक?
अम्बीः चलो उठो जल्दी करो... हो सकता है आज ही हम देख सकें।
(दोनों तेज़ी से उठ जाते हैं।)

OO

दृश्य : 6

(शहरपनाह के छोटे फाटक के पास ब्रॉन खड़ा पहरा दे रहा है। आधी रात होने वाली है। अचानक काले कपड़ों में लिपटी छायाएं फाटक के पास आती हैं। रोशनी में दिखाई देता है कि वेश्याएं हैं। फाटक के ऊपर दाहिनी तरफ़ के परकोटे पर दो छायाएं खड़ी हैं जिन्हें नीचे वाले नहीं देख सकते। ये दो छायाएं व्यापारी अम्बी और मर्दान हैं जिन पर बहुत कम रोशनी पड़ रही है)

गिलीः (धीमी आवाज़ में) बेटी ब्रॉन... ये आलू और मैदे का सूप है... तुम्हारे लिए लाई हूं... अभी थोड़ा गरम है... पी लो इसे... (ब्रॉन सूप हाथ में ले लेता है और प्याला मुंह से लगा लेता है।)

कैथीः तुम न होते तो हम कब की मर चुकी होतीं ब्रॉन... ऊपर वाला जल्दी ही अब्रील का सत्यानाश करे और तुम शासा से ब्याह रचाकर उसके बच्चों के बाप बनो।

राफ़ीः मैं तुम्हें वापसी पर कुछ ज़रूर दूंगी... अब वैसे उनके पास भी कुछ बचा नहीं... हां, आज शायद घोड़े का ठण्डा मांस जरूर मिल जायेगा...

ब्रॉनः क... क... का... कोई बात नहीं...

सम्मीः ईश्वर तुम्हें सब कुछ दे ब्रॉन...

गिलीः (बहुत धीरे से) तो फाटक की छोटी वाली खिड़की। (उसी समय मार्च करते सैनिकों के जूतों की आवाज़ें सुनाई देती हैं और सब घबरा जाते हैं)

ब्रॉनः स... स... सार्जेण्ट... अ... आ... रहा है... त... त... तुम लोग छाः छिप जाओ। (वेश्याएं एक छोटी दीवार के पीछे चली जाती हैं। ऊपर खड़ी छायाएं भी बैठ जाती हैं। मार्च करने की आवाज़ें तेज़ हो जाती हैं। सामने से एक टुकड़ी आती है जिसके आगे–आगे सार्जेण्ट है। फाटक के पास सार्जेण्ट चीख़ कर हुक्म देता है)

सार्जेण्टः रुक जाओ।
(टुकड़ी रुक जाती है)

सार्जेण्टः पीछे मुड़ो... डबल मार्च... सीधे महल के फाटक तक (टकड़ी डबल मार्च करती आगे निकल जाती है।)

ब्रॉनः स...स... सब ठीक है सार्जेण्ट!

सार्जेण्टः अन्दर से कोई बाहर गया।

ब्रॉनः न...न... नहीं।

सार्जेण्टः उसको आना चाहिए था ब्रॉन... उसको आना चाहिए था... क्योंकि वह है जो ठण्ड, सन्नाटे और अंधेरे को तोड़ती है... क्यों है न, ब्रॉन?

ब्रॉनः ज... ज.. जी...

सार्जेण्टः तुम खुशक़िस्मत हो ब्रॉन... तुम्हारे पास एक सपना है... मैं या मेरी उम्र को पहुंचे लोग... सपनों से खाली होते हैं... काश! मैं तुम्हारे जैसा जवान होता ब्रॉन... ब्रॉन! माफ़ करो क्या तुम मुझे थोड़ी–सी 'अकी' द सकते हो... तेज़ अकी?

ब्रॉनः म... म... माफ़ करें... सार्जेण्ट म... म.. मरे पास नहीं है।

सार्जेण्टः (हंसकर) लो मैं तो भूल ही गया था तुम्हारे पास तो 'अकी' से बड़ी चीज़ है... 'अकी' से बड़ी चीज़ है... तुम्हें 'अकी' की क्या ज़रूरत है...

सार्जेण्टः ब्रॉन, जब तुम शासा को छूते हो, उसे बांहों में कसते हो... उसके होठों पर अपने होंठ गड़ा देते हो तो तुम्हें कैसा लगता है... क्या तुम्हारे पैर कांपते हैं और चेहरा लाल हो जाता है... बिल्कुल सुर्ख़?... अब जब तुम उससे मिलो तो कई बार मेरी तरफ़ से उसे चूम लेना... समझे... वह खुशनसीब लड़की है... भगवान् उसका भला करे... उसे शहज़ादी होना चाहिए था... पर ब्रॉन सच पूछो तो बिना शहज़ादी हुए भी अच्छी ही है... तो तुम्हारे पास 'अकी' नहीं है... तो लो मैं तुमको पिलाता हूं... (अपनी जेब से एक बोतल निकालता है और पहले खुद मुंह में लगाकर तीन चार लम्बे घूंट लेता है फिर बोतल ब्रॉन को दे देता है)

सार्जेण्टः पियो मेरे यार पियो.. और गाओ... 'कल क्या होगा, कोई जाने न'... कल क्या... (मार्च करती टुकड़ी की आवाज़ आती है)

सार्जेण्टः तो ये कम्बख़्त आ गये... ठीक है मैं चलता हूं... देखो अगर शासा होती तो उसे मैं ये खेल दिखाता... (आदेश देता है) हाल्ट (टुकड़ी रुक जाती है। फिर सार्जेण्ट आदेश देता है)

सार्जेण्टः स्टैण्ड ऐट इज़।

(टुकड़ी 'आराम से' से हो जाती है। फिर अटैंनशन और आराम से लगातार आदेश देकर वही खेल जैसा नृत्य करवाता है जो उसने शासा को दिखाया था।)

सार्जेण्टः लड़की आये तो भूलना नहीं... कम से कम दस... समझे... हां, और अपनी शादी में बुलाना न भूलना... नहीं तो कोर्ट मार्शल कर दूंगा...

(सार्जेण्ट टुकड़ी के आगे–आगे मार्च करता चला जाता है। सार्जेण्ट के दूर चले जाने के बाद ब्रॉन दीवार के पास जाता है और वश्याओं को बाहर आने का इशारा करता है)

सम्मीः हमारी तो जान पर ही बनी हुई थी ब्रॉन... मुझे तो खांसी भी है न...

राफ़ीः बस, समझो बच ही गये...

गिलीः क्या अब खोल सकते हो खिड़की... वो बिल्कुल छोटी वाली खिड़की...

ब्रॉनः ज... ज... जल्दी करो... जल्दी...

(ब्रॉन खिड़की खोलता है। ऊपर अम्बी और मर्दान की छायाएं खड़ी हो जाती हैं। ब्रॉन जैसे ही अंतिम वेश्या के बाहर निकल जाने पर ताला बन्द करता है वैसे ही अम्बी ऊपर से ठीक उसके पास कूदता है और हाथ से चाबी छीन लेता है। ब्रॉन अपनी तलवार खींच लेता है। उसी समय ऊपर से मर्दान कूदता है। जिसके हाथ में नंगी तलवार है)

अम्बीः ब्रॉन... तलवार म्यान में रख लो...

ब्रॉनः च... च... चाबी...

अम्बीः चाबी तो तुम्हें मिल ही जायेगी... हम चाबी का क्या करेंगे... तुम तलवार म्यान में रखो... तलवार से ये मसला नहीं सुलझेगा।

(ब्रॉन तलवार म्यान में रख लेता है)

अम्बीः मैं अभी जाकर लार्ड फ़िलिप को सब कुछ बताता हूं... यहां गारद भेज दी जायेगी... तुम गिरफ़्तार हो जाओगो और सुबह

होने से पहले जब वे रण्डियां वापस आयेंगी तो उन्हें भी गिरफ़्तार कर लिया जायेगा और तुम सबको एक साथ फांसी पर लटका दिया जायेगा... ब्रॉन... मैंने जो कहा इसमें कोई श है?

ब्रॉनः त... त... तुम... ठ... ठीक

अम्बीः हां, मं ठीक कह रहा हूं... मुल्क से गद्दारी की सज़ा सिर्फ़ मौत है... जिस मुल्क पर मर मिटने को गाने तुम गाते हो... जिस झण्डे को रोज़ सलामी देते हो... जिस देश की अखण्डता और एकता को बनाये रखने की तुमने सौगन्ध ली है उससे गद्दारी को मतलब...

(ब्रॉन सिर झुका लेता है)

ब्रॉनः क... क... क्या?

अम्बीः तुम इस रण्डियों के लिए छोटी खिड़की खोलते हो?

ब्रॉनः हां।

अम्बीः हमारे लिए बड़ी खिड़की खोल दिया करो।

ब्रॉनः (डरकर) न... न... नहीं... नहीं...।

अम्बीः सोच लो ब्रॉन... इसमें तुम्हारा क्या जायेगा... तुम रहम खाकर रण्डियों को बाहर चले जाने देते हो कि दो चार पैसे कमा लाएं और इस मनहूस शहर में ज़िन्दा रह सकें... तो प्यारे ब्रून, हमें भी इस बदनसीब शहर में दो–चार पैसे पैदा कर लेने दो... हां, हम रण्डियों जैसे नहीं हैं कि तुम्हें सूप के एक प्याले पर टरका दें।

मर्दानः तुम मालामान हो जाओगे ब्रॉन... लड़ाई ख़त्म होने के बाद जागीर ख़रीद लेना... समझे? जागीर और शासा...

ब्रॉनः म...म...म...मे... क्या...क...क...

मर्दानः घबराओ मत ब्रॉन... तुम्हें कोई मुश्किल फैसला नहीं करना... तुम्हारी जगह अक़्ल का अन्धा भी हो तो ज़िन्दगी को मौत पर तरजीह देगा।

अम्बीः जल्दी जवाब दे ब्रॉन... ताकि ये चाबी मैं तुम्हें वापस कर सकूं।

ब्रॉनः ठ...ठ...ठ... ठीक है... ल...ल... लाओ... च...च... चाबी...

अम्बीः चाबी जेब में रखता हुआ... सही वक़्त पर तुम्हें मिल जाया करेगी... समझे?... कल रात के तीसरे पहर...

ब्रॉनः प...प...पर...प...पर लार्ड

मर्दानः डरो मत ब्रॉन... हम लार्ड फिलिप के दोस्त हैं... मेजर दैदना हमारा मेहमान रहता है... कर्नल रास्वा को तेज़ और तल्ख़ शराब हम भी भेजते रहते हैं... अच्छा... तो कल दो पहर रात बीत जाने के बाद...

अम्बीः ये लो चाबी... हमें तुम पर यक़ीन है ब्रॉन... (अम्बी चाबी उछालता है और ब्रॉन झपट लेता है)

OO

दृश्य : 7

(पाली अपने शराबख़ाने में बोतलें और लकड़ी के गिलास इधर–उधर रख रहा है। सामने मैकीन और सरो बैठे हैं)

पृष्ठभूमि से तूफ़ानी हवा और बर्फ़बारी की आवाज़ें आ रही हैं। पाली दो गिलासों में 'अकी' निकालकर मैकीन और सरो को देता है। एक गिलास हाथ में लिये उनके सामने आकर बैठ जाता है।

मैकीनः (पाली गिलास हाथ में उठाता है। सरो और पाली भी अपने अपने गिलास उठाते हैं) भगवान् नाश करे अब्रील का!

सरो–पालः (एक साथ कहते हैं) भगवान् नाश करो अब्रील का!
(गिलास टकराते हैं और पीते हैं)

मैकीनः (गिलास फिर उठाकर) सम्राट ज़िन्दाबाद, सरमीनिया ज़िन्दाबाद, लार्ड फिलिप ज़िन्दाबाद, सूरमा ज़िन्दाबाद, लार्ड फ़िलिप ज़िन्दाबाद, सूरमा ज़िन्दाबाद!

सरोपालीः ज़िन्दाबाद, ज़िन्दाबाद (तीनों गिलास टकराते हैं और एक–एक घूंट पीते हैं।)

मैकीनः पाली आज सुबह सलामी के वक़्त तुम कहां थे?
(पाली कुछ घबरा जाता है)

पालीः मैकीन मैं... मैं... मेरी बच्ची बीमार है मैकीन... मैं...

मैकीनः (बात काटकर) लार्ड फिलिप सलामी के वक़्त गिनती करवाने लगे हैं... समझे तुम?

पालीः हां–हां... मैं कल से ज़रूर जाया करूंगा... ज़रूर।

मैकीनः तूफ़ानी बर्फ़बारी में भी हमारे दिल आग की तरह दहक रहे थे जब राष्ट्रीय गीत गाया जा रहा था, झण्डे को सलामी दी जा रही थी... लार्ड ने अपनी तक़रीर में साफ़ कह दिया है कि देशद्रोहियों की सज़ा सिर्फ़ मौत होगी... मौत... समझे?

पालीः हां,... हां समझ गया... (ठहरकर) लोग कैसे पटापट मर रहे हैं मैकीन... रोज़ आठ–दस की खप़बर आती है... सर्दी और भूख से ज़ालिम तो अब्रील की फ़ौज भी न होगी... ओफ़ ओफ़... हे भगवान् हमारा क्या होगा?

मैकीनः हिम्मत मत हारो मैकीन, फ़तेह हमारी ही होगी... लार्ड फिलिप ने ज़बरदस्त तैयारी की ली है।
(सर्दी से कांपता हुआ मरे–मरे क़दमों से चलता तान्वा अन्दर आता है और मैकीन को देखकर कुछ डर जाता है)

तान्वाः सरमीनिया ज़िन्दाबाद दोस्तो!

सभीः ज़िन्दाबाद! ज़िन्दाबाद!!!

पालीः तुम यहां फिर आ गये तान्वा?

तान्वाः और कहां जाऊं मेरे दोस्त? क़ब्र में जा सकता हूं या तुम्हारे पास आ सकता हूं... अफ़सोस कि क़ब्र में अपनी मर्ज़ी से नहीं पहुंच सकता... लेकिन तुम्हारे पास...

पालीः इधर बैठ जाओ।

तान्वाः पाली, मैं जमा जा रहा हूं... अब तो ज़बान तक एंठ गयी है... ऐसी बर्फ़बारी तो मैंने... सारी ज़िन्दगी नहीं देखी... ये अब्रील बदरूह है कमबख़्त है... बदरूह जो अब तक खुले आसमान के नीचे पड़ा है।

मैकीनः (उत्साह में) वह चूहे की तरह मार दिया जायेगा तान्वा... चूहे की तरह... समझे तुम...

तान्वाः काश! ऐसा ही हो मैकीन... काश! ऐसा ही हो... उसके कैम्प के ऊपर धुएं के बादल तो ये बताते हैं कि उसने आसपास के सारे जंगल और गांव बर्बाद कर डाले हैं...

मैकीनः अब उसके लिए रास्ते बन्द हैं पाली... न वो लौट सकता है और न हमला ही कर सकता है...

सरोः उसकी तोपें तो हर रात गरजती हैं... आधा शहर तो खण्डहर हो गया है...

मैकीनः तो लड़ाई में और क्या होता है सरो, ये कोई बच्चों का खेल है?

तान्वाः सुना है लार्ड फिलिप तहख़ानों में चले गये हैं...

मैकीनः (जलकर) तो तुम क्या उम्मीद करते हो लार्ड छत पर रहेंगे इन हालात में?

पालीः (तान्वा से) लो... पियो... लेकिन याद रखना कितनी 'अकी' पी गये हो... तुम्हें एक–एक पैसा चुकाना पड़ेगा।

(तान्वा झपटकर गिलास ले लेता है और एक सांस में खाली कर देता है)

तान्वाः तुमने मेरी जान बचाई है पाली... तुम... तुम... तुम देवता हो पाली... देवता...

पालीः तुम्हारी दी हुई पदवी से मेरा कुछ न बने–बिगाड़ेगा... समझे?

(गिली, सम्मी, राफ़ी और कैथी बन्दर आते हैं)

(पाली उन्हें अपेक्षा से देखता है और फिर पूछता है)

पालीः मैंने मना किा था तुम लोगों को यहां आने से?

सम्मीः प्यारे पाली... इतना जुल्म न करो...

राफ़ीः (जलकर) ज़िन्दा रहा तब...

कैथीः तुम नहीं मरोगे पाली!

पालीः क्यों? क्या मैंने अमृत पी रखी है!

तान्वाः नहीं, क्योंकि तुम अमृत पिलाते हो। (सब हंसते हैं)

कैथीः देखो, तुम्हारा शराबख़ाना किले के परकोटे के बिल्कुल नीचे है और ऊपर, झण्डा फहरा रहा है... लार्ड फिलिप किसी भी क़ीमत पर इस जगह की हिफ़ाज़त करेंगे।

(वेश्याएं नज़दीक आ जाती हैं। मैकीन तेज़–तेज़ सांस लेकर कुछ सूंघने की कोशिश करता है)

मैकीनः भगवान् क़सम... कई महीने बाद रोटी की सुगन्ध आ रही है... रोटी की सुगन्ध... आ रही है... रोटी की सुगन्ध आ रही है... रोटी की सुगन्ध... जैसे स्वर्ग का दरवाज़ा खुल गया हो...

(वेश्याएं डर जाती हैं उनके चेहरे उतर जाते हैं)

कैथीः सठिया तो नहीं गये हो मैकीन... अपनी नाक का इलाज कराओ... रोटी देखे तो महीनों हो गये हैं।

सम्मीः लगता है ज़्यादा पी गये हो।

राफ़ीः थोड़ी–सी और ले लो, लार्ड फिलिप के दस्तरख़ान तक पहुंच जाओगे।

मैकिनः भगवान् क़सम झूठ नहीं बोल रहा हूं। लाओ, 'अकी' लाओ!

(पाली उसके गिलास में अकी डाल देता है)

कैथीः पाली, थोड़ी हमें भी दे दो।

पालीः बिल्कुल नहीं... बिल्कुल नहीं...

राफ़ीः हम भी ठण्ड से मर रहे हैं पाली!

पालीः तो तुम अकेली तो नहीं हो, पता नहीं कितने हैं।

मैकीनः अच्छा पाली, तो हम चलते हैं... तुम इनसे निपटो।

(मैकीन और सरो चले जाते हैं)

गिलीः हम मुफ़्त थोड़ी मांग रहे हैं पाली!

पालीः (चौंकरकर हैरत से) पैसा दोगी?

गिलीः हां...

(राफ़ी सम्मी और कैथी डरकर सहमे हुए अन्दाज़ में गिली को देखती और चाहती हैं कि वो पैसा न निकाले)

कैथीः कहां है पैसा हमारे पास।

गिलीः (सर्दी से कांपते हुए) म... मेरे पास...

(पैसा निकालकर पाली को देती है। सब वेश्याओं के चेहरों का रंग उड़ जाता है। पाली ध्यान से पैसे को देखता है)

पालीः ये तो पीतल का टुकड़ा है... तुम्हें कहां से मिला... सुना तुमने... लार्ड का हुक्म है कि कोई भी धातू किसी के पास न मिलनी चाहिए...

गिलीः मुझे तो ये आज पड़ा मिला था।

पालीः (हंसकर अविश्वास से) इस बर्फ़ में?

तान्वाः मेरे दोस्त इन्हें अकी दे दो... ये टुकड़ा आतिशदान में डाल दो...

(पाली टुकड़ा आतिशदान में डाल देता है और घूरकर वेश्याओं को देखता है और गिलासों में अकी डालता है। वेश्याएं बेताबी से अकी की तरफ़ झपटती ळें और गिलास मुंह से लगा लेती है तथा अमृत की तरह पी लेती हैं)

○○

दृश्य : 8

(आतिशदान के सामने अम्बी और मर्दान बैठे पी रहे हैं। मर्दान के चेहरे पर फ़िक्र झलकती है। अम्बी लापरवाह है।)

मर्दानः लार्ड फिलिप ने पूछा नहीं कि इतना सोना कहां से आया?

अम्बीः (ज़ोर का ठहाका लगाकर) इतना तो बेवकूफ़ नहीं है अपना लार्ड... इस आफ़त के मारे माहौल में सोने की ईंट मिल जाये,

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

ये कम है क्या? हम व्यापारी हैं मर्दान... हमारे पास पैसा न होगा तो किसके पास होगा... और हम लार्ड की मदद करना चाहते हैं.. सम्राट् की... मुल्क की फ़िक्र है हमें... क्योंकि उन्हीं के ज़ेरे साया हम कारोबार करते हैं... ये तो बिल्कुल सीधी–सी बात है मर्दान!

मर्दानः लेकिन फिर भी अम्बी?

अम्बीः देखो, रात में जो सोने के सिक्के आते हैं वो सुबह होने से पहले गला दिए जाते हैं... क्या सूबूत है किसी के पास?

मर्दानः अगर रात में ही पकड़ लिए गये।

अम्बीः कौन पकड़ेगा? मेजर मैदना या कर्नल रास्वा... इन दो के अलावा... और कोई बड़ा अफ़सर नहीं है यहां...

मर्दानः फिर भी अम्बी!

अम्बीः तुम शक के मर्ज़ में गिरफ़्तार हो मर्दान जिसका कोई इलाज नहीं है... लेकिन डरकर कोई बेवकूफ़ी का ऐसा काम न कर बैठना कि...

मर्दानः नहीं, नहीं ऐसा क्यों करूंगा... लेकिन एक बात है अम्बी, इस मोहासिरे को अंजाम तक पहुंचना चाहिए... सोचो कि शहर पर अब्रील के कब्ज़े का क्या नतीजा होगा? ये सब हमने अब्रील के लिए किया है?

अम्बीः जंग कोई नहीं चाहता... अब्रील ये सोचकर नहीं चला था कि उसे सदी की सख़्ततरीन बर्फ़बारी का सामना करना पड़ेगा... उसकी आधी फ़ौज बर्बाद हो चुकी है... लार्ड फिलिप को ये यक़ीन था कि अब्रील बर्फ़बारी शुरू होते ही वापस चला जायेगा... और यहां के हालत का तुम्हें इल्म है... लार्ड फिलिप और हम जैसे चन्द लोगों को छोड़कर आदमी ठण्ड में मर रहा है... जिनमें सिपाही भी शामिल हैं और अम लोग भी... अनाज के भंडार तो पहले ही ख़त्म हो चुके हैं... मुझे डर है कहीं भूख और सर्दी से मरते लोग... अभी तीन–चार महीनों की सर्दियां बाक़ी हैं मर्दान... कोई नहीं कह सकता है कि इस दौरान क्या होगा? शहर के अन्दर ही कोई फ़साद उठ खड़ा हुआ तो क्या होगा? लार्ड फिलिप भी बेवकूफ़ है और अब्रील तो गधा है... यहां हालत ये है कि दोनों हार रहे हैं।

मर्दानः	अम्बी, तुम जो कुछ भी कह रहे हो ठीक है... सवाल ये है कि अब हो क्या?
अम्बीः	मेजर दैदना अभी यहां आयेंगे... उसने बात हो सकती है... लार्ड फ़िलिप की मजबूरी है कि वो मेजर दैदना की बात गम्भीरता से सुनें... है न?
मर्दानः	हों, है।
	(मेजर दैदना का प्रवेश जो भारी कोट और जूते पहने हैं। टोपी वग़ैरा भी लगाई हुई है।)
मेजर दैदनाः	काश! मेरी भी ऐसी ज़िन्दगी होती दोस्तो... आतिशदान के सामने तल्ख़ शराब के छोटे–छोटे घूंट लेते देखकर मुझे तुम लोगों से हसद हो रही है।
अम्बीः	मेजर जो कुछ भी है तुम्हारे रहमो–करम पर है... आओ बैठो।
	(मर्दान मेजर के लिए जाम बनाता है। मेजर जाम हाथ में लेकर)
मेजर दैदनाः	फ़तेह की कामना में।
	(तीनों जाम टकराते हैं)
अम्बीः	मेजर, तुम्हें यक़ीन है?
	(मेजर कुछ चौंक जाता है फिर संभलकर एक घूंट लेने के बाद कहता है)
मेज़र दैदनाः	मैं सिपाही हूं अम्बी, जब तक मैदाने– जंग में खेत न रहूं। यही कहूंगा कि मुझे यक़ीन है।
अम्बीः	लेकिन मेजर, जंगें सिर्फ़ मैदाने जंग में ही नहीं लड़ी जातीं... तुम्हें मालूम है कि अब्रील का क्या हाल है? हमारी ही तरह वो भी फंस चुका है... ये अब हमारे ऊपर मुनहसिर है कि हम मौक़े का कितना फ़ायदा उठा पाते हैं।
मेजर दैदनाः	लेकिन लार्ड फिलिप सिर्फ़ जनरल हैं... काश वो इसके अलावा कुछ और भी होता!
अम्बीः	मुझे तुमसे उम्मीद है मेजर... तुम उससे ज़्यादा तजुर्बेकार और समझदार हो।
मेजर ददैनाः	मेरी तरफ़ से की गयी पहल गद्दारी कहलायेंगी।

अम्बीः	रास्ता तो तलाश करने से मिलता है। (कुछ लम्हे ख़मोशी रहती है। मेजर ददैना उठकर टहलने लगता है। अम्बी उसे मानीख़ेज़ अन्दाज़ में देखता है)
मेजर दैदनाः	अब्रील अपनी क़सम नहीं तोड़ सकता।
अम्बीः	ये तुम कैसे कह सकते हो? अब्रील न छः महीने पहले ये क़सम खाई थी और आज ही सकता है उसे अपनी बेवक़ूफ़ी पर निदामत हो।
मेजर दैदनाः	चलो तुम्हारी बात मान ही लेता हूं लेकिन लार्ड फिलिप?
अम्बीः	काफ़ करो मेजर... लार्ड फिलिप से जो उम्मीदें थीं वे पूरी नहीं हो सकी हैं... एक शख़्स की हठधर्मी हम सबके लिए मौत की... अब्रील और लार्ड फिलिप के सामने बहुत कुछ रखा जा सकता है... अगर यहां हमारे सम्राट् होते तो क्या यही होता जो हो रता है? तुम्हें याद है गहरी घाटी वाली लड़ाई? ये बताओ टिस्किन की जंग में क्या हुआ था? जो वहां हुआ था यहां क्यों नहीं हो सकता?
	(मेजर ददैना फिर टहलने लगता है)
अम्बीः	सर्दी और भूख से फ़ौज का क्या हाल है? माफ़ करो मेजर, फ़ौज पस्तहिम्मती की किसी भी मंज़िल पर पहुंच सकती है... या ख़ैर मनाएं कि पस्तहिम्मती की वजह से अब तक गुस्से की वो चिंगारी नहीं भड़की है तो ऐसे मौक़े पर... लार्ड फ़िलिप सिर्फ़ अपने जज़्बे से सबके जज़्बात का अन्दाज़ा नहीं लग सकते? और क्या तुम्हें यक़ीन है कि शहर में या किले में अब्रील के जासूस...
मेजर दैदनाः	जासूस... अब्रील के जासूस...
अम्बीः	मेजर, कुछ भी हो सकता है... और हमारी ख़ामोशी तो बिल्कुल नाजायज़ है।
मेजर दैदनाः	ठीक है, मैं अपने तौर पर...
अम्बीः	हम दोनों तुम्हारे साथ हैं मेजर!
मेजर दैदनाः	हम तीनों एक साथ हैं।
	(अचानक एक आदमी घबराया हुआ आता है जो अम्बी का मुंशी जैसा लग रहा है।)
अम्बीः	कहो क्या बात है मुंशी?

मुंशीः लार्ड फ़िलिप छोटे फाटक पर हैं। यहां ब्रॉन हंटर बरस रहे हैं। शक है कि वो रात में फाटक खोलता था।

(सब उछलकर खड़े हो जाते हैं)

(अंतराल)

○○

दृश्य : 9

(छोटे फाटक पर भीड़ जमा है। लार्ड कुछ ऊंचाई पर खड़ा है। दर्शकों को नज़र नहीं आ रहा है। लार्ड नीचे खड़े ब्रॉन पर हंटर बरसता रहा है। प्रिंस के दाहिने और बाएं मेजर दैदना और कर्नल रास्वा भी खड़े हैं। हंटर मारने की तेज़ आवाज़ों के अलावा बिल्कुल ख़ामोशी है।)

लार्डः बता हरामी की औलाद... नहीं तो खाल खिंचवा लूंगा... बता (हंटर मारता है)... तुझे इस तरह मारूंगा कि तेरी मौत गद्दारों के लिए मिसाल बन जाएंगी (हंटर मारता है) बोल... तू बोलता क्यों नहीं (फिर हंटर मारता है) बता... बता... (आदेश देता है)

इसके कपड़े उतार दो... इसे नंगा कर दो... बर्फ़ पर गिरा दो इसे... (फिर हंटर मारता है)

(सिपाही आगे बढ़कर ब्रॉन के कपड़े खींचकर उतारते हैं। वह नंगा हो जाता है तो प्रिंस फिर हंटर बरसाने लगता है। उसी समय अम्बी और मर्दान मंच पर आते हैं। दोनों ऊपर लार्ड के पास आ जाते हैं।)

अम्बीः ये पता क्योंकर चला योर ऑनर!

लार्डः ये कमीना समझता था कि हम अब अंधे हैं... (हंटर मारता है)... सब गधे हैं!.... (हंटर मारता है) आज ऊपर महल की खिड़की से मैंने देखा कि छोटे फाटक के सामने बर्फ़ हटी हुई है... इसका क्या मतलब हुआ (हंटर मारता है)

अम्बीः यही कि छोटा फाटक खोला जाता है...

लार्डः (गुस्से से) हां, छोटा फाटक खोला जाता है... और एक रात अगर बदबख़्त अब्रील की फ़ौजें अंदर घुस आतीं और हमें काटकर यहां अपना झण्डा फहरा देतीं तो... (हंटर से फिर मारता है) गद्दारों की सज़ा मौत है... मौत! दूसरे ग़द्दारों को सबक़ सिखाने वाली मौत... (शासा को सभी वेश्याएं जकड़े हुए हैं। वह आगे जाने के लिए बेचैन है)

मर्दानः गद्दारों को इससे भी सख़्त सज़ा मिलनी चाहिए... पहले बता क्यों खोलता था फाटक... किसके लिए?

लार्डः तुम देखते जाओ मर्दान... मैं इसे इस तरह मारूंगी कि उसकी दूसरी मिसाल न मिलेगी और फिर इसकी लाश... अब्रीली फ़ौज के सामने फिंकवा दूंगा... (हंटर से मारता है)

(अचानक शासा अपने को छुड़ा लेती है और दौड़कर ब्रॉन के पास और प्रिंस के सामने आ जाती है)

शासाः मैं...

(उसके कुछ बोलने से पहले ही अम्बी चील की तरह उस पर झपटता है और उसका मुंह बंद करके उसे भीड़ की तरफ़ धक्का देता है)

(शासा को गिली और दूसरी औरतें पकड़ लेती हैं)

लार्डः कौन है ये लड़की!

मर्दानः इसकी (ब्रॉन की तरफ़ इशारा करके) प्रेमिका।

लार्डः बुलाओ इस लड़की को।
गिलीः लार्ड... म... मैं... मैं... (आगे बढ़ती है)
अम्बीः चुप रहो नापाक रण्डियो! लार्ड अभी फैसला कर देंगे।
मर्दानः हम तुम सबको जानते हैं हरामज़ादियो... इधर जाओ... इधर... इन रण्डियों को यहां लाओ।
अम्बीः हुजरेआली... अभी दूध का दूध और पानी का पानी अलग हो जाएगा...
लार्डः कैसे अम्बी?
अम्बीः अभी बताता हूं सरकार।
गिलीः मैं बताती हूं हुज़ूर...
अम्बीः (चीख़ता है) अपनी गंदी जुबान बंद रख कमीनी कुतिया...
गिलीः (चिल्लाकर) मैं जानती हूं...
अम्बीः (बहुत ज़ोर से) मैं जानती हूं...
लार्डः इन रण्डियों पर हंटर बरसाओ।
अम्बीः हुज़ूरेआली, हमारे सरताज, हमारे संरक्षक और मादरे वतन के मुहाफ़िज़... हंटर बरसाने से कहीं अच्छा होगा कि इनकी तलाशी ली जाए...
प्रिंसः (उछलकर) तलाशी... हां इन रण्डियों की तलाशी लो...
गिलीः मैं बता...
लार्डः (चिल्लाकर) ख़ामोश... (सिपाहियों से) कुतियों को एक—एक करके सामने लाओ।

(पहले गिलीं खींचकर लार्ड जाती है। तलाशी होती है तो उसके पास कुछ नहीं है। उसके बाद समी को लाते हैं। उसके पास भी कुछ नहीं है। राफ़ी और कैथी के पास भी कुछ नहीं किनलता और अंत में शासा की तलाशी होती है। उसकी जेब से रोटी का एक सूखा टुकड़ा निकलता है जिसे देखकर गिली चीख़ती है)

गिलीः ये... मे...
अम्बीः (उसका वाक्य पूरा होने से पहले) ये देख रहे हैं शहज़ादेआली... ये रोटी का टुकड़ा... (टुकड़ा लेकर लार्ड के पास जाता है और उसे टुकड़ा दिखाता है)

गिलीः ये मेरा है... मेरा है... (सामने आ जाती है पर उसे कोई नहीं सुनता।)
अम्बीः ये सबसे बड़ा सबूत है शहज़ादे आली... इस तरह की रोटी हम तो पकाते नहीं... ये रोटी, कौन नहीं जानता किस देश के लोग बनाते हैं... ये रोटी... यहीं कौन बना सकता है अब्रील के सिपाहियों के अलावा जो हमारे ख़ून के प्यासे हैं...
मर्दानः इसे वे 'नीम्का' कहते हैं।
लार्डः (रोटी के टुकड़े को देखते हुए)... नीम्का...
अम्बीः हुज़ूर, हो गया न दूध का दूध और पानी का पानी अलग।
ब्रॉनः (चिल्लाता है) न... न... न...
लार्डः (गंभीर ऊंची आवाज़ में) मैं हुक्म देता हूं कि इस लड़की की दोनों टांगों में दो रस्सियां बांधी जाएं और उन दोनों रस्सियों के सिरे दो घोड़ों की ज़ीन से बांधकर घोड़ों को अलग—अलग दिशाओं में दौड़ा दिया जाए और जब तक इस लड़की के जिस्म के दो टुकड़े न हो जाएं... तब तक घोड़े दौड़ाए जाते रहें।
ब्रॉनः (चीख़ता है)न... न.... न
गिलीः (चीख़ती है) नहीं... नहीं... इसने कुछ नहीं किया... ये रोटी मेरी है। मेरी है... मेरी है... मेरी।
लार्डः (गिली की बात को ध्यान से सुन लेता है) क्या कह रही है रण्डी!
अम्बीः (लापरवाही से) अपनी लड़की की जान बचाने के लिए अपनी जान देना चाहती हैं या रण्डी...
प्रिंसः हमारा हुक्म अपनी जगह क़ायम है।
गिलीः (चीख़ते राते हुए) नहीं... नहीं...
ब्रॉनः म... म... म...
लार्डः सरकार... (कुछ ऐसे स्वर में बोलता है जैसे शासा की सज़ा कम कराना चाहता हो)
लार्डः (शक से सार्जेण्ट को देखकर जिसमें नफ़रत और बदला लेने का भव भी शामिल है) सार्जेण्ट, तुम इसकी सज़ा कम कराना चाहते हो।

सार्जेण्टः (खुशामदी लहजे में) क्या इसे फांसी नहीं दी जा सकती हुज़ूर?

लार्डः ठीक है... एक घोड़े पर तुम बैठोगे सार्जेण्ट... यह भी हुक्म है।

रास्वाः लड़की के पैर में रस्सियां बांध दी गयीं हुज़ूर!

लार्डः सार्जेण्ट को एक घोड़े पर बिठाओ।

सार्जेण्टः ब... ब... न... ह...

लार्डः हुक्म बजा लाओ... मेरे हंटर की आवाज़ सुनते ही...

गिलीः (चीख़ती है) नहीं... नहीं... ये...

लार्डः हंटर की आवाज़ सुनते ही घोड़ों को दौड़ा दो... समझे सार्जेण्ट. ..

(लार्ड हवा में हण्टर उठाता है और अचानक आवाज़ के साथ फटकारता है। घोड़ों के हिनहिनाने, शासा की चीख़ और वेश्याओं के रोने और ब्रॉन के चीख़ने की आवाज़ के साथ लार्ड का ठहाका गूंजता है)

OO

दृश्य : 10

(अम्बी आतिशदान के सामने बैठा है। मर्दान बेचैनी से टहल रहा है उसके चेहरे पर परेशानी और डर है। वह रुककर अम्बी को घूरता है और टहलने लगता है।)

मर्दानः हम बुरी तरह फंस चुके हैं अम्बी... न यहां रह सकते हैं और न भाग सकते हैं। बाहर अब्रील की फ़ौज और बर्फ़ीले तूफ़ान। अंदर मुल्क से गद्दारी की सज़ा मौत... इनमें से हमें कुछ चुनना होगा।

अम्बीः मर्दान, तुम बहुत जल्दबाद हो... घबरा भी जल्दी जाते हो... अपने आसाब पर क़ाबू भी नहीं रख पाते और ऐसी हालत में तुम्हारे सोचने समझने की ताक़त ख़त्म हो जाती है...

मर्दानः (बिगड़कर) बकवास मत करो अम्बी... ये सब कुछ तुम्हारी ही किया धरा है।

अम्बीः हां, जब तुम सोने की ईंट गिन रहे थे तब मुझे दुआएं दे रहे थे... तुमने भी कम नहीं कमाया है।

मर्दानः लेकिन मैं फांसी पर नहीं चढ़ना चाहता... राजधानी में मेरा घर है...

अम्बीः इस तरह कह रहे हो जैसे मैं तो बिल्कुल बेघर हूं... जितनी फ़िक्र तुम्हें अपनी जान की है, उससे कम मुझे अपनी जान की नहीं है, समझे?

मर्दानः तो तुमने क्या सोधा है अम्बी!

अम्बीः सोचने का वक़्त दो...

मर्दानः वक़्त दूं... वक़्त... क्या अहमक़ाना बातें कर रहे हो अम्बी... अगर अभी ब्रॉन सब कुछ सच–सच बता दे तो क्या हो?

अम्बीः ब्रॉन के पास कोई सबूत नहीं है।

मर्दानः लार्ड उसकी जुबान को ही सबसे बड़ा सुबूत मानेगा... समझे... ये जंग का ज़माना है... अदालतें नहीं लगाई जाएंगी...

अम्बीः ब्रॉन की हालत ठीक नहीं है... वह ज़िन्दगी और मौत के दरम्यान है... बेहोश पड़ा है।

मर्दानः उसे होश आ गया तो? मैंने सुना है उससे तहक़ीक़ात करने का काम लार्ड ख़ुद करेगा।

अम्बीः करने दो... उससे पूछा तो उसी वक़्त जाएगा न, जब उसे होश आ जाएगा।

मर्दानः तुम इतने यक़ीन के साथ कैसे कह सकते हो कि उसे होश नहीं आएगा।

अम्बीः हां, मैं यक़ीन के साथ नहीं कह सकता।

मर्दानः तो कुछ करो अम्बी... कुछ करो।

अम्बीः (सोचकर) अपना और तुम्हारा सरमाया... एक जगह इकट्ठा करते हैं।

मर्दानः क्या तुम हयां से भागना चाहते हो? कहां जाओगे?

अम्बीः पहली बात तो ये है कि मैं भागना नहीं चाहता... वो तो आख़री... बिल्कुल आख़री हल होगा।

मर्दानः लेकिन अगर गए तो कहां जाओगे।

अम्बीः सुनना चाहते हो?

मर्दानः हां बताओ।

अम्बीः अब्रील के पास।
(मर्दान उछल पड़ता है और ज़्यादा घबरा जाता है)

मर्दानः वो हमें क़त्ल करो देगा और सब कुछ ले लेगा।

अम्बीः ये भी हो सकता है कि ऐसा न हो... उसे हम अपनी कमाई... हुकूमतों के हक़ में है कि वो कारोबारियों की हिफ़ाज़त करें।

मर्दानः हमारे ख़ानदान राजधानी में हैं अम्बी!

अम्बीः वो तो कोई बड़ी बात नहीं है मर्दान, उन्हें बाहिफ़ाज़त कहीं भी बुलाया जा सकता है... और मान लो अब्रील ने सूरमा फ़तेह कर लिया तब?

मर्दानः ये तो... बहुत बड़ा जुआ खेल रहे हो तुम।

अम्बीः लेकिन शायद उसकी नौबत न आए... मेजर दैदना काउंसिल की मीटिंग के बाद यहीं आएंगे... उनसे हालात का पता लगाने के बाद ही कुछ तय किया जा सकता है।

मर्दानः या ख़ुदा... ये सब क्या हो गया।

अम्बीः थोड़ी–सी शराब और लो मर्दान...
(मर्दान अपने गिलास में शराब डालकर ग़टागट पी जाता है और टहलने लगता है। अम्बी आतिशदान की आग को घूरने लगता है। कुछ लम्हे दोनों ख़ामोश रहते हैं)
(मेजर दैदना का प्रवेश)

अम्बीः ख़ुश आमदीद मेजर... ख़ुशआमदीद...

मेजर ददैनाः (अपने कपड़ों से बर्फ़ झाड़ता हुआ) मीटिंग ज़रा लम्बी चल गयी... लार्ड ब्रॉन वाले वाक़ए से बहुत परेशान हो गए हैं... उन्हें लग रहा है कि शहर और क़िले में अब्रील ने जासूसों का जाल बिछा दिया होगा...

अम्बीः लो... ये लो...
(मेजर दैदना शराब लेकर आतिशदान के पास बैठ जाता है और तीनों जाम टकराते हैं)

तीनों एक साथः (जाम टकराते हुए) फ़ेतेह की कामना में।

अम्बीः ब्रॉन ने कुछ बताया?

मेजर दैदनाः वो अभी तक बेहोश है।
(कुछ लम्हे कोई कुछ नहीं बोलता)

मेजर दैदनाः मसला पेचीदा है... रोटी का टुकड़ा शासा के पास से ही निकला... बाक़ी रण्डिों के पास कुछ भी बरामद नहीं हुआ...

अम्बीः लार्ड का फ़ैसला बिल्कुल हक–ब–जानिब था... सुबूत न हो तो जुर्म साबित न होता।

मेजर दैदनाः लेकिन... ऐसा हो नहीं सकता कि इस मामले में और लोग शामिल न हों।

अम्बीः बिल्कुल... ये तो ब्रॉन ही बता सकता है... और ब्रॉन को मैं अच्छी तरह जानता हूं।

मेजर दैदनाः (हैरत से) तुम... तुम... ब्रॉन...?

अम्बीः हां, तुम्हें हैरत तो होगी... कहां एक मामूली हकला सिपाही और कहां मैं... लेकिन दोस्त ये ज़िन्दगी दिलचस्प अजायबख़ाना है।

मेजर दैदनाः कुछ खुलकर बताओ अम्बी... बात क्या है?

अम्बीः फिलहाल तुम्हारे काम की बात बताता हूं... मैं पूरी दुनिया में अकेला आदमी हूं जो ब्रॉन से सच कुबुलवा सकता है।

मेजर दैदनाः (हैरत से) अच्छा... वो कैसे?

अम्बीः मैं तुम्हें दिखा सकता हूं... जब उसे होश आ जाए तो मुझे ले चलना उसके पास और देख लो।

मेजर दैदनाः बहुत ख़ूब।
(कुछ देर के लिए ख़ामोशी)

अम्बीः मेजर, तीसरे मोर्चे पर क्या हो रहा है?

मेजर दैदनाः तीसरा मोर्चा? (कुछ समझकर) हां–हां समझा... काम तेज़ी से हो रहा है और बुरा नहीं है... अभी तो बस इतना ही बता सकता हूं।

अम्बीः तो उम्मीद रखी जाए।

मेजर दैदनाः इसमें कोई दुश्वारी नहीं है।

अम्बीः मेरी ख़बर तो ग़लत नहीं थी?

मेजर दैदनाः नहीं, दरअसल वो कोई ख़बर नहीं थी। हम सबको ये यक़ीन है और था कि अब्रील भी हमारी ही तरह घिरा हुआ है... ज़रा सोचो उसे कुमक कहीं से नहीं मल सकती, लेकिन बर्फ़बारी थमते ही राजधानी से, जो यहां से सिर्फ़ पांच सौ मील है, हमारी फ़ौजें आ सकती हैं... जो यहां न सही तो रास्ते में अब्रील को घेर ही सकी हैं... और सूरमा को तबाह करने के

बाद लुटे पिटे लश्कर के साथ अब्रील के लिए ये नामुमकिन होगा कि वो हमारी ताज़ादम फ़ौज से लड़ सके... और अब्रील अगर सम्राट के हाथ लग गया तो उसका क्या हश्र होगा इसका अंदाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है... लेकिन इस सबका ये मतलब भी नहीं है कि अब्रील यहां से ख़ाली हाथ लौट जाएगा।

अम्बीः ख़ाली हाथ या अपना झण्डा फहराए बग़ैर?

मेजर दैदनाः दोनों बातें एक ही हैं... बहरहाल तीसरे मोर्चे को मैंने अपनी ज़िन्दगी की क़ीमत पर खोल दिया है।

अम्बीः ओहो।

○○

दृश्य : 11

(पाली के शराबख़ाने में कैथी, सम्मी, राफ़ी और तान्वा चुपचाप बैठे हैं। पाली ख़ामोशी से अपना काम कर रहा है। उनके चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई है। बाहर से रह–रह कर तूफ़ानी हवा में झोंकों की आवाज़ आती है।)

पालीः गिली कैसी है?

(कोई जवाब नहीं देता)

तान्वाः कैसा बेढंगा सवाल पूछ रहे हो पाली!

(पाली ख़ामोश रहता है)

कैथीः (धीरे से) वो हम सबके लिए मारी गयी।

पालीः (आश्चर्य से) तुम सबके लिए?

कैथीः हां...

पालीः कैसे? मैं समझा नहीं।

कैथीः मत समझो पाली... अब उसमें क्या रखा है!

(राफ़ी धीरे–धीरे एक ग़मगीन धुन गुनगुनाते लगती है। उसका साथ सम्मी और कैथी भी देते हैं। धुन साफ़ हो जाती है। उसे समझकर पाली डर जाता है।)

पालीः देखो भगवान् के लिए... वो गीत यहां न गाना...

राफ़ीः यहां और कौन है पाली!

पालीः किसी ने सुन लिया तो मैं भी... मैं भी फांसी पर लटका दिया जाऊंगा...

सम्मीः वो गाना तो हर घर में गाया जा रहा है... हर घर में लोग चुपके–चुपके गाते हैं।

पालीः उन्हें गाने दो... लेकिन भगवान! के लिए यहां न गाओ... तुमने लार्ड फिलिप का एलान नहीं सुना कि वो गाना गाना जुर्म है... उनकी सज़ा...

कैथीः (बात काटकर) पकड़े हम जाएंगे पाली... तुम नहीं...

पालीः फिर भी यहां...

तान्वाः चलो गा लो... आवाज़ कम रखना।

(पाली घुरकर तान्वा को देखता है। सभी वेश्याएं लकड़ी के गिलास मेज़ पर उसी धुन में बजाती हैं और फिर गाने लगती हैं–

एक कली थी, खिल न सकी
एक खुशबू थी, उड़ न सकी
हाय उड़ न सकी
एक कली थी, खिल न सकी
एक खुशबू थी, उड़ न सकी
हाय उड़ न सकी
खिलते फूलों की ताज़ा महक
उड़ते पंछी की मीठी चहक
हाय उड़ न सकी

(पाली डरा हुआ दरवाज़े तक जाता है। आबहर देखकर ज़ोर से कहता है)

पालीः बंद करो... बंद करो... कोई इधर आ रहा है।

(गाना बंद हो जाता है। लेकिन धुन गुनगुनाई जाती रहती है)

(मैकीन और सरो अंदर आते है।। दोनों बर्फ़ झाड़ते हैं)

मैकीनः सरमीनिया ज़िन्दाबाद दोस्तो!

(कोई जवाब नहीं देता)

मैकीनः (फिर कहता है) सरमीनिया ज़िन्दाबाद।

पालीः (धीरे से) ज़िन्दाबाद!

मैकीनः (इधर–उधर देखकर) औरतो! मुझे उस लड़की की मौत का सख़्त अफ़सोस है।

(कोई कुछ नहीं बोलता)

मैकीनः लेकिन मुल्क से ग़द्दारी करने की सज़ा और क्या हो सकती है? सोचो, मुल्क से, सम्राट से ग़द्दारी... (कोई कुछ नहीं बोलता) हां, उसे फांसी दी जाती तो ज़्यादा बेहतर होता... ज़्यादा... (रुक जाता है। कोई कुछ नहीं बोलता) पाली, ब्रॉन की कोई ख़बर है? उसे होश आया या नहीं...

पालीः सुना है उसे अभी होश नहीं आया है।

कैथीः मैकीन हमारी सिफ़ारिश लार्ड फिलिप से कर देना।

मैकीनः (हैरत से) क्या सिफ़ारिश?

कैथीः हमें फांसी पर ही लटकाया जाए।

मैकीनः (हैरत से घबराकर) क्यों... क्यों...

कैथीः हमने ज़्यादा बड़ी ग़द्दारी की है...

मैकीनः क्या बक रही हो लड़की!

कैथीः ये सच है। ब्रॉन को होश आने दो वह सब बताएगा।

मैकीनः क्या बताएगा?

कैथीः वह बताएगा कि वो रात में फाटक की खिड़की हम चार जनों के लिए खोलता था और हम चार जनें जाती थीं। अब्रील की छावनी में–पेश करने–समझे और वहां से हमें रोटी मिलती थी–रोटी जिसकी ख़ुशबू तुमने एक दिन सूंघी थी–

मैकीनः (गुस्से में कांपते हुए) तो असली बात ये है!

कैथीः हां और ये भी कि शासा बेकुसूर थी... रोटी उसे गिली ने दी थी... गिली ने... ताकि शासा भूख से न मर जाए...

मैकीनः (गुस्से में) मुझे अफ़सोस है औरतो, तुम सबको देशद्रोह की सज़ा मिलेगी।

कैथीः हां, क्योंकि यहां इस शहर में रोटी देकर हमारे साथ रात गुज़ारने वाला कोई न था... होता तो हम ये ग़द्दारी न करते... समझे... वैसे मैकीन... जिस्म बेचकर पेट भरना कहां की ग़द्दारी है... देशद्रोह है?

मैकीनः हुक्म था कि कोई बाहर न जाए... बाहर जाना और अब्रील के कैम्प में पेशा करना क्या है, अगर देशद्रोह नहीं है?

कैथीः ठीक है मैकीन, हमें फांसी हो जाएगी... लेकिन ये बताओ... अब्रील की छावनी में सूरमा का अनाज बेचना क्या है? तुम क्या कहोगे?

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

मैकीनः अब्रील की छावनी में सूरमा का अनाज?

कैथीः हमारे पास बेचने के लिए जिस्म है, जबकि अम्बी और मर्दान के पास अनाज था...

मैकीनः (हैरत और दुःख से) अम्बी और मर्दान न अब्रील के कैम्प में अनाज बेचा है?

कैथीः सोने के भाव।

मैकीनः (बहुत गुस्से में) क्या सबूत है तुम्हारे पास?

कैथीः हम चाारों ने अपनी आंखों से देखा है... ब्रॉन ने भी...

मैकीनः (बहुत गुस्से में कांपता हुआ) तब तो मैं... मैं लार्ड फिलिप के पास जाता हूं और सब उन्हें बताता हूं।

कैथीः जाओ मैकीन जाओ... हमें ये उम्मीद थी कि शायद अब्रील के कैम्प में पेशा करके जान बच जाएगी... लेकिन जब... पर तुम जाओ...
(मैकीन गुस्से में खड़ा हो जाता है)

पालीः मैकीन बैठ जाओ।

मैकीनः (गुस्से में) क्यों?

पालीः मैकीन, कौन नहीं जानता कि मेजर दैदना और कर्नल रास्वा अम्बी के पक्के दोस्त हैं।

मैकीनः तो... तो... तो क्या हुआ... ग़द्दार... ग़द्दार है।

पालीः अम्बी ने लार्ड फिलिप को सोने की ईंटें दी हैं... जानते हो?

मैकीनः वो तो... वो तो लड़ाई के ख़र्च के लिए... लेकिन मैं ज़रूर जाऊंगा लार्ड के पास।

सरोः लार्ड के पास... वैसे कोई पहुंच भी नहीं सकता।

मैकीनः (गुस्से में) क्यों नहीं... मैं जाऊंगा और सब बताऊंगा...

तान्वाः इस पूरे मामले की तहक़ीक़ात मेजर दैदना कर रहे हैं, तुम्हें मालूम है? हां फ़ौज के सबसे बड़े अफ़सर मेजर दैदना... जिनके सीने पर इतने तमग़े जगमगाते हैं कि तुम जैसों की आंखें भी नहीं खुली रह पातीं।

मैकीनः लेकिन मैं रुक नहीं सकता।

तान्वाः तो जाओ... शहर में अफ़वाहों फैलाने वालों को भी सख़्त सज़ाएं दी जा रही हैं... तुम बूढ़े होने के बावजूद बच्चे हो मैकीन... मेजर दैदना को अगर चुनना होगा... तुम्हारे और अम्बी

के दरमियान तो वो अम्बी को चुनेंगे... अम्बी की पहुंच तो राजदरबार तक है... क्या तुम्हें नहीं मालूम? अम्बी की पत्नी सम्राट के भाई की रिश्तेदार है... तुम अम्बी को क्या समझते हो?

(धीरे–धीरे मैकीन का गुस्सा कम होता जाता है)

पालीः पहुंच और पैसेवालों पर उंगली उठाने से पहले अच्छी तरह...

तान्वाः चांद पर थूककर देखा है कभी?

कैथीः नहीं... नहीं... जाओ मैकीन, जाओ... (मैकीन जो बेठ चुका है फिर खड़ा हो जाता है)

मैकीनः मैं... मैं ज़रूर जाऊंगा...

तान्वाः जा रहे हो तो मुझे भी इंसाफ़ दिल देना... देखा मेरी उंगलियां वह तोप गाड़ी बनाते हुए कटी थी जिसने मैदाने जंग में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए थे... राजधनी में बड़ा जश्न मनाया गया था... तोप का मोआयाना ख़ुद सम्राट ने किया था... तो वैसा तोप गाड़ी बनाने वाला तान्वा... भिखारी है... च च च च च...

पालीः बैठ जाओ मैकीन... तुमने यह नहीं सुना क्या कि बड़े लोग, ऊंचे लोग जो करते हैं ठीक करते हैं। इन हालात में शिकायत लेकर तुम जा तो सकते हो लेकिन वापस नहीं आ सकते, समझे?

(मैकीन हैरत, दुःख और गुसे से सबको देखता है फिर चेहरे पर असहाय होने के भाव उभरते हैं। वह बैठ जाता है पाली उसके सामने गिलास रख देता है। वह ऐ सांस में गिलास ख़ाली कर देता है। वेश्याएं लकड़ी के गिलास मेज़ पर बजा कर उसी गाने की धुन बजाने लगती हैं और गुनगुनाती हैं जो पहले गाया था। धीरे–धीरे गाने की आवाज़ तेज़ होती जाती है। पूरा गाना शुरू हो जाता है। मैकीन और सरो को छोड़कर बाक़ी लोग गाने में शामिल हो जाते हैं। बाहर से तूफ़ानी हवा में थपेड़ों की आवाज़ें यदाकदा आती रहती हैं।)

OO

दृश्य : 12

(जेल की कोठरी में ब्रॉन बैठा है उसे देखकर लगता है कि वह आधा विक्षिप्त हो चुका है। आंखों में वहशत है, बात बेतरतीब हैं लेकिन उसने सिपाही वाले कपड़े ही पहन रखे हैं। कोठरी के अंदर अम्बी आता है। कोठरी में रोशनी कम है। रोशनदान से रोशनी की एक 'बीम' अंदर आकर फ़र्श पर पड़ रही है। अम्बी के आने की आहट सुनने के बाद भी ब्रॉन सिर नहीं उठाता। वह गुमसुम बैठा है। अम्बी उसके पास जाता है और धीरे से कहता है)

अम्बीः ब्रॉन... ब्रॉन

(ब्रॉन सिर उठाकर अम्बी को देखता है और उछलकर खड़ा हो जाता है उसे हैरत होती है कि अम्बी वहां कैसे आ गया।)

ब्रॉनः त... त... तु...

अम्बीः मुझे अफ़सोस है ब्रॉन कि मैं तुमसे जब भी मिलता हूं तो हालात ऐसे होते हैं कि तुम हैरत में पड़ जाते हो...

ब्रॉनः त... त... तुम... य यहां कैसे अ... आ गए?

अम्बीः इस सवाल का जवाब बहुत आसान भी है और बहुत मुश्किल भी... लेकिन मैं इस सवाल का जवाब देकर तुम्हारा और अपना वक़्त बर्बाद नहीं करना चाहता।

ब्रॉनः त... तुम... शासा... के... क... कातिल हो।

अम्बीः नहीं, ब्रॉन शासा के अंजाम पर तो मुझे बहुत अफ़सोस है... हक़ीक़त में अफ़सोस है... वो तो कहो... बस वो चपेट में आ गयी... मुझे ये यक़ीन न था कि सुबूत उसी के पास से मिला होगा...

ब्रॉनः म... मैं... ल... ल... लार्ड से... स... सब... कुछ... ब... बता... दूंगा... स... समझे?

अम्बीः तुमसे यही उम्मीद की जाती है ब्रॉन।

ब्रॉनः त... त... तुम भी फांसी... प... पा... पाओगे।

अम्बीः मैं फांसी के तख़्ते पर नहीं लटकना चाहता ब्रॉन... मैं तुम्हारा मुजरिम हूं और चाहता हूं कि अगर मुझे सज़ा मिले तो तुम्हारे हाथ से मिले... समझे?

ब्रॉनः न... न... नहीं... त... त... तुम क्या कह रहे हो।

अम्बीः मैंने जो कुछ कहा है, साफ़ लफ़्ज़ों में कहा है... उसमें ऐसा कुछ नहीं है जो तुम्हारी समझ में न आता हो...

ब्रॉनः त... त... तुम... च... चाहते क्या हो?

अम्बीः क्या तुमने आख़िरी फ़ैसला कर लिया है कि लार्ड फिलिप को सक कुछ साफ़–साफ़ बता दोगे?

ब्रॉनः हां... क... क... कर लिया है...

अम्बीः तो लो तुम ही मुझे सज़ा दो...
(अम्बी एक पिस्तौल जेब से निकालकर ब्रॉन की तरफ़ उछालता है और ब्रॉन उसे हाथों में 'कैच' कर लेता है)

अम्बीः ब्रॉन, चलाओ गोली...
(ब्रॉन खड़ा हो जाता है। पिस्तौल तानता है, घुरकर नफ़रत से अम्बी को देशता है और फायर कर देता है। जोर की आवाज़ होती है, लेकिन अम्बी को कुछ नहीं होता। अम्बी फौरन अपनी दूसरी जेब से पिस्तौल निकालता है और ब्रॉन के थोड़ा नज़दीक जाकर फायर करता है। ब्रॉन को गोली लगती है और बो गिर जाता है। तड़पता है। अम्बी दूसरा फायर करता है। उसी वक़्त मेजर दैदना घबराया हुआ अंदर आ जाता है और ब्रॉन को पड़े देखता है।)

मेजर दैदनाः अम्बी... ये क्या हुआ...

अम्बीः (इत्मीनान से) मैं बात... बाल बच गया मेजर। इसने मेरे ऊपर गोली चला दी थी..

मेजर दैदनाः तुम्हारे ऊपर गोली...? इसके पास पिस्तौल कहां से आई?

अम्बीः ये तो तुम ही लोग बता सकते हो... लेकिन देखो... वो पिस्तौल है... जिससे इसने गोली दाग़ी थी।
(मेजर दैदना ब्रॉन के पास जाकर पिस्तौल देखता है और उसे उठा लेता है)

मेजर दैदनाः ये... ये तो... उस तरह की पिस्तौल है जो अब्रीली इस्तेमाल करते हैं।

अम्बीः मैं क्या जानूं मेजर... मैंने आज तक अब्रीलियों की पिस्तौल नहीं देखी।

मेजर दैदनाः लेकिन ये पिस्तौल आई कहां से ब्रॉन के पास... वो तो नंगा कर दिया गया था... और बेहोशी के आलम में यहां लाया गया था।

अम्बीः इन सवालात के जवाब तो शायद तुम्हारे वो सिपाही और पहरेदार देंगे जो यहां तैनाते थे या हैं।
(मेजर दैदना सोचने की मुद्रा बनाता है)

मेजर दैदनाः लेकिन वो तुम्हें क्यों मारना चाहता था?

अम्बीः तुम्हें याद है मेजर, मैंने तुमसे कहा था कि मेरे और ब्रॉन के दरम्यान एक रिश्ता था... अब चूकि उस रिश्ते के दो सिरे नहीं रहे इसलिए उसके बारे में बताया जा सकता है।
(कुछ ठहरकर)

अम्बीः मैं और ब्रॉन एक–दूसरे के दुश्मन थे... यानी मैं शासस को हासिल करना चाहता था... उसका दीवाना था... उसे हासिल करने के लिए सब कुछ करने पर तैयार था... वो मेरी ज़िन्दगी का एक बड़ा मक़सद बन गयी थी... और मुझसे... तुम अच्छी तरह समझ सकते हो... मुझसे... इस सिलसिले में जो कुछ हो सकता था मैंने किया था और एक वक़्त ऐसा भी आ गया था कि शासा इसे (ब्रॉन की तरफ़ इशारा करके) छोड़कर मेरे पास आने के लिए तैयार हो गयी थी। ब्रॉन को इसका पता चल गया था... हम दोनों एक–दूसरे से बेतहाशा नफ़रत करने लगे थे... एक दूसरे के ख़ून के प्यासे थे।... लेकिन वो सिपाही था... और मैं... और अब शासा के क़त्ल कर दिया जाने के बाद इसके इन्तिक़ाम का जज़्बा भड़क गया...

मेजर दैदनाः तुम क्या समझते हो लार्ड फिलपि को...

अम्बीः नहीं, नहीं दोस्त... उन्हें ये सब मत बताना... तुम जानते हो मेरी बीवी से उनका क्या रिश्ता है... मैं नहीं चाहता कि ये बात शाही दरबार तक पहुंचे।

मेजर दैदनाः फिर?

अम्बीः मैं यहां आया ही नहीं... तुम यहां आए। तुमने ब्रॉन से हक़ीक़त जाननी चाही और उसने निकल भागने की कोशिश की। तुमने गोली चलाई और ब्रॉन मारा गया।
(मेजर दैदना कुछ शक करने वाले अंदाज़ में अम्बी को देखता है। अम्बी उसके कंधे पर हाथ रख देता है। मेजर दैदना के चेहरे के भाव सामान्य हो जाते हैं।)

OO

दृश्य : 13

(मंच पर अंधेरा है। डुग्गी पीटने की तेज़ आवाज़ के साथ–साथ भारी और आधिकारिक आवाज़ में की जाने वाली घोषणा सुनाई पड़ती है। घोषण के साथ–साथ मंच पर प्रकाश आता है। गिली एक कोने में जड़ बैठी है। सम्मी, कैथी और राफ़ी भी डरी हुई–सी एक दूसरे से सटी बैठी हैं। पाली सामने बैठा है। मैकीन और सरो भी एक कोने में खड़े हैं। तान्वा लगातार अपने सीने पर क्रास के चिन्ह बनाकर कुछ बड़बड़ा रहा है)

घोषणाः शहर के सभी बाशिन्दे... ख़ासो आम... सुनो लार्ड फिलिप का आदेश है... सख़्त आदेश है... जिसे न मानने की सज़ा फांसी है... कि कोई अपने... अपने घरों से... बाहर नहीं निकलेगा... कोई अपने... अपने घरों में बाहर नहीं निकलेगा...
(डुगडुगी की आवाज़ दूर होती चली जाती है)

मैकीनः ये क्या हो रहा है भगवान्... क्या हो रहा है... तू हम सब अपने बंदों पर रहम कर... हमें...

तान्वाः (बात काटकर) क्या हो रहा है, ये कैसे पता चलेगा... सरो... क्या तुम बाहर जा सकते हो? तुम तो सिपाही हो...

मैकीनः नहीं... नहीं... हुक्म है कोई नहीं जा सकता... सरो, तुम मत जाना बेटे... हम मरेंगे तो साथ...

तान्वाः ठीक है तो मैं ही देखता हूं...

पालीः पागल मत बनो तान्वा... जब एलान कर दिया गया है तो तुम बाहर क्यों जाना चाहते हो?

तान्वाः ये देखने के लिए कया हो रहा है।

राफ़ीः उससे तुम्हें क्या मिल जाएगा... जो सकता है तुम्हारे चक्कर में हम सब भी मारे जाएं।

मैकीनः बस यहीं बैठे रहो... यहीं।
(सेना के बैण्ड की आवाज़ सुनाई पड़ती है और मैकीन बाक़ी घबरा कर खड़ा हो जाता है। सरो के चेहरे प भी घबराहट आ जाती है)

मैकीनः (बेचैनी से) ख़ुदा की क़सम... ये... ये अपनी फ़ौज के बैण्ड की आवाज़ तो हरगिज़ नहीं है... बिल्कुल नहीं... क़तई नहीं...

सरोः हां, तुम ठीक कहते हो।

तान्वाः बैण्ड की आवाज़ तो कहीं पास से आती जान पड़ती है।

मैकीनः लेकिन क्यों... कहां से... ये कैसे मुमकिन है।
(बैण्ड की आवाज़ और तेज़ हो जाती है)

सरोः मैं थोड़ा बाहर निकलकर देखता हूं...

मैकीनः नहीं नहीं सरो... तुम्हें मेरे सिर की क़सम जो... बाहर गए... कुछ भयानक होने वाला है... कुछ ऐसा कि सब कुछ तबाह हो जाएगा।

पालीः मैं बताता हूं... देखो ये ऊपर वाला रोशनदान... यहां से सब नज़र आएगा... ये ऊपर वाला... बेंच पर स्टूल रखकर यहां खड़े होने से सब कुछ दिखाई देगा।
(सरो जल्दी से बेंच पर स्टूल रख्वा देता है और उस पर चढ़ जाता है। रोशनदान से देखता है)

मैकीनः क्या हो रहा है बाहर...

सरोः अरे ये बड़े फाटक से... सफ़ेद घोड़े पर बैठा... अब्रील है... अब्रील... उसके पीछे अब्रील का झण्डा लिये...

मैकीनः (कराहकर) या ख़ुदा ये क्या हुआ... (सभी लोग उठकर उस बेंच को घेर लेते हैं जिसपर सरो चढ़ा है)

तान्वाः और क्या है?

सरोः झण्डाबरदारों के पीछे घोड़ों पर फ़ौज भी है...

पालीः और हमारी फ़ौज?

सरोः अब अब्रील रुक गया है... अरे सामने से घोड़े पर लार्ड फिलिप. ..

मैकीनः (खींचकर) फिलिप...

सरोः हां, उसके पीछे मेजर दैदना और कर्नल रास्वा... उनके पीछे... (रुक जाता है)

मैकीनः उनके पीछे क्या है बेटे?

सरोः दिखाई नहीं पड़ रहा है... लाई भी घोड़े से उतर रहे हैं... अब लार्ड आगे बढ़ रहे हैं...

तान्वाः आगे कहां?

जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ

सरोः अब्रील की तरफ़... और अब्रील उन्हें कुछ दे रहा है... उन्होंने भी अब्रील को कुछ दिया... अब्रील अपने घुटनों पर बैठ गया... उसने ज़मीन का चूम लिया...

मैकीनः ओर और...

सरोः अब अब्रील और उसके झंडा–बादार... झण्डे की तरफ़... हां? हमारे झण्डे की तरफ़ बढ़ रहे हैं...

मैकीनः (घबरा कर रोते हुए) या ख़ुदा... या ख़ुदा... लगता है फ़िलिप ने वही काम किया जो घाटी वाली लड़ाई में उसके चाचा ने किया थाा. दग़ाबाज़... धोखेबाज़... किया हवाले कर दिया।

तान्वाः उसे ये पहले करना चाहिए था।

सरोः अब्रील के सिपाही हमारा झण्डा उतार रहे हैं....

मैकीनः (खींच कर) उतार रहे हैं... मैं... मैं... (दरवाज़े की तरफ़ बढ़ता है और खोलना चाहता है... तान्वा उसे पकड़ लेता है)

तान्वाः मत जाओ... बाहर मत जाओ... मैकीन...

मैकीनः (गुस्से और दुःख में रोती आवाज़ से) अब्रीली हमारा झण्डा उतार रहे हैं तान्वा... हमारा झण्डा... मैं जाऊंगा... कम से कम... एक आदमी का तो खून बहे... कम से यह तो न कहा जा सके कि... बिना एक बूंद खून बहाए.... मैं जाऊंगा।

पालीः ज़रूर जाओ... लेकिन तुम्हारा खून अब्रील नहीं... लार्ड फिलिप बहाएगा... पागल बूढ़े, झण्डा उसके सामने उतारा जा रहा है... उसके सामने... तुम क्या हो बूढ़े छछूंदर?
(मैकीन सिर पकड़ कर रोने लगता है)

तान्वाः देखो अब क्या हो रहा है सरो...
(सरो जो नीचे उतर आया था फिर ऊपर चढ़ जाता है)

सरोः जब अब्रीली सिपाही अपना झण्डा लगा रहे हैं...
(मैकीन का रोना तेज़ हो जाता है। पाली उसे एक गिलास 'अकी' पकड़ा देता है। वह गटागट करके पी जाता है पर रोता रहता है)

तान्वाः अब?

सरोः अब अब्रील का झण्डा फहरा रहा है... बिल्कुल हमारे सिरों के ऊपर (मैकीन अपने सिर के ऊपर गिलास मार लेता है। मिट्टी का गिलास टूट जाता है)

पालीः लगता है ये (कैकीन) अपनी जान दे देगा...
(मैकीन रोता रहता है)

तान्वाः अब क्या हो रहा है सरो... बताओ सरो...

सरोः अब... अब ये क्या... ये क्या अब्रील वापस जा रहा है...
(वापस जा रहा है सभी एक साथ आश्चर्य और खुशी के स्वर में चीखते हैं। इसे दोहराते भी हैं। वापस जा रहा है।)

सरोः अब बड़े फाटक से वह बाहर निकल गया...
(ये लोग 'ओहो'... 'हा–हां'... आदि हर्ष ध्वनिया करते हैं। मैकीन आंखें फाड़े खड़ा रहता है। उसकी आंखों के आंसू सूख चुके हैं) सरो नीचे उतर आता है।

पालीः (राना लगाता है) हम बच गए तान्वा... हम बच गए... (तान्वा को गले लगा लेता है। सम्मी कैथी और राफ़ी के चेहरे पर प्रसनता के भाव हैं। गिली–उसी तरह निर्विघ्न बैठी है। सरो फिर ऊपर चढ़ जाता है)

सरोः लो अब अंतिम अब्रीली सैनिक भी बाहर निकल गया...
(शोर मच जाता है। तान्वा, पाली और तीनों वेश्याएं ख़ुशी से उछल पड़ती हैं वे लगभग नाचने लगते हैं। पर गिली उसी तरह बैठी है)

सरोः अब बड़ा फाटक बंद हो गया है...
(नीचे उछल–कूद तथा ख़ुशी और अधिक हो जाती है। मैकीन भी कुछ चेतता है)

तान्वाः लाओ, निकालो 'अकी'...
(निकालो 'अकी'... 'अकी' 'अकी' की आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं)

पालीः सब्र से काम लो... सब्र से... अब सबको पैसे देने होंगे... समझे?

कैथीः इतने बेरहम न बनो पाली... जहां तुमने इतने महीने...

राफ़ीः हम तुम्हारा एक–एक पैसा चुकाएंगे।

पालीः मुझे यही उम्मीद है।
(पाली गिलासों में 'अकी' डालने लगता है। सब गिलास ले लेते हैं। राफ़ी एक गिलास गीली का भी देना चाहती है पर वह हाथ के इशारे से मना करती है)

राफ़ीः ला लो गिली...

कैथीः तम नहीं लोगी तो हम भी नहीं लेंगे।

तान्वाः मैं भी नहीं पियूंगा... गिली... ले लो...

पालीः लो गिली... लो..
(गिली झपटकर गिलास ले लेती है और गुस्से में गटागट करके पी जाती है। फिर राफ़ी का भी गिलास लेकर गटगट करके पी जाती है)
(सब पीते हैं शोर मचाते हैं)
(अचानक गिली खड़ी हो जाती है)

गिलीः (फटी–फटी आवाज़ में) मेरी बेटी शासा... शासा ऐसे नाचती थी... (वह नाचने लगती है... सब उसके साथ नाचते हैं। नाचते–नाचते वह रोने लगती है और बेठ जाती है)
(बाहर से फिर डुग्गी की आवाज़ सुनाई पड़ती है और ऐलान होता है। डुग्गी की आवाज़ के साथ बर्फ़ के तूफ़ान की आवाज़ भी आ रही है)

एलानः अब सभी को इत्तिला दी जाती है... हर ख़ासो–आम को बताया जाता है कि वे चाहें तो अपने अपने घरों से निकल सकते हैं... अब्रीली फ़ौजें वापस चली गयी हैं... अब्रीली फ़ौजें वापस चली गयी हैं...
(फिर शोर मच जाता है सब और पीते हैं और नाचते हैं। गिली कोने में बैठी राती रहती है)

तान्वाः आओ... अब बाहर आएं... मैं ताज़ी हवा के लिए तरस गया।

कैथीः बाहर बर्फ़ का तूफ़ान है पागल सुअर...

तान्वाः आओ... बर्फ़ का तूफ़ान अब्रीली फ़ौजों जैसा नहीं है...
(पाली दरवाज़ा खोल देता है। बर्फ़ के तूफ़ान और तेज़ हवा की आवाज़ बढ़ जाती है। तान्वा सबसे पहले बाहर आता है)

तान्वाः (ऊपर देखकर) अरे ये क्या?

पालीः क्या है?

तान्वाः अरे ये तो अपना झण्डा है... अपना झण्डा..

मैकीनः (तेज़ी से बाहर आकर देखता है) हां ये तो अपना ही झण्डा है.. . ज़िन्दाबाद... ज़िन्दाबाद सरमीनिया ज़िन्दाबाद... नारा लगता है।

(सब बाहर आ जाते हैं। मैकीन नाचने लगता है। उसके साथ कैथी, सम्मी और राफ़ी भी नाचती हैं। गिली झण्डे को देखे जा रही हैं।)

पालीः नाचो... खूब नाचो... पियो... भर पेट पियो...

(बर्फ़ का तूफ़ान तेज़ होता है। सब नाच रहे हैं)

तान्वाः (लड़खड़ाती आवाज़ में) कल से... भीख... मिलेगी... हां.. हां... हां...

पालीः चोप... चो... (खूब नशे में आ गया है) सलामी दो...

सरोः किसे?

पालीः (नशीली आवाज़ में) मुझे...

(राफ़ी, कैथी और सम्मी और सरो उसे सलामी देते हैं। बाक़ी लोग नाचते और चीख़ते रहते हैं। सब बुरी तरह नशे में आ गए हैं। बर्फ़ का तूफ़ान बढ़ गया है। नाचते–नाचते तान्वा को ज़मीन पर पड़ा एक झण्डा मिल जाता है)

तान्वाः (चीख़कर) अरे देखो... देखो ये क्या है...

(सब देखते हैं)

मैकीनः तान्वा के बच्चे... तू उतार लाया हमारा झण्डा...

तान्वाः म... मैं...

कैथीः अरे ये चिड़िया है क्या?

(सब हंसते हैं)

मैकीनः ये हमारा झण्डा है... हमें जान से प्यारा है।

तान्वाः है तो ले लो... थोड़ा बड़ा होता... तो सरो, क़सम से ओढ़ने के काम... आता...

(झण्डा फैलाकर देखता है)

मैकीनः (गुस्से में) लाओ! लार्ड को पता चल गया तो...

कैथीः (हां–हां–हां... शराबियों जैसी हंसी हंसकर कहती है) उसके ये किस काम का... उसे तो सतरह साल की छोकरी चाहिए... जब मैं...

पालीः (चिल्लकार) तुम सब मुझे फंसवाओगे... ये मेरे शराबख़ाने के सामने हुआ है... झण्डा उतारा गया... हाय मेरा क्या होगा (रोता है)

सरोः (वह भी नशे में है) रो मत मेरे भाई पाली... रो मत... मैं तुम्हारे लिए एक झण्डा बना दूंगा।

मैकीनः अरे गधो... अगर लार्ड ने... चलो लगाओ इसे...

तान्वाः (नश में) मैं... मैं नहीं दूंगा... ये... ये... मेरा है...

पालीः तेरा है पागल... य... य... मेरा है...

तान्वाः (हिचकियां लेते हुए) म... मेरा...

मैकीनः ये सरमीनिया का है...

तान्वाः मैं सरमीनिया का... श... श... ज़ादा...

राफ़ीः साला... नशे में आ गया है।

तान्वाः मैं... मैं... सरमीनिया हूं.. मैं (सीना पीटते हुए कहता है और सब हंसते हैं। गिली झपटकर आती है। तान्वा के साथ से झण्डा छीन लेती है और दोनों हाथों में पकड़कर नाचने लगती है)

पालीः (राते हुए) झण्डा... लगा दो... सरो... लगा... दो... नहीं तो मैं... बबार्द...

सरोः ठीक है लाओ... मैं छत पर चढ़कर लगाता हूं।

(सरो झण्डा लेकर शबराख़ाने की छत पर चढ़ता है। चीख़कर कहता है)

सरोः लो, लग गया झण्डा।

(मैकीन खड़ा होकर गाने लगता है। 'झण्डा, देश पर प्राण निछावर' उसके साथ पाली भी खड़ा हो जाता है। सरो नीचे उतर आता है। और अकी पीने लगता है। कैथी, सम्मी और राफ़ी भी गाती है... बाद में गिली भी शामिल हो जाती है)

तान्वाः (अचानक चिल्लाता है) ये तुमने क्या किया सरो... क्या किया।

सरोः ये तो... ये तो... (ऊपर उंगली उठाकर) अब्रीली झण्डा है... अब्रीली।

सरोः नहीं... ये कैसे हो सकता है।

तान्वाः नहीं है... अरे आज मैं... पहली बार तो नहीं देख रहा हूं ये झण्डा...

मैकीनः ठहरो ज़रा (ऊपर ध्यान से देखता है) हां... हां... ये तो अपना झण्डा नहीं है।

सरोः तुम लोगों ने यही झण्डा दिया था...

पालीः नाश हो तुम सकबा ख़बीसो... ये वो झण्डा था जो लार्ड ने उतारकर फेंका होगा।

मैकीनः जल्दी करो... जल्दी करो... किसी ने देख लिया तो हम सब सूली पर... और वो अपना झण्डा कहां है...

सरो' लाओ कहां है?

मैकीनः (घबराकर) अरे अब क्या करें।

पालीः देखो... देखो... अपा झण्डा भी यहीं कहीं होगा...
(सब खोजते हैं पर नहीं मिलता)

पालीः (राते हुए) अब क्या करें मैकीन...

मैकीनः तुम्हारे पास लाल और सफ़ेद कपड़ा है?

पालीः नहीं... नहीं है...

मैकीनः कैथी लाल रंग की चोली पहने हैं...

कैथीः नहीं... नहीं

पालीः कैथी... मेरी जान बचाओ...

कैथीः नहीं... नहीं...
(सरो जो इधर–उधर झण्डा खोज रहा है। अचानक कहता है)

सरोः अरे ये यहां पड़ा है।

पालीः शुक्र है... ए खुदा... सरो से लेकर झण्डा चूमता है।

तान्वाः जाओ बेटा... उसे उतार लो... इसे लगा दो... शबाश...
(सरो शराबख़ाने की छत पर चढ़ जाता है)

पालीः जान बच गयी।

तान्वाः और 'अकी' पिलाओ।
(पाली अंदर से एक जग और ले आता है और सब पीते हैं। सरो नीचे उतरता है उसके हाथ में एक झण्डा है)

सरोः लो... ये अब्रीली झण्डा मैं ले आया... अपना लगा दिया।

तान्वाः लाओ... इससे मैं अपने चूतड़ पोंछा करूंगा...
(झण्डा ले लेता है)

पालीः नहीं, मेरे काम आएगा... मुझे दो...

कैथीः नहीं... नहीं... मैं अपनी चोली...

सम्मीः तू ही क्यों बनाएगी चोली... चल हट! (छीना झपटी होने लगती है। झण्डा कुछ फट जाता है)

मैकीनः (फटा हुआ झंडा ले लेता है) ठहरो... देखने दो... या खुदा... या खुदा...
(झण्डा देखते हुए कहता है)

पालीः (घबरा कर) क्या है मैकीन?

मैकीनः लाल और सफ़ेद रंग...

सरोः तो क्या हुआ... अब्रील के झण्डे में भी...

मैकीनः नहीं... नहीं... बेटा...

सरोः ये नहीं हो सकता।

पालीः इसे झण्डे में लाल रंग नीचे है... हमारे में ऊपर

मैकीनः पाली तुम... उलटा देख रहे हो।

पालीः नहीं... (गुस्से से) क्या समझते हो अपने को?

राफ़ीः लड़ो मत... तलवारों गिन लो... अपने झण्डे में चार हैं... उनके मैं... दो...

मैकीनः बेवकूफ़ औरत...

कैथीः क्या कहा? (कैथी मैकीन पर झपट पड़ती है)

सरोः छोड़ो... हटो... (कैथी को हटाता है) मैं कहता हूं ऊपर जो लगा है... वही हमारा है।

तान्वाः नहीं... यही हमारा झण्डा है... यही... यही है...

पालीः त... त... तो... क्या करें?

मैकीनः तुम... लोग... क्या जानो...
(सामने से कोई शराब के नशे में धुत आता दिखाई पड़ता है। पाली डर जाता है)

पालीः देखो कोई आ रहा है... अब मरे।
(सार्जेण्ड पास आ जाता है। वह बुरी तरह नशे में है।)

सार्जेण्टः अकी है पाली... अकी... घर में... पूरा मटका पी गया... पर... प्यास... है... प्यास...

पालीः हां... हां... सार्जेण्ड आओ...
(अकी देता है सार्जेण्ट पीता है)

पालीः सार्जेण्ट ऊपर देखो... क्या वह हमारा ही झण्डा लगा है..

सार्जेण्टः (ऊपर देखकर) हां।

मैकीनः और ये देखो... (अपने हाथ में लिया झण्डा दिखाता है) क्या ये अपना झण्डा है?

सार्जेण्टः हां।

(सब एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं और ख़ुशी में चिल्लाते हैं।)

तान्वाः न... नहीं... नहीं... यही... वही... यही... वही...

कैथी हां वही (ही–ही करके नशे में हंसती है)

मैकीनः तुम बहस...

पालीः (ज़ोर से) चोप... चोप सार्जेण्ट ने कहा वो ठीक है हरामियो...

तान्वाः (जो बहुत नशे में आ गया है) म... म... मेरी बात... दोनों... दोनों को लगा... दो... ठीक है सार्जेण्ट?

कैथीः (नशे में) हां–हां!

राफ़ीः ओ हो... हां–हां!

(सब सहमति देते हैं। शोर मचता है। तान्वा नाचने लगता है सरो शराबख़ाने की छत पर चढ़ जाता है। कैथी नाचने लगती है। सार्जेण्ट गिली के पास जाता है। सामने खड़ा होकर कहता है 'अटैन्शन' और खुद 'अटैन्शन' हो जाता है फिर 'आराम से' कहता है। उसके बाद अपने लिए जल्दी–जल्दी अटैन्शन और आराम के आदेश देता है और उसी तरह का नृत्य करने लगता है जो उसने कभी शासा को दिखाया था। फिर गिली से लिपटकर रोने लगता है। दूसरे लोग नाचते रहते हैं। सार्जेण्ट फूट–फूट कर रोता रहता है। अचानक कोई... शासा पर लिखे गाने की धुन निकालता है। धीरे–धीरे गाना शुरू हो जाता है। हवा के थपेड़ों और झण्डा हिलने की आवाज़ उसमें शामिल रहती है।)

OO